

अंक : 96

(जनवरी-मार्च, 2002)

राजभाषा भारती



सत्यमेव जयते

भारत सरकार

शुद्ध मंत्रालय

राजभाषा विभाग

राजभाषा भारती

वर्ष : 24
जनवरी-मार्च, 2002

अंक : 96

संपादकीय

हिंदी जनभाषा है। स्वाधीनता संघर्ष ने इसे राष्ट्रभाषा की संज्ञा प्रदान की और हमारे संविधान निर्माताओं ने इसे राजभाषा घोषित किया। वैसे हिंदी स्वतंत्रता से पूर्व भी देशी रियासतों में राजकाज की भाषा रह चुकी थी। हिंदी की यह विकास यात्रा सतत संघर्ष, भगीरथ प्रयत्न और अविचल आत्म विश्वास की गौरव गाथा है। फिर भी, अभी सही और पूरे अर्थों में हिंदी को राजभाषा का दर्जा प्राप्त नहीं हुआ जिसकी वह अधिकारिणी है। हिंदी में प्रचुर मात्रा में ललित साहित्य उपलब्ध है किन्तु वैज्ञानिक एवं तकनीकी साहित्य का अभाव है। आवश्यकता है कि इस दिशा में चहुंमुखी प्रयास किए जाएं और विज्ञान, चिकित्सा विज्ञान, जैव प्रौद्योगिकी और अभियांत्रिकी आदि से संबंधित अधिक से अधिक पुस्तकें मूल रूप से हिंदी में लिखी जाएं। इन क्षेत्रों में हिंदीतर भाषाओं में विशेष रूप से अंग्रेजी में जो क्लासिक पुस्तकें उपलब्ध हों उन्हें हिंदी में अनूदित किया जाए। अंग्रेजी की विवशता और मोह का परित्याग करते हुए उपर्युक्त के परिप्रेक्ष्य में हमें अपने अंग्रेजी ज्ञान को भी अक्षुण्ण रखना होगा। इन्हीं सर्वविदित कारणों से चीन और जर्मनी आदि देश भी अंग्रेजी को बढ़ावा दे रहे हैं।

हिंदी के समक्ष निजीकरण, वैश्वीकरण आदि की चुनौतियां हैं। समस्याओं की भीड़भाड़ में भाषा का प्रसंग आनुषंगिक सा लग रहा है। आवश्यकता है कि हम हिंदी की शक्ति और सामर्थ्य का विकास करें। "राजभाषा भारती" इस दिशा में राजभाषा विभाग द्वारा किए जा रहे प्रयासों में एक कड़ी है।

(i)

इस अंक में शामिल लेखों के विषय में जानकारी दे रहे हैं अगले आलेख में उप संपादक श्री मल्होत्रा।

इस अंक के विषय में सुधी पाठकों के विचारों का सदा की भांति स्वागत है। कालिदास के शब्दों में “आपरितोषाद् विदुषाम् न साधुमन्ये प्रयोगविज्ञानम्” जब तक विद्वदजनों का परितोष न हो जाए मैं इस प्रयास को सफल नहीं मानता।

—कृष्ण चन्द्र श्रीवास्तव

लेखों के विषय में

वर्तमान अंक में साहित्य, मानविकी, अर्थशास्त्र, मीडिया और विज्ञान के विभिन्न विषयों से संबंधित लेख संकलित किए गए हैं। डा. सुधेश का लेख "महालेखक महामानव मैक्सिम गोर्की" उनके जीवन वृत्त का सहज और मार्मिक चित्रण करता है। लेखक ने प्रभावपूर्ण शैली में यह निरूपित किया है कि इस प्रतिष्ठित लेखक ने जार की दमनकारी नीतियों के विरुद्ध किस प्रकार आवाज उठाई।

डा. गोपीवल्लभ नेमा का लेख "भारतीय संस्कृति की प्रकाशमान ज्योति : मूल्य चेतना" यह रेखांकित करता है कि मूल्य चेतना रूढ़ियों को तिरस्कृत करती हुई मानव के कल्याण की प्रेरक और पोषक होती है।

"विश्व व्यापार संगठन : दोहा का दोहन अधूरा रहा" में लेखक ने निरूपित किया है कि विश्व व्यापार संगठन द्वारा विकासशील देशों के हितों को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता। डा. वासुदेव प्रसाद यादव का लेख "पिरामिडों की दिव्य विशेषताएं—नई शोध" मिश्र की प्राचीन सभ्यता और संस्कृति के अवशेषों के माध्यम से विश्व में 4-5 हजार वर्ष पूर्व एक उन्नत सभ्यता के अस्तित्व का दिग्दर्शन कराता है।

डा विभा शुक्ला के लेख "बीसवीं सदी का विलक्षण आविष्कार : लेसर" में यह उद्घाटित किया गया है कि लेसर के आविष्कार ने दूरसंचार, चिकित्सा, अंतरिक्ष विज्ञान, व्यवसाय और प्रौद्योगिकी आदि अनेक क्षेत्रों में क्रांतिकारी परिवर्तन के द्वार खोल दिए हैं। लेसर किरणों की सहायता से कैंसर को जड़ से समाप्त किया जा सकता है और हृदय के रोगों तथा गुरदे की पथरी का बिना आपरेशन इलाज सम्भव है।

विनीता सिंघल के लेख "मनोरंजन का नया रूप—डी. टी.एच. टी.वी प्रसारण" में उल्लेख है कि डी. टी.एच. की उच्च तकनीक ने किस प्रकार मनोरंजन की दुनिया में क्रांति ला दी है। एम. पी. सैनी के लेख "यूरोपीय देशों का सांझा प्लेटफार्म और नई मुद्रा यूरो" में यूरो का प्रचलन यूरोपवासियों को एक सूत्र में बांधने की एक ऐतिहासिक घटना का द्योतक है। अजयेन्द्र नाथ त्रिवेदी का लेख "असम के सांस्कृतिक प्रतीक" और डा. डी. डी. ओझा का लेख "पर्यावरण में अदृश्य प्रदूषण एवं जन स्वास्थ्य" अत्यधिक सूचनाप्रद और ज्ञानवर्धक हैं।

उपर्युक्त आलेखों के अतिरिक्त इस अंक में भी राजभाषा कार्यान्वयन संबंधी गतिविधियों का समावेश किया गया है जिनमें नगर राजभाषा कार्यान्वयन संबंधी बैठकों, विभिन्न मंत्रालयों/विभागों/उपक्रमों आदि द्वारा समय-समय पर आयोजित हिंदी कार्यशालाओं और राजभाषा विभाग द्वारा आयोजित राजभाषा क्षेत्रीय सम्मेलनों आदि का संकलन उल्लेखनीय है।

—उप संपादक

राजभाषा भारती

वर्ष : 24

अंक-96

(जनवरी-मार्च, 2002)

विषय-सूची

संपादक (पदेन)	लेखक का नाम	लेखक	पृष्ठ सं.
कृष्ण चंद्र श्रीवास्तव निदेशक (अनुसंधान) फोन 4619521	संपादकीय		(i)—(ii)
	लेखों के विषय में		(iii)
उप संपादक	महालेखक महामानव मैक्सिम गोर्की	डा. सुधेश	1—7
	भारतीय संस्कृति की प्रकाशमान ज्योति: मूल्य चेतना	डा. गोपी वल्लभ नेमा	8—14
सुरेन्द्र लाल मल्होत्रा फोन 4698054	मनोरंजन का नया रूप डी टी एच टी वी प्रसारण	विनीता सिंघल	15—18
	यूरोपीय देशों का सांझा प्लेटफार्म और नई मुद्रा यूरो	एम पी सैनी	19—22
निःशुल्क वितरण के लिए	विश्व व्यापार संगठन दोहा का दोहन अधूरा रहा	वेद प्रकाश अरोड़ा	23—28
	पिरामिडों की दिव्य विशेषताएं—नई शोध	डा. वासुदेव प्रसाद यादव	29—37
पत्र व्यवहार का पता: संपादक	असम के सांस्कृतिक प्रतीक	अजयेन्द्र नाथ त्रिवेदी	38—42
	राजभाषा भारती राजभाषा विभाग	बीसवीं सदी का विलक्षण आविष्कार: लेसर	डा. विभा शुक्ला
गृह मंत्रालय दूसरा तल लोकनायक भवन, नई दिल्ली-110003	पर्यावरण में अदृश्य प्रदूषण एवं जन स्वास्थ्य	डा. डी. डी. ओझा	54—57
	राजभाषा कार्यान्वयन संबंधी गतिविधियां		58—87

विशेष : पत्रिका में प्रकाशित लेखों में व्यक्त किए गए विचार एवं दृष्टिकोण संबंधित लेखक के हैं। सरकार अथवा राजभाषा विभाग का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

महालेखक महामानव मैक्सिम गोर्की

—डॉ. सुधेश

रूसी लेखक मैक्सिमो गोर्की एक महामानव पहले थे, विश्व विख्यात महान साहित्यकार बाद में। वेलकम के जादूगर थे, इस से कहीं अधिक एक मनस्वी जीवन साधक तथा मानवता के पुजारी। लेखन उनके लिए एक साधन मात्र था, उन की सिद्धि थी मानवता की सेवा। यही सिद्धि पाकर उनका लेखन धन्य हो गया। यह सिद्धि उन्होंने कैसे पाई, यह समझने के लिए हमें उनके जीवन के उतार चढ़ाव को देखना होगा।

इस महामानव का जन्म 14 मार्च सन् 1868 ई. को एक अत्यन्त साधारण मानव मैक्सिम पियेश्कोभ के घर में हुआ था, जो एक आवारा घुमक्कड़ आदमी था। शिशु का नाम रखा गया आलेक्सी पियेश्कोभ, जो गोर्की का जन्म का नाम था। जब बालक आलेक्सी चार वर्ष का था तो उसके पिता की हैजे के कारण मृत्यु हो गई। उसकी मां बाबांरा काशिरिना शौकीन तबीयत की एक स्वतन्त्र स्त्री थी। वह भी अपने पुत्र को अकेला छोड़ कर कहीं नया घर बसाने चली गई। बालक चार साल की उम्र में अनाथ हो गया। वह किसी अनाथालय में पलता, पर उसकी नानी उसे अपने साथ ले गई। नानी थी साक्षात् दया की मूर्ति, सद्गुणों और जिजीविषा की भण्डार, पर नाना बड़ा क्रूर और एक दम राक्षस। आलेक्सी अपने नाना, नानी के पास रहने लगा। कुछ समय बाद नाना ने नानी को घर से निकाल दिया और आलेक्सी अपनी नानी के साथ एक लकड़ी के घर में दयनीय जीवन जीने लगा। नानी ने गरीबी में भी अपने दोहते को स्कूल में दाखिल कराया। बालक विचित्र वेष में स्कूल जाता, और रोज सुबह शाम को कन्धे पर एक झोला डाल कर गली गली के कूड़ादानों से जानवरों की हड्डियां, फटे पुराने कपड़े, कागज, कील आदि बटोरता और उन्हें बेच कर कुछ सिक्के कमाता। पेट कहता—'कूड़ा बटोरो' और नानी कहती 'स्कूल जाओ'। एक दुनिया थी कूड़े का ढेर और दूसरी अत्यन्त छोटी दुनिया थी स्कूल की, जो अन्धकार के बीच आशा की एक किरण थी। आशा की यह किरण चिथड़ों लिपटी नानी की आंखों में थी। आशा की इसी किरण का नाम है नारी। बालक आलेक्सी ने आशा की इसी डोर के सहारे अपनी जीवन-यात्रा शुरू की।

नानी के लकड़ी के घर में (जिसे घर क्या एक डेरा, एक ठिकाना ही कहना अधिक उपयुक्त है) चिथड़ों के एक ढेर से ही बिछौने का काम चलता था। चारों तरफ चोरों, गुण्डों, बदमाशों के डेरे और ऐसे लोगों की बस्ती थी जो कीड़ों, मकौड़ों, कुत्तों, बिल्लियों की तरह जीवन को बिताते थे। ऐसे घिनौने वातावरण में आलेक्सी पला और बड़ा हुआ। उसे चारों तरफ

से अपमान, उपहास, तथा कठोर यातनाएं मिलीं। दस वर्ष की अवस्था में ही उसे संसार का काफ़ी ज्ञान मिल गया। इन यातनाओं के बीच एक बालक का मन टूट सकता था, पर उसकी नानी अन्धकार के सागर में ज्योतिस्तम्भ बन कर खड़ी रही। मां ने उसे पैदा भर किया था, पर उस के जीवन की आधारशिला उसकी नानी ने रखी (जिस का कोई नाम तक नहीं जानता)। बुढ़िया नानी की अद्भुत क्षमा और भगवत् विश्वास ने उसे रक्षा कवच की तरह बचाया। जीवन में बहुत कुछ वीभत्स है और कुत्सित है, फिर भी उसके अन्दर सौन्दर्य का अभाव नहीं है, बालक को यह विश्वास अपनी स्नेहमयी नानी से ही मिला। वह जीवन की कठोर वास्तविकताओं के दलदल में फंस कर मिट नहीं गया और सुन्दरता का स्वप्न देखता रहा, इसका श्रेय उसकी नानी को ही है।

आलेक्सी को अपने पिता से दो चीजें उत्तराधिकार में मिलीं, बलिष्ठ शरीर और घुमकंड स्वभाव। वह गिरजाघर जाने के बहाने रात को शहर के सुनसान रास्तों पर चक्कर काटा करता था। कभी सारी-सारी रात पहाड़ी टीलों पर बैठा चांद की तरफ़ देखता रहता, जैसे वह यही सोचता हो कि चांद की यात्रा कैसे की जाए? दस बारह वर्ष की अवस्था में ही उस की घुमकंडी शुरू हो गई। कहीं दूर भाग जाने के उद्देश्य से वह निज़ानी बन्दरगाह पर आया। वहां वोल्गा नदी के तट पर वह कुली मजदूरों के साथ काम करने लगा। वहां कुछ खटपट हो गई तो जंगल से चिड़िया पकड़ कर उसे बाज़ार में बेच कर अपने जीवन की गाड़ी को धकेलने लगा। वहां से भाग कर वह अपने मामा के पास पहुंचा जो नक्शे बनाने का काम करता था। मामा के घर के सामने युद्ध विभाग के कर्मचारियों की बस्ती थी, जिसमें एक दर्जी की स्त्री भी रहती थी। बालक आलेक्सी ममत्व का भूखा था (क्योंकि उसे बचपन में मां-बाप का प्यार नहीं मिला था), इसलिए वह उस स्त्री की ओर आकर्षित हुआ। वह नारी को पवित्रता की देवी समझता था, क्योंकि उसके शिशु मन पर उस की त्यागशील नानी के पवित्र जीवन और उसके सद्गुणों की छाप पड़ी थी। एक दिन उस ने उस स्त्री को एक फौजी के आलिंगन में बद्ध देखा। आलेक्सी जैसे आसमान से धरती पर गिर पड़ा और उसका स्वप्न छिन्न-भिन्न हो गया। नारी के प्रति उस की श्रद्धा को धक्का लगा। लेकिन दर्जी की उस स्त्री से लेकर आलेक्सी ने गंकूर, ग्रीनवुड, बालज़ाक आदि श्रेष्ठ लेखकों की पुस्तकें पढ़ी, जिन में उसने जीवन का उच्चतर एवं सुन्दर चित्र देखा। वास्तविक जीवन में भी वह इस सुन्दर चित्र को देखना चाहता था। इसीलिए बालक आलेक्सी चोरों, गुण्डों, बदमाशों के बीच रहकर भी अपने को उनके साथ नहीं मिला सका। श्रेष्ठ साहित्य मानव जीवन की दिशा को बदल सकता है और वह जीवन की विपरीत और विषय परिस्थितियों में मानवीयता को बचाए रखता है, इस का प्रमाण मैक्सिम गोर्की का जीवन है।

गोर्की की एक पुस्तक है 'मेरे विश्वविद्यालय' (हिंदी में इस शीर्षक से अनूदित), जिस से स्पष्ट हो जाता है कि उन्होंने स्कूल, कालेज की अपेक्षा जीवन के विश्वविद्यालय से बहुत कुछ सीखा। उक्त पुस्तक में उन्होंने एक जगह लिखा है—“किताबों में मुझे कोई भी विचार ऐसा नहीं

मिला, जिस से वास्तविक जीवन में कहीं न कहीं भेंट हो चुकी हो।" उन्हें जिन्दा रहने के लिए ट्रीमर में तश्तरी साफ करना, घोड़ों की लीद उठाना, माली का काम करना, डबल रोटी बनाना, गिरजाघर में प्रार्थनागीत गाना, चौकीदारी करना आदि जो भी काम करना पड़ा वह उन की शिक्षा का माध्यम हो गया।

नानी ने आलेक्सी के मन में ज्ञान का जो बीज बोया था, उसने उसके मन में ज्ञान की दुरन्त पिपासा जागृत कर दी, जिस के वशीभूत होकर वह काज़ान विश्वविद्यालय में भर्ती होने के लिए अपनी बुद्धिया नानी को छोड़ कर चला आया। धन पास में था नहीं, जो विश्वविद्यालय में प्रवेश के लिए आवश्यक था। तब काम की तलाश शुरू हुई। काज़ान में सवेरा होते ही वह काम की तलाश में निकल जाता। कभी काम मिलता कभी नहीं। बरसात में काम मिलना कठिन था। बरसात के दिनों में वह एक खंडहर में जमीन के नीचे के एक कमरे में मुर्दा, सड़े गले कुत्तों और बिल्लियों के कंकालों के बीच बैठा रहता। तब भी उसने उच्च शिक्षा पाने की महत्वाकांक्षा नहीं छोड़ी। लेकिन जब उसे काज़ान विश्वविद्यालय में सिर पटकने पर भी प्रवेश नहीं मिला, तो उस का दिल टूट गया।

घोर निराशा की स्थिति में वह जीवन से ऊब गया और उसने आत्महत्या का निश्चय किया। तब उस की उम्र 19 वर्ष थी। वह बाज़ार से एक रिवाल्वर खरीद लाया, जिस में चार गोलियां थीं। एक गोली उसने अपनी छाती में दाग दी। उसने कलेजे को निशाना बनाया था पर गोली फेफड़े में लगी। वह मरा नहीं, पर एक महीना हस्पताल में पड़ा रहा—बिल्कुल अकेला। हस्पताल से लौटने के बाद उस की भेंट एक बुद्धिजीवी क्रान्तिकारी युवक माइखेल एण्टोनोविच रोमास से हो गई। वह काज़ान से चालीस मील की दूरी पर एक गांव में दुकान खोलने के बहाने क्रान्तिकारियों के लिए प्रशिक्षण केन्द्र स्थापित करने की तैयारी कर रहा था। आलेक्सी उस के सहकारी के रूप में उस गाँव में चला आया। वह विभिन्न गुप्त समितियों द्वारा किसानों को प्रशिक्षित और संगठित करने लगा। साथ ही उसने रोमास के छोटे पुस्तकालय से पुश्किन, नेक्रासोम, गोभचारोम, पिसारेभ आदि रूसी लेखकों की रचनाओं के साथ बकल, हाब्स, लैकी, लबक, टेलर, मिल, स्पेन्सर, डारविन, मेक्यावली आदि की पुस्तकें पढ़ डालीं। वह विश्व के श्रेष्ठ लेखकों के भावलोक में विचरने लगा। रूस के बुद्धिजीवियों से परिचित हो जाने पर और मानव मुक्ति के आन्दोलन में सक्रिय भाग लेने पर उसे अपने जीवन की सार्थकता दिखाई देने लगी।

रोमास और आलेक्सी किसानों में जागृति फैलाने का जो काम कर रहे थे, उस से गाँव के जमींदार उन के दुश्मन बन गए। कई बार इन्हें जान से मारने के प्रयत्न किए गए। एक दिन आधी रात को मौका पाकर इनके मकान में आग लगा दी गई। सब कुछ जल गया। रोमास का पुस्तकालय भी राख हो गया, लेकिन आग की लपटों में ये दोनों जीवित निकल आए। आलेक्सी ने तो ऊपर के कमरे की छिड़की से बाहर कूद कर अपनी जान बचाई। गाँव में रहना मुश्किल

देख वह एस्ट्राखान जाने वाले स्टीमर पर सवार हो गया। वहां से बिना टिकट सैंकड़ों मील की रेल यात्रा कर डाली। वह भटकता-भटकता कैस्पियन सागर के तट पर पहुंचा और मछुआरों के दल में सम्मिलित हो गया। वहां जी नहीं लगा तो घूमते-घामते वोल्गा प्रान्त के एक रेलवे स्टेशन डोब्रिका पर चौकीदारी कर ली। शाम के छह बजे से सुबह के छह बजे तक हाथ में लाठी लिए गोदाम के चारों ओर घूमना उसका धन्धा हो गया। स्टेशन के काम के अतिरिक्त उसे स्टेशन मास्टर के घर पर भी काम करना पड़ता था। वहां उसे बड़े विचित्र अनुभव हुए। स्टेशन मास्टर रात को अपने घर पर एक मजलिस लगाया करता था, जिस में पुलिस का दरोगा, पादरी और उस के तरह तरह के दोस्त हुआ करते थे और कुछ सुन्दरियां भी उस में सम्मिलित होती थीं। वस्तुतः सुन्दरियां ही आकर्षण का मुख्य केन्द्र हुआ करती थीं। कभी-कभी आलेक्सी को भी वहां बुला लिया जाता, जहां वह अपने मधुरकण्ठ से एक के बाद दूसरा गाना गाया करता था और सभा का मनोरंजन किया करता था। शायद इसी गुण के कारण स्टेशन मास्टर उसे अपनी महफिल में बुला लेता था। वहां मदिरापान और भोजन के बाद रात भर उत्कट और वीभत्स कामलीला चला करती थी, जिस का प्रत्यक्षदर्शी आलेक्सी भी था।

वह रात को चौकीदारी करता और दिन में कवि हाइने, शेक्सपीयर आदि की पुस्तकें पढ़ा करता था, जो उस के हृदय में बेहतर जीवन की आशा को संजीवित रखती थीं। स्टेशन मास्टर के घर की रंगरलियां आलेक्सी को बांध नहीं सकीं, क्योंकि उसने जीवन की बड़ी महत्वाकांक्षाएं मन में संजो रखी थीं। तीन-चार महीने बाद एक दिन वह डोब्रिका स्टेशन से गायब हो गया। कभी मालगाड़ी में सवार होकर, कभी मीलों पैदल चल कर वह किसी प्रकार मास्को पहुंचा। उसने मास्को तक की यात्रा रेलगाड़ी के पशुओं को ढोने वाले डिब्बे में बैलों के बीच बैठकर की थी। लगभग दो वर्षों तक मास्को में विभिन्न धन्धे करने के बाद आलेक्सी निज़नी को लौट आया। इस शहर से उस का लगाव था।

निज़नी में वह अपने एक क्रान्तिकारी मित्र के डेरे पर ठहरा था कि पुलिस ने अक्टूबर 1889 ई. में उसे गिरफ्तार कर जेल में डाल दिया। मुसीबतें उसे ढूंढ़ती फिरती थीं, पर वह भी ऐसा जीवट का आदमी था कि हर मुसीबत के बाद वह अधिक आत्मिक शक्ति अर्जित कर लेता था। इस बार उस ने कोई अपराध नहीं किया था। अपराध था तो यह कि जब पुलिस उस के मित्र सोमोय को पकड़ने के लिए आई तो सोमोय डेरे पर नहीं था और आलेक्सी को ही वह अपना शिकार समझ कर ले गई। मित्र को पहले भनक लग गई होगी, इसलिए वह फरार हो गया। अन्ततः जब तक काज़ान से सोमोय की गिरफ्तारी की सूचना पुलिस के पास नहीं आई तब तक आलेक्सी को जेल में बन्द रहना पड़ा। इसे विडम्बना कह लीजिए या विधि का खेल, पर ऐसी विडम्बनाओं से आलेक्सी (बाद में गोर्की) का जीवन भरा हुआ है। असंख्य मुसीबतों और विडम्बनाओं के बीच से निकल कर ही एक निरीह बालक महामानव बन गया, जिस की कहानी बड़ी रोमांचक है।

निज़्नी की जेल में आलेक्सी पियेश्कोय ने (तब गोर्की का यही नाम था) कई कविताएं लिखीं। वह लेखक बनने का कोई इरादा नहीं रखता था पर नियति उसे उसी दिशा में लिए जा रही थी। उसने कवि कहलाने के लिए कविताएं नहीं लिखीं, बल्कि अपनी सघन अनुभूतियों या संवेदनाओं को व्यक्त करने के लिए उनकी रचना की। जेल से छूटने के बाद उस की मानसिक दशा ठीक नहीं थी। वह बड़े अन्तर्द्वन्द से गुजर रहा था। उस समय वह 21 वर्ष का युवक था, पर निश्चय नहीं कर पा रहा था कि जीवन में क्या करे। आजीविका का प्रश्न भी था। आखिर पेट तो भरना था। चोरी वह कर नहीं सकता था। नानी ने बचपन में उसके मन पर पवित्र जीवन के जो संस्कार डाले, वे उस के व्यक्तित्व का हिस्सा बन गए थे। वास्तव में आलेक्सी को महामानव बनाने में उसकी नानी की महत्वपूर्ण भूमिका है।

नौकरी करना उसके वश की बात नहीं थी, फिर भी वह एक वकील का मुन्शी बन गया। एक दिन मानसिक उद्वेग में उसने अदालत के ज़रूरी कागज़ों पर अपने जीवन की कहानी कविता के रूप में लिख डाली। वह नौकरी से निकाल दिया गया। न जाने कौन सी शक्ति थी, जो उसे लेखक बनने की ओर लिए जा रही थी।

युवक आलेक्सी का साहित्यिक जगत में प्रवेश बड़े नाटकीय ढंग से हुआ। सन् 1891 ई. के अन्तिम भाग में वह काले सागर के प्रान्त को पार कर जार्जिया की राजधानी तिफलिस पहुंचा और विप्लवीदल के एक सदस्य और अपने मित्र अलेक्जेंडर कालिउज़्नी के टिकाने पर ठहरा। एक दिन उसने अपने मित्र को एक कहानी सुनाई, जिसे सुन कर कालिउज़्नी मुग्ध हो गया और उसने आलेक्सी को एक कमरे में बन्द कर उस कहानी को लिख देने का आदेश दिया। कहानी लिपिबद्ध हो गई जिस का शीर्षक रखा गया 'माकार चद्रा'। उसे लेकर वह 'काकेश' नामक स्थानीय दैनिक समाचार पत्र के कार्यालय में गया तो उसे कहा गया कि नीचे अपना नाम लिख दो। अपने जीवन के दुर्भाग्य तथा तिव्त अनुभवों का स्मरण कर उसने कहानी के नीचे अपना उपनाम 'मैक्सिम गोर्की' लिखा। 'गोर्की' शब्द का अर्थ है 'तिव्त' या 'अभागा'। इस प्रकार आलेक्सी पियेश्कोय मैक्सिम गोर्की बन गया और 24 दिसम्बर सन् 1892 ई. के 'काकेश' में उसकी पहली रचना प्रकाशित हुई। वह पाठकों द्वारा पसन्द की गई। फिर लेखन का क्रम चल पड़ा। आलेक्सी को गोर्की बन कर जीवन की नई दिशा मिल गई।

गोर्की रूसी भाषा के प्रथम श्रेणी के लेखक बन गए और उन्हें अनेक साहित्यिक सफलताएं मिलीं। पर गोर्की की महानता केवल एक साहित्यिक होने में नहीं बल्कि एक श्रेष्ठ मानव, महामानव होने में निहित है। मनुष्य के लिए उन के हृदय में एक अपार पीड़ा थी। उन्होंने मनुष्य को दुनिया की सब से बड़ी इकाई और मनुष्यता को सब से बड़ी सच्चाई समझा ही नहीं, उसके लिए संघर्ष भी किया।

22 जनवरी, 1905 ई. को किसानों, मजदूरों का एक विशाल जुलूस सम्राट जार के पास अपनी माँगें लेकर शान्तिपूर्ण ढंग से जा रहा था। जार के क्रूर सैनिकों ने निहत्थी जनता पर गोलाबारी करके राजपथ पर खून की नदी बहा दी। एक हजार से अधिक पुरुषों स्त्रियों की लाशें जार के महल के सामने बिछ गईं। शान्तिपूर्ण आन्दोलनकारियों का यह हत्याकाण्ड देखकर गोर्की की आंखों में खून उतर आया। उन्होंने रूस के जन साधारण तथा पाश्चात्य देशों के जनमत को तैयार करने के लिए जारशाही की पाशविकता का लम्बा चौड़ा विवरण लाखों की संख्या में प्रकाशित कराया। जार शाही घबरा गई। दो दिनों बाद रीशा बन्दरगाह पर पुलिस ने गोर्की को गिरफ्तार कर लिया। तब तक वे एक प्रतिष्ठित लेखक और राजनीतिक आन्दोलनकारी के रूप में प्रसिद्ध हो चुके थे। उनकी गिरफ्तारी की खबर दुनिया भर में बिजली की तरह फैल गई। फ्रांस, हालैंड, जर्मनी आदि देशों के सैकड़ों साहित्यकारों, वैज्ञानिकों ने गोर्की की मुक्ति के लिए अपने हस्ताक्षर करके एक आवेदन पत्र जार के पास भेजा। इटली की संसद के सदस्यों ने अपनी सरकार से आग्रह किया कि वह गोर्की की मुक्ति के लिए रूस की सरकार पर दबाव डाले। जेल में उन का क्षय रोग और बढ़ गया। उन के मुंह से खून आने लगा। उन्हें छोड़ दिया गया। इलाज के लिए, पर यह शर्त लगा दी गई कि वे रूस से बाहर नहीं जाएंगे। सरकारी आदेश की परवाह न करके वे क्रीमिया की ओर चल दिए। फिनलैंड, जर्मनी आदि की यात्रा करते हुए 10 अप्रैल 1906 ई. को अमेरिका पहुंच गए।

विदेश में उन का लेखन और राजनीतिक गतिविधियां जारी रहीं अपने देश लौटकर भी वे जार के शासन की दमनकारी नीतियों का विरोध करते रहे। क्रांतिकारियों से उनके पुराने सम्बन्ध थे ही। वे साहित्य और राजनीति पर पूरी तरह समर्पित हो गए और दोनों क्षेत्रों में पूरी तरह सक्रिय थे।

अक्टूबर सन् 1919 ई. में रूस में जब बोलशेविक पार्टी के नेता लेनिन कि नेतृत्व में क्रान्ति हुई और जार के साथ जारशाही की समाप्ति हुई और वहां साम्यवादी सरकार की स्थापना हुई तब बोलशेविकों ने यह घोषणा कर दी कि जो शारीरिक श्रम नहीं करेगा उसे रोटी नहीं मिलेगी। इस का परिणाम यह हुआ कि बुद्धिजीवियों, साहित्यकारों, शिल्पियों, वैज्ञानिकों की आजीविका बन्द हो गई। सन् 1919 में केवल साहित्य अकादमी के पचास सदस्य भुखमरी के शिकार होकर मौत के मुंह में चले गए। देशभर में फैले न जाने कितने बुद्धिजीवी बेकारी और भुखमरी के शिकार हुए। ऐसी निर्मम परिस्थिति में गोर्की कैसे चुप बैठ सकते थे। दरिद्र बुद्धिजीवियों और लेखकों की दयनीय दशा से लेनिन को अवगत कराने के लिए वे उन के पास गए। लेनिन उनके मित्र थे और उनकी सहायता पर गोर्की को विश्वास था। पहले कई बार दोनों में तीव्र मतभेद होने पर भी दोनों की मित्रता में कोई अन्तर नहीं आया था। लेकिन इस बार शासक लेनिन ने बेरोजगार भूखे लेखकों की सहायता करने में अनिच्छा प्रकट की क्योंकि उनकी सरकार समझती थी कि लेखक निटल्ले हैं, वे शारीरिक श्रम नहीं करते हैं। इसलिए उन्हें श्रमिक के बराबर सुविधाएं नहीं दी जा

सकती। गोर्की लेखकों को भी श्रमिक समझते थे। लेखकों की सहायता करने में लेनिन की अनिच्छा देखकर गोर्की अपने आप को संभाल न सके। वे बहस करते हुए विक्षिप्त की तरह उत्तेजित होकर मेज पर हाथ पटकने लगे, चिल्लाने लगे और उत्तेजना की चरम दशा में बेहोश हो गए। यही तो महामानव गोर्की थे और चूंकि वे महामानव थे तभी तो महालेखक बन सके।

शासक लेनिन उन की यह दशा देखकर अश्रुविगलित हो गए। उन्हें झुकना पड़ा, गोर्की की बात माननी पड़ी और सरकारी नीति में परिवर्तन करना पड़ा। लेखकों को मानसिक श्रमिक माना गया और उन के मानसिक श्रम के बदले उन के योग्य विशेष भोजन पाने की अनुमति रूस की बोलशेविक पार्टी की सरकार को देनी पड़ी। लेखकों के लिए शयनगार, वक्तागृह, स्वास्थ्यप्रद, निवास स्थान, विद्वत निवास आदि की स्थापना सरकार की ओर से की गई। गोर्की की कोशिश से हजारों लेखकों, बुद्धिजीवियों की आजीविका का प्रबन्ध हुआ और इस प्रकार वे भूखे मरने से बचे। रूस में उस पीढ़ी का ऐसा कोई लेखक नहीं होगा जो किसी न किसी प्रकार गोर्की का ऋणी न रहा हो।

एक अनाथ बालक कठिन से कठिन परिस्थितियों में संघर्ष करता हुआ, कैसे महान लेखक बना और उस से भी अधिक महामानव बना, इस की कहानी बड़ी रोमांचक और बड़ी करुणामयी है। इस विस्तृत जानकारी उन की पुस्तकों 'मेरा बचपन' और 'मेरे विश्वविद्यालय' आदि से मिल सकती है।

गोर्की की मृत्यु बड़ी रहस्यपूर्ण है। उसमें किसी षड़यन्त्र की गन्ध आती है। 68 साल के बूढ़े, क्षयरोगी पर महाप्राण और महामानव मैक्सिम गोर्की की मृत्यु 18 जून, सन् 1936 ई. में मास्को में हुई। उनकी स्मृति में भारत के लेखक नतमस्तक हैं।

ए-34, न्यू इंडिया अपार्टमेंट्स, रोहिणी-सेक्टर 9, नई दिल्ली-110085

भारतीय संस्कृति की प्रकाशमान ज्योति :

मूल्य-चेतना

—डॉ. गोपीवल्लभ नेमा

जब जब हम हमारी ज्ञानशीलता, भावमयता और संकल्पशक्ति के सहारे हमारे संस्कारों को मांजकर और भी उन्नत संस्कारों को अपनाते हैं तब-तब हमें मूल्य चेतना की प्रकाशमयता प्राप्त होती है। इसकी पृष्ठभूमि में सांस्कृतिक आधार और हमारे आदर्श महापुरुषों की प्रेरणाओं का बल रहता है। इसके कारण नए और कभी चुनौती भरे संदर्भों में वे प्रेरणाएं नई पीढ़ी को सोच में व्यापकता प्रदान करती हैं, क्योंकि उन्हें भी विवेक के प्रकाश में मूल्यों को अपनाना आवश्यक लगता है। उदाहरण के लिए सौ वर्ष पूर्व जहां प्रत्येक राष्ट्र राष्ट्रहित तक ही अपना लक्ष्य स्थिर करता था वहीं आज यह लक्ष्य विश्वहित का हो चुका है। भारत को तो इस दृष्टि से पहले से ही आधार प्राप्त था जो अब और भी सुदृढ़ हो चुका है। इसलिए वह अपनी समस्याओं से जूझते हुए भी विश्वशांति हेतु प्रयासरत है। अतः मूल्यचेतना सुसंघटित और उदात्त मानवीय संवेदन है।¹ वह रूढ़ियों को तिरस्कृत करते हुए मानव के कल्याण की प्रेरक और पोषक है। इसके विशिष्ट और केंद्रीय आधारों को मूल्यों के नाम से उल्लेखित किया जाता है। डॉ. राधाकृष्णन के शब्दों में "उच्चतम जीवन मूल्य, विश्वजनित हैं। कला, विज्ञान, नैतिकता और धर्म के क्रियाकलाप तथा उपलब्धियां रक्त और नस्ल के अवरोधों का अतिक्रमण करके घुलने-मिलनेवाली और सहज संवेदनीय मानव चेतना का उच्चतम मूर्तरूप है"²।

मूल्य-स्थापना की प्रक्रिया का आधार ही यह है कि प्राचीन काल के श्रेष्ठजनों के महान कार्यों की बार-बार स्मृति से समष्टि पर और व्यक्ति-मन पर उनके उदात्त कार्यों की छाप के रूप में संस्कार अंकित हो जाते हैं। वे ही जीवन के आदर्शों को गढ़ते हैं। युगीन संदर्भों में कुछ नया कर दिखाने की उत्कृष्ट चाह व्यक्ति मन में पैदा कर देते हैं। इससे पुरातन सांस्कृतिक सम्पदा को नई और जीवनदायी चमक प्राप्त होती है। नई पीढ़ी के नवोदित मन की रचनाशील प्रवृत्तियों का श्रृंगार भी होता है। इसी दृष्टि से ऋग्वेद के ऋषि कहते हैं—“प्रास्य धारा अक्षरन्वृष्णः सुतस्योजस देवां अनुप्रभूषतः—”³

1. भारतीय एवं पाश्चात्य समालोचना: नवाकालन-डॉ. गोपीवल्लभ नेमा, पृ. 186-187 प्रकाशक-भारतीय ग्रन्थ निकेतन, दिल्ली, सन् 1982
2. प्राच्यधर्म और पाश्चात्यविचार पृ. 418 अनुवादक-उमापतिराय चंदेल प्रकाशक-राजपाल एण्ड संस, दिल्ली, दूसरा संस्करण सन् 1970
3. ऋग्वेद 9/29/1

— अभ्युदय चाहनेवाले की आवश्यकता है कि वह विद्वानों का अनुयायी बने। सर्वकामप्रद परमात्म चेतना से अपने को अमृतमय करे। उसके नित्यशुद्ध बुद्ध तेज को हृदयंगम कर तेजस्वी बने। आइए हम चार मुख्य विश्वजनीन मूल्यों पर विचार करें। ये मूल्य हैं —

1. मर्यादायुक्त सामाजिक जीवन
2. कला साहित्य, संगीतगत सृजनशीलता
3. शिवत्व की प्रतिष्ठा
4. आत्मिक परिपूर्णता

1. मर्यादायुक्त सामाजिक जीवन

मर्यादाएं, व्यक्ति को उसके स्व को उदात्त बना कर समाजोन्मुख, रचनाशील, और संयमी बनाती हैं। संयम से इन्द्रियां और मन नियंत्रित हो जाते हैं। व्यक्ति को बल व एकाग्रता प्राप्त होती है। वह कष्ट में भी अविचलित और कर्मशील बना रहता है। अपनी प्रतिभा को अधिकाधिक निखार पाता है। इससे वह सबमें अपनत्व अनुभव कर अपने शुचिपूर्ण कर्मों द्वारा सामाजिक प्रेम, एकत्व और ज्ञान की उज्ज्वल रश्मियां फैलाता है। उसका इहलौकिक, जीवन आनंद और परिपूर्ण तुष्टि से भर उठाता है। जो लोग मन्मुखी हो मर्यादा का उल्लंघन करते हैं वे मानो बेलगाम पागल घोड़े पर बैठे खतरों को आमंत्रित करते हैं। जब उन्हें विनाश अपने चंगुल में धर लेता है तब कहीं जाकर उन्हें मर्यादित सामाजिक जीवन शैली के मूल्य की महत्ता की ओर अपनी अयोग्यताओं की तीव्र अनुभूति होती है।

मर्यादायुक्त अर्थ-काम का यह अर्थ कदापि नहीं कि अर्थ और काम को तिलान्जलि दे दी जाए। इस मूल्य का आग्रह इतना ही है कि अर्थ-अर्जन और कामनाओं की पूर्ति में स्वेच्छाचरिता से बचा जाए क्योंकि ऐसा होने पर जिनके अधिकार दमित होंगे उनमें द्वेषाग्नि जल उठेगी। हिंसा का वातावरण इतना भयावह भी हो सकता है कि व्यक्ति द्वारा किया गया अनुचित धन-संग्रह व निर्मित अट्टालिकाएं जला कर नष्ट कर दी जाएं। आज यह बात बच्चा भी समझता है कि गरीब से गरीब भी अपने अधिकारों के प्रति सजग है एक सीमा के बाद वह बदला लेने उठ खड़ा होता है। किन्तु यदि समाज में बंधुत्व व न्यायपूर्ण व्यवहार होता हो। तो व्यक्ति समाज व देश की गरिमा, के लिए त्याग भी करता है। मर्यादा कोई रहस्य या अजूबा नहीं हैं। पर न जाने क्यों इसके विषय में सुनकर कुछ लोग नाक-भौंह-सिकोड़ते हैं। यह मो मानवतापूर्ण कर्म का ही विधिनिष्ठ स्वरूप है। इसे अपनाने का अर्थ सर्वव्यापक परमसत्य की राह पर चलना। यह सर्वसामान्य का सिद्धांत है। इसमें व्यक्तिगत, सामाजिक, राष्ट्रीय और विश्वजनीन सुसंगति सम्मिलित

हैं। व्यक्तिगत स्तर पर मनः-संकल्प, ज्ञान व भाव में सुसंगति; सामाजिक स्तर पर परिवार, पड़ोस, जाति और सहकर्मियों से सुसंगति तथा राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर मानवतावादी दृष्टि व कार्यों से एकात्मता। उदाहरणार्थ मंदबुद्धि व विकलांगों का प्रशिक्षण व रोगियों की सेवा। इससे उत्पन्न सर्व सामरस्य की शक्ति व्यक्ति-के विकास का मार्ग प्रशस्त करती है। उसे नेतृत्व क्षमता से सम्पन्न करती है क्योंकि सफल नेता वही है जो स्वयं तो उच्च उद्देश्ययुक्त-मूल्ययुक्त प्रेरणा से भरा ही हो दूसरों को भी उस प्रेरणा के स्फुलिंगों से तरंगित करे। यह मनोवैज्ञानिक तथ्य हमें मूल्य और सात्विक प्रेरणा के बीच अन्योन्य आधारित सम्बन्ध बताता है क्योंकि उच्च लक्ष्य की ओर सजग प्रवृत्ति का नाम ही सात्विक प्रेरणा है तथा समाज द्वारा मान्य प्रेरक उच्च लक्ष्य ही मूल्य है। मर्यादा की दृष्टि से ऋग्वेद के ऋषि कहते हैं "सामानु प्रावर्तत. . ."¹ = संसार में समन्वय की भावना से प्रवृत्त होना चाहिए।

समन्वय की बुनियादी शर्त है न्याय भावना और व्यावहारिक औचित्य। तभी शिष्ट आदान-प्रदान और विचार-विनिमय सफल हो पाता है। अच्छी परम्पराएं व मान्यताएं विकसित होती हैं क्योंकि समाज, संस्कृति के संदर्भ में व्यक्ति-व्यक्ति संबंध से विकसित होता है। उदाहरण के लिए भारतीय संस्कृति में ऋषि, ऋण, पितृ ऋण, देव ऋण, अतिथि ऋण (मनुष्य ऋण) और भूत (पशु-पक्षी) ऋण को चुकाने को प्राप्त महत्वपूर्ण स्थान। इसके माध्यम से आदर्श गुरुदेव व पितृदेव के आदर्शों पर चलने की प्रेरणा मिलती रहती है। साथ ही विपन्न या निराश्रय मनुष्य के प्रति सामाजिक दायित्व का निर्वाह करने की भावना भी उत्पन्न होती है।

2. समर्पित रचनाशीलता (कला साहित्य-संगीतगत)

अपनी रचना में अपने सीमित व्यक्तित्व को विसर्जित कर व समाज-चेतना से एक रस होकर सच्चा रचनाकार एक समानान्तर किन्तु व्यापक व्यक्तित्व को ग्रहण करता है। यह अपने आप में एक उपलब्धि है। इससे लोकधरातल पर आकर वह जन-जन के हृदय से संवाद स्थापित करता है। उसे सांस्कृतिक चेतना से तो समृद्ध करता ही है युग संवेदन से भी अनुप्राणित करता है। इसी कारण समर्पित रचनाशीलता सबके लिए एक वांछित मूल्य है। वह चित्रकला, प्रस्तरशिल्प, संगीत, साहित्यादि के रूप में जीवन को तोष और प्रेरणा देने के कारण मूल्यवान है ऐसा संगीत और साहित्य तो जन-जन के अधरों पर बस जाता है। युगों तक प्राणसिंचन करता रहता है। हर संवेदनशील कला-संगीत-साहित्य प्रेमी उसके माध्यम से अपनी चेतना में लोक चेतना का साक्षात्कार करता है। उदाहरण के लिये बुद्ध की ध्यानावस्थित प्रतिमा उसे बुद्ध की निर्वाण भावना से ही नहीं वरन् लोक को भी अपने दुखों से मुक्त होने हेतु परमसुख प्राप्ति की प्रेरणा से परिचित कराती है। इसी प्रकार साहित्य, समाज और विश्व की सुख-शान्ति के प्रयास, अन्याय प्रतिरोध, पारिवारिक प्रेम आदि के रसमय वर्णन के माध्यम से हमें सांस्कृतिक चेतना से जोड़ देता

1. ऋग्वेद 10/135/4

है। हम इस चेतना की प्रकाशमयता से दीप्त हो उठते हैं। तुलसीदास वर्णित श्रीराम का वन में मुनियों की हड़्डियों को ढेर देखकर राक्षसों के विनाश की प्रतिज्ञा करना हममें भी साहस और बल का संचार करता है। 'आत्मजयी' खण्डकाव्य (कुंवर नारायण) में स्वयं यमदेव नचिकेता को मृत्युबोध से परे हटकर शाश्वत चेतना से भर उठने की जब प्रेरणा देते हैं तो उसे हृदयंगम कर हमारा भी अवसाद कौसों दूर भाग जाता है। देखिए ये पंक्तियाँ—

“तू रचनाशील चेतना का कण-कण में प्रसार

तू यही समझ कर जी

तुझको फिर मुझ तक वापस आना है”।

ऐसी जीवन्त और परमार्थनिष्ठ प्रेरणा प्राप्त कर 'आत्मजयी' का नायक नचिकेता न केवल पारमार्थिक सत्य को अनुभव करता है वरन् अपने क्रुद्ध पिता के मन की खोई शांति भी उन्हें उपलब्ध कराता है। यही हम भारतीयों का बहुपक्षीय, सुसंगठित, निर्भय और आनन्दमय जीवन का सच्चा चित्र है जिसका जीता-जागता उदाहरण हमें आज भी मिल जाता है चाहे वह विरल ही क्यों न हो गया है। इस बहुपक्षीय अनुभूति की प्रेरक रचनात्मक मूल्यचेतना ही है। पर यह लिजलिजी मूल्य चेतना नहीं तो कठिन परिस्थितियों से समझौता कर ले। यह तो यम से भी अपनी बात मनवाने की ताकत रखने वाली है। आंधियों को चुनौती देने वाली प्रकाशमय दीप की तरह अडिग है क्योंकि इसके धारणकर्ता पात्र को और इसके रचनाकार को अपने सर्वसामर्थ्यवान सृजनहार में विश्वास है। इसी तरह चित्रकला, संगीतादि से संबंधित रचनाओं द्वारा सृजनकार अपनी प्रकाशमयी चेतना से साक्षात्कार करते हैं। डॉ. गोविन्दचन्द्र पांडे ने ठीक ही कहा है—“विषय कल्पना के सूत्र आत्मकल्पना से ही निःसृत होते हैं। . . . भाषा, कला आदि के क्षेत्रों में इसे आत्मनिरूपण के प्रभेद मिलते हैं।”।

3. शिवत्व की प्रतिष्ठा

सर्व के कल्याण की दृष्टि से किया गया ज्ञान का प्रसार-प्रचार धर्मशाला, चिकित्सालय, अन्न क्षेत्र आदि का निर्माण व संचालन शिवत्व की प्रतिष्ठा के कार्य हैं। इन कार्यों में स्तरहीनता तभी आती है जब व्यवसाय की दृष्टि इनमें उभर आती है। शिवत्व प्रेरित धनी व्यक्ति अपने धन और जीवन को न केवल सार्थक कर लेता है बल्कि अनायास ही उसे महिमामण्डित भी कर लेता है। अच्छे विद्यालय खोलकर समाज को ज्ञान की ज्योति से दीप्त करता है। यदि व्यक्ति स्वयं तो बड़ी धनराशि वाला न हो और फिर भी दानदाताओं को अपनी सात्विकता से इस ओर लगाने को उद्यत कर दे तो कहना ही क्या? महामना मदनमोहनजी मालवीय इसके ज्वलंत उदाहरण हैं। बनारस हिंदू विश्वविद्यालय उन्हीं के सत्प्रयासों का सुफल है।

1. भारतीय परम्परा के मूल स्वर—नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, सन् 1981 प्रथम संस्करण, पृष्ठ 95-96

अनेकानेक धर्मप्रचारकों ने इसी मूल्य के नाते परस्पर संघर्ष करती जनता के बीच जाकर आध्यात्मिक जागरण का शंख फूँका। इस संबंध में भगवान बुद्ध का धर्म प्रचार हेतु प्रस्तुत अपने एक शिष्य से हुआ संवाद उल्लेखनीय है। उन्होंने शिष्य से पूछा वत्स! जिस ग्राम में तुम पहुंचोगे यदि वहाँ के ग्रामवासी तुम्हारा सत्कार न करें तो तुम क्या करोगे? शिष्य ने कहा मैं उनसे कोई अपेक्षा नहीं रखूँगा। उन्होंने पूछा कि यदि वे तुम्हारे सामने ही तुम्हारी बुराई करें तो क्या फिर भी तुम प्रेमपूर्वक उन्हें धर्म का और संघ का मार्ग बताओगे। शिष्य ने कहा अवश्य ही भगवान तब भगवान बुद्ध ने पूछा कि यदि इस पर भी क्रुद्ध हो कुछ ग्रामवासी तुम पर पत्थर फेंके तो तुम क्या करने का निर्णय लोगे? शिष्य ने कहा भन्ते! आपके आशीर्वाद से मुझ में संयम और धैर्य बना रहेगा। मैं और भी प्रेम से उन्हें धर्म और संघ के पवित्र मार्ग पर चलकर अपने को और अपनी सन्तान को पवित्र और उन्नत बनाने की प्रेरणा दूँगा।

इस प्रसंग से शिवत्व की प्रतिष्ठा का मूल्य स्वयंमेव स्पष्ट है। ऐसे मूल्यनिष्ठ व्यक्ति का जीवन एक व्यापक यज्ञ, एक सतत अनुष्ठान या समग्र पूजा से क्या कम है? दूसरे शब्दों में यह विश्वशक्ति की प्रतिष्ठा का यज्ञ है।

इसके लिए व्यक्तियों को और संस्थाओं को कमर कस कर कार्य करना होगा। इसे स्पष्ट करते हुये डॉ. राधाकृष्णन कहते हैं— 'यदि हर समाज में से काफी संख्या में ऐसे स्त्री और पुरुष आगे आ सकें जो धार्मिक और राजनैतिक उन्मादों से मुक्त हो, जो हर प्रकार मानसिक एवं नैतिक अत्याचार का हटकर विरोध कर सकें, जो तीखी राष्ट्रीय भावना के स्थान पर उदार विश्वबंधुत्व की भावना को पनपा सकें तो क्या नहीं किया जा सकता?'¹

4. आत्मिक परिपूर्णता

पारमार्थिक मूल्य-अतिशय आनंदस्वरूप-व्यापकतम होते हैं। भारतीय संस्कृति मानव आत्मा को ब्रह्मात्मा का अंश मानती है। जैसे साधारण गुब्बारे में की हवा और वायुमण्डल की हवा। ब्रह्म का अर्थ है सब ओर व्यापक सत्ता। जैसे एक स्थान पर बन्द हवा अपनी सीमा को भेद कर वायुमण्डल की हवा से एकरस हो जाने का सहज प्रयास करती है, इसी प्रकार देह की सीमा को बांध कर साधक ब्रह्मात्मा से एकरस होना चाहता है। इसी प्रयास में सफलता ही हमारा चतुर्थ पुरुषार्थ मोक्ष है। भक्ति से या ज्ञान के अवलम्बन से वह इसे प्राप्त कर सकता है। इनसे उसकी सांस्कारिक इच्छाएं जो उसे संसार में व्यस्त बनाए रहने वाली हैं शांत हो जाती हैं। जब वह अहंकार और ममत्व के बन्धन से मुक्त हो जाता है। इसी को उपनिषदादि ग्रन्थ ग्रन्थिभेद कहते हैं। वह सब प्राणियों को अपने आप में और अपने आपको सब प्राणियों में देखता है। वास्तव में आत्मा-परमात्मा की एकरसता ही सब सुखों का सुख है। इस आध्यात्मिक परिपूर्णता की स्थिति में आप्तकाम साधक परमानन्दमय हो जाता है। परमात्मा की कृपामयी अमृतवर्षा से धन्य हो जाता है। हमारे सभी धार्मिक ग्रन्थ हमें आत्मिक परिपूर्णता की ओर अग्रसर होने की प्रेरणा देते हैं।

1. प्राच्यधर्म और पाश्चात्य विचार-अनु. उमापति राय चंदेल, प्रकाशक-राजपाल एण्ड संस दूसरा संस्करण सन् 1970 पृ. 420

चारों मूल्यों में एकान्विति

उक्त चारों मूल्य वैदिककाल से ही हमारी संस्कृति का पोषण व प्रकाशन कर रहे हैं। पारमार्थिक मूल्य को ही ऋग्वेद में सत्य कहा गया है। मर्यादायुक्त सामाजिक जीवन शिवत्व की प्रतिष्ठा व समर्पित रचनाशीलता की विकासोन्मुखता में सतचित्-आनन्दनिष्ठता के कारण उन्हें समवेत रूप में ऋत् कहकर सम्मानित किया गया है। इस कारण चारों मूल्यों में एकान्विति हैं। डॉ. रामनाथ शर्मा इस एकता को स्पष्ट करते हुए कहते हैं "मानव के अस्वित्त्व, ज्ञान और मूल्य (आनन्द) की समस्याएं एक दूसरे से अलग नहीं हैं, परस्पर निर्भर हैं, बल्कि मूल रूप से एक हैं।" यहाँ यह प्रश्न होता है कि पारमार्थिक तत्व तो पूर्णतः निरपेक्ष है ऐसे में उसकी गणना मूल्य में कैसे की जा सकती है। ऊपर-ऊपर से प्रश्न बड़ा तर्कसंगत लगता है लेकिन जब हम शुद्ध अन्तःकरण/सूक्ष्म मन-बुद्धि की ब्रह्मयोग या ब्रह्ममय होने की सुविदित क्षमता का विचार करते हैं तो इस प्रकार के प्रश्नों का समाधान हो जाता है। भारतीय दर्शन में योग, कर्मयोग, भक्तियोग, ज्ञानयोग आदि मार्ग इसी मूल्यवान जिज्ञासा की तुष्टि के लिये प्रतिष्ठित हैं। समाजसेवा या कलागत सृजनशीलता भी सूक्ष्मबुद्धि को परमात्म चेतना से संयुक्त करने की माध्यम हैं। इसीलिए इन्हें क्रमशः भावयोग और विद्या कहा गया है। इसी प्रकार की मूल्य-व्यवस्था हमारी संस्कृति में विरोध और अपकर्ष दूर करने की रामबाण औषधि है। आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी मूल्यों से जुड़ी सहिष्णुता की भावना को भी इसका श्रेय देते हैं। सत्य ही तो है क्योंकि मूल्यों की आनन्दमयता और ज्ञानप्रेरक सहिष्णुता के अमृतमय सिंचन से रसमय होकर शक, हूण आदि अनेक जातियां आर्य जाति से एकमेक हो गईं।

मनोसामाजिक परिप्रेक्ष्य में मूल्यों का योगदान—

यह एक मनोवैज्ञानिक सत्य है कि व्यक्ति का उदात्त अहं कुछ श्रेष्ठतर की अनुभूति के लिए उत्साही रहता है। इसीलिए वह अपने सामान्य अहं को उस ओर प्रयत्न करने को प्रेरित करता है। इस प्रकार की मनः स्थिति वाले सत्पुरुष सुसंयोगवश एकजुट होकर व उद्योगशील भी होकर समाज जागृति में अपना योगदान भी देते हैं। इससे उनके अन्तर में मूल्य चेतना का आनन्द भी तरंगित होने लगता है। ऐसे समूह और ऐसी संस्थाओं में स्वभावतः ही परस्पर निकट आने का भाव उत्पन्न हो जाता है। परन्तु उनमें से प्रत्येक में अपनी-अपनी निजता को भी बनाए रखने की विशेषता रहती है। इन दोनों प्रवृत्तियों के कारण वे परस्पर व्यवस्थापना को अपनाकर समान मूल्यों के प्रसार-प्रचार हेतु संयुक्त कार्यक्रमों को लेकर सामाजिक क्षेत्र में कार्यरत होती हैं। मूल्यचेतना उन्हें छोटे-मोटे मतान्तरों के बीच भी जोड़े रहती है। इससे इन संस्थाओं से सहानुभूति रखनेवालों में भी सहधार्मिता का विस्तार होता है।

1. समकालीन भारतीय दर्शन पृ. 331 प्रथम सं. सन् 1976-77 प्रकाशक केदारनाथ रामनाथ, मेरठ

मूल्य और आधुनिक युग की विकारग्रस्त वास्तविकताएं:-

उक्त विवेचन के संदर्भ में आज वास्तविकताएं तो चुनौतीपूर्ण हैं। हम पाते हैं कि मर्यादित सामाजिकता, सृजनशीलता, शिवत्व प्रतिष्ठा और आत्मिक परिपूर्णता के प्रयासों में स्तरीय गिरावट आई है। गिरते शिक्षा स्तर, गिरते चरित्र, कुंठित प्रशासनिक व्यवस्था और अपराधी तत्वों से घिरी राजनीति ने ही हमें यह दिन दिखाया है। यदि हम संस्कृति और मूल्यों की अस्मिता बचाना चाहते हैं तो हमें नगर-नगर और ग्राम-ग्राम में इन मूल्यों के निर्वाह के लिए ब्रत लेकर प्रतिमाह अपने-अपने कार्यों और परिणामों का लेखाजोखा करना चाहिए। अधिवक्ताओं, चिकित्सकों, शिक्षकों, स्वयंसेवकों व अपने द्वारा प्रशिक्षित मंदबुद्धि तरुणों का भी योग्यतानुसार इस महत् उद्देश्य की पूर्ति में सहयोग लेना चाहिए। न्याय के सिद्धांतों और औचित्यपूर्ण सामाजिक जीवनशैली तथा मौलिक और सारयुक्त आध्यात्म पर प्रामाणिक विद्वानों के सहयोग से नगरपालिकाओं द्वारा सादगीपूर्ण परिचर्चाएं व प्रश्नमंच आयोजित कराए जाना लाभकर होगा। इन उपायों से संस्कृति व मूल्य-चेतना अधिकाधिक ग्राह्य होगी। इसके अभाव में हमें इस कटु सत्य को ध्यान में रखे रहना है कि जो संस्कृति, जो समाज और जो राष्ट्र मूल्य चेतना से शून्य हो जाता है वह आंखें खुली होने पर भी विघटन और विनाश की गहरी खाई में गिरने के लिए स्वतः ही अभिशप्त होता है।

नेमा निवास, पलटन क्षेत्र, सीहोर (म.प्र.)- 466009

1. व्यवस्थापन = सीमित कार्यों में पूर्ण सहयोग की पहल

मनोरंजन का नया रूप—डी टी एच टी वी

प्रसारण

—विनीता सिंघल

डी टी एच यानि आपके घर में सीधा टी वी प्रसारण। कई वर्षों से चर्चित इस उच्च तकनीक द्वारा अनेक मल्टी चैनलों के टी वी कार्यक्रमों को बिना किसी केबल ऑपरेटर की सहायता के सीधे घर के टी वी पर देखा जा सकता है। दूसरे शब्दों में उसे मनोरंजन की दुनिया में क्रांति के चौथे चरण का शुभारंभ भी कहा जा सकता है। जब से देश में डी. टी. एच सेवा को ग्रीन सिग्नल मिला तब से ही इस तकनीक को लेकर उठ रहे सभी सवालोंने पर पटाक्षेप हो गया।

भारत में पहली टेलीविजन सेवा 1959 में आरंभ हुई थी। इस समय दृश्य श्रव्य संकेतों का प्रसारण केवल पृथ्वी से जुड़ी संचार व्यवस्था से सीमित कार्यक्रमों के जरिए किया जाता था। यही भारत में टी.वी. सेवा का प्रथम चरण कहा जा सकता है। थोड़े ही समय में केवल एक चैनल ही मानों मनोरंजन की दुनिया में क्रांति ले आया और लोग रेडियो को भूल कर टी. वी. के दीवाने हो गए। इसके बाद भारत में टी. वी. सेवा का दूसरा चरण आरंभ हुआ। उन्नीस सौ बयासी में लोगों ने दिल्ली में आयोजित एशियाई खेलों को रंगों में देखा। इसके लिए जगह-जगह पर बड़े बड़े डिश एंटीना लगाए गए थे जो उपग्रह से सिग्नल रिसीव करते थे। इस प्रकार भारत में उपग्रह टी. वी. की शुरुआत हुई। इसी समय घरों में वी.सी.आर. का प्रवेश हुआ और लोगों ने घर बैठे कैसेटों के जरिए देशी विदेशी फिल्मों के मजे लिए। और तभी भारत में केबल टी वी का धमाकेदार पदार्पण हुआ जिसकी चमक में सब कुछ धुंधला पड़ गया। यह मनोरंजन का तीसरा और सबसे आकर्षक दौर था। इस दौर में केबल ऑपरेटर, प्रत्येक सैटेलाइट के लिए एक-एक डिश का इस्तेमाल करके अनेक उपग्रहों से प्राप्त सिग्नलों को 'मिक्सर' में मिला कर टी. वी. तक पहुंचाते थे।

केबल टी. वी. द्वारा लोग घर बैठे अनेक चैनलों से प्रसारित कार्यक्रमों का आनंद लेने लगे। इन चैनलों में स्वदेशी के साथ-साथ विदेशी चैनलें भी शामिल थीं। इस तरह वी सी आर और कैसेटों का दौर भी बीता हुआ कल बन गया। धीरे-धीरे लोगों में कुछ और नया देखने की चाह पनपने लगी बल्कि लोगों को पैसे देकर भी केवल सीमित चैनलें ही देख पाने का दुःख सालने लगा क्योंकि उन्हें केवल वे ही चैनल देखने को मिलते थे जो केबल ऑपरेटर उन तक पहुंचाता था। ऐसे में लोगों को लगने लगा कि काश एक ऐसी सुविधा होती जिसके जरिए केबल

ऑपरेटर पर निर्भर हुए बिना ही वे अपनी पसंद के कार्यक्रम देख सकते। तब ही एक ऐसे छोटे डिश एंटीना की कल्पना की गई जिसे घर में स्वयं ही फिट किया जा सके। इसी कल्पना को साकार किया है डी टी एच टेलीविजन ने और यही है विकास का चौथा चरण जिसमें आपको केबल ऑपरेटर पर आश्रित नहीं रहना पड़ेगा। डीटीएच रिसीवर सैट में एक डेढ़ फुट व्यास की डिश एंटीना होती है जिसे अपने घर के दक्षिण की ओर स्थित बालकनी अथवा खिड़की पर स्वयं ही फिट करके, देश-विदेश से प्रसारित ढेरों चैनलों में से आप अपनी मनपसंद चैनल चुन कर उसका आनंद ले सकते हैं। केबल टी. वी. में प्रयुक्त सी बेंड की चैनल धारक क्षमता की एक निश्चित सीमा थी मगर इस छोटी सी डिश की क्षमता असीमित है क्योंकि इसमें 24 चैनलों वाले सी-बैंड के स्थान पर 128 चैनलों वाले यू-बैंड के ट्रान्स्पॉन्डर का इस्तेमाल किया गया है। एक तरह से यह केबल टी. वी. का उन्नत या सुधरा प्रारूप है जो आधुनिकतम डिजिटल संकुलन नामक प्रौद्योगिकी पर आधारित है। वास्तव में डी टी एच प्रसारण इसी प्रौद्योगिकी की देन है। इसी प्रौद्योगिकी की सहायता से 36 मेगाहर्ट्ज फ्रीक्वेंसी का एक ट्रान्स्पान्डर एक ही कैरियर फ्रीक्वेंसी पर 20 विभिन्न चैनलों को मल्टीप्लेक्स कर सकता है और आप घर बैठे इन सब चैनलों में से मनचाहे चैनल को बिना किसी सहायता के देख सकते हैं।

लेकिन ऐसा नहीं है कि डी टी एच के जरिए आप ये सारे चैनल मुफ्त में देख सकते हैं। कुछ चैनल 'पे सर्विस' के रूप में भी होंगे बल्कि इनके लिए आपको एक खास तरह के सेल फोन की तरह के कार्ड दिए जाएंगे जिनके प्रयोग से ही आप चैनल देख पाएंगे। डी टी एच पर 'पे सर्विस' के रूप में इस्तेमाल करने के लिए ट्रांसमिशन के समय सिग्नल पर पहले से ही पूर्व-नियोजित कूट का प्रयोग किया गया होता है जिससे कोई भी अनाधिकृत रूप से इस कार्यक्रम को नहीं देख पाएगा। ट्रान्स्पान्डर द्वारा ही प्रसारित संकेतों को इंटीग्रेटेड रिसीव एंड डिकोड बक्से की सहायता से रिसीव तथा डिकोड करके वास्तविक कार्यक्रम को देखा जा सकता है। ट्रांसमिशन के समय सिग्नलों पर जो एन्क्रिप्ट किया जाता है, उसको हटाने के लिए रिसीव एंड डिकोड बक्से में एक स्मार्ट कार्ड का उपयोग किया जाता है। इस सुविधा में यह आइ आर डी बक्सा काफी महंगा पड़ता है क्योंकि आइ आर डी बक्से को केवल आयात ही किया जाता है। और एक आयातित बक्से का मूल्य 400 से 600 अमरीकी डॉलर अर्थात् 16000 से 24000 रुपए तक है। ऐसे में डी पी एच रिसीविंग टी वी सैट और डिश एंटीना आदि उपकरण लगाने की कीमत 50 से 60 हजार रुपए तक आती है इसके अतिरिक्त पे चैनलों का वार्षिक खर्च भी लगभग 4 हजार से 12 हजार रुपए तक होने का अनुमान है। परिणामस्वरूप डी टी एच टीवी सैट काफी महंगा पड़ेगा। यह भी सच है कि जो भी कोई तकनीक आती है वह शुरू-शुरू में तो महंगी और आम आदमी की पहुंच के बाहर मालूम होती है लेकिन धीरे धीरे ऐसे विकल्प भी मिल जाते हैं कि उसकी घुसपैठ आम आदमी तक हो ही जाती है। डी टी एच सुविधा को हरी झंडी मिल जाने के बाद भी यह माना जा रहा है कि पहले साल में केवल धनाढ्य वर्ग ही इसका लाभ उठा पाएगा। दूसरी ओर अधिक

मूल्य होने के कारण केवल वे उद्यमी ही डी टी एच टेलीविजन बनाने के व्यवसाय में प्रवेश लेने का साहस कर पाएंगे जिनमें लगभग 3-4 वर्षों तक घाटा सह पाने की क्षमता होगी। लोगों का अनुमान है कि भारत में डी. टी. वी. इस्तेमाल करने वालों की संख्या 50 लाख तक पहुंचने में 5 से 10 वर्ष तक लगेंगे।

डी टी एच सेवा में के-बैंड के और भी कई लाभ हैं। ये केवल डी टी एच टी एच तक ही सीमित नहीं रहेगा। विशेषज्ञों के अनुसार डी टी एच टी वी को इंटरएक्टिव भी बनाया जा सकता है जिससे इसका उपयोग टेलीकॉन्फ्रेंसिंग के लिए तथा प्रशिक्षण के लिए भी किया जा सकेगा। के यू बैंड के भी अनेक लाभ हैं। यह भौगोलिक सीमाओं से परे है अर्थात् इसके जरिए वह कुछ देख सकेंगे जिसे न देख पाने की कसक बरसों से मन में थी।

इसमें केबल ऑपरेटर की आवश्यकता नहीं होती। इसकी डिश छोटी होने के कारण कोई भी स्वयं इसे लगा सकता है। इससे प्राप्त होने वाले संकेतों से टी वी चित्र एवं ध्वनि दोनों ही बहुत स्पष्ट होते हैं। इसमें चैनलों की संख्या बहुत अधिक होती है। इसके जहां इतने लाभ हैं, वहीं इसमें एक दोष भी है। अधिक वर्षा होने पर के यू बैंड के सिग्नलों की शक्ति बहुत क्षीण हो जाती है जिसके फलस्वरूप संग्राहकता कम हो जाती है और टी वी प्राप्त हो रहे चित्र एवं ध्वनि दोनों ही खराब हो जाते हैं।

डी टी एच प्रसार सेवा का मामला कई वर्षों से लंबित था। उस समय की प्रासंगिकता कुछ और थी जिसके कारण 1997 में इस पर प्रतिबंध लगा दिया गया था। लेकिन अब भारतीय और अन्य टेलीविजन चैनलों को अपलिंक की अनुमति दी जा चुकी है। उन पर रखे जाने वाले नियंत्रण का पक्ष भी पूरा हो चुका है। डी टी एच के लिए भारत की भूमि पर एक अर्थस्टेशन जरूरी था तब ही इसके अपलिंक पर आवश्यक नियमबद्धता के तहत नियंत्रण रखा जा सकता था। यह भी निर्धारित किया गया है कि डी टी एच लाइसेंस निजी या सरकारी किसी भी एक एजेंसी को पूरी तरह नहीं दिया जाएगा। कार्यक्रम और विज्ञापन संहिताओं का पालन करते हुए भारत की भूमि से ही अपलिंक करने की व्यवस्था होगी। इसमें विदेशी पूंजी निवेश 49 प्रतिशत से अधिक नहीं होगा और कम्पनी का मुख्य कार्यकारी अधिकारी भी स्वदेशी होगा।

भारत में जल्दी ही डी टी एच टी वी के आरम्भ हो पाने की खबर के फैलते ही अनेक बड़ी-बड़ी अन्तर्राष्ट्रीय डी टी एच ऑपरेटर अपने प्रस्ताव तैयार कर चुके हैं जिनमें से प्रमुख है पैन एमसैट, मी सैट, सी सैट, जी, गाल्स सैटैलाइट, जे सी सैट और भिनॉत्रा आदि। इस दौड़ में स्टार टी वी ने भी बढ़-चढ़ कर हिस्सा लिया मगर बाद में स्टार टी वी को अपना डी टी एच विभाग बंद करना पड़ा और उसे करोंडों का घाटा पड़ा। हालांकि अब दूरदर्शन इसका लाभ उठाएगा। दूरदर्शन ने स्वयं को पूरी तरह तैयार कर अब मलेशिया टी वी से हाथ मिला लिया है ताकि भारत में डी टी एच का शुभारंभ किया जा सके। यही नहीं कुछ रेदेरेस्ट्रियल टेलीकास्ट से

जुड़े चैनल्स को भी इसमें शामिल किए जाने की योजना है। उधर जी टी वी भी किसी से पीछे नहीं है। इसके लिए उसने स्टर्लिंग इन्फोटेक के साथ किसी करारनामें पर हस्ताक्षर भी कर दिए हैं। दौड़ तो जारी है लेकिन इसे नियंत्रण में रखने के लिए कुछ सरकारी नियम भी बनाए गए हैं जैसे कि अगर कोई कंपनी सरकारी नियम-निर्देशों पर काम नहीं करेगी तो उसे 50 करोड़ रुपए तक का जुर्माना भरना पड़ सकता है। यही नहीं उसका लाइसेंस भी रद्द किया जा सकता है। दक्षिण भारत की एक कम्पनी ने घोषणा की है कि पोंगल से डी टी एच लगाएंगे।

अधिकांश विशेषज्ञों का कहना है कि इस प्रौद्योगिकी के आने का मतलब, प्रसारण उद्योग में क्रांति का आना है। यह तकनीक अभी भले ही महंगी लगती हो किन्तु निकट भविष्य में अवश्य सस्ती हो जाएगी। ब्रिटेन में तो डी टी एच के लिए डिश और डिकोडर दोनों ही मुफ्त में दिए जा रहे हैं। वहीं अमेरिका में यह सेवा 'डाइरेक्ट टी वी' के नाम से उपलब्ध है। वैसे भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन भी डी टी एच उपग्रह बनाने और प्रक्षेपित करने पर विचार कर रहा है क्योंकि यदि भारत 'इन्फॉर्मेशन हाइ वे' यानि सूचना क्रांति के महामार्ग पर चलना चाहता है तो उसके पास इसके अलावा और कोई विकल्प नहीं है। कुछ विशेषज्ञों को मानना है कि डी टी एच सेवा से लोगों के सामने मनोरंजन को लेकर विकल्पों की कमी नहीं रह जाएगी। वे मनमाने कार्यक्रम देख सकेंगे। ये कार्यक्रम तकनीकी गुणवत्ता में भी कहीं बेहतर होंगे। दूसरी ओर कुछ का मानना है कि तमाम चैनल अपसंस्कृति फैलाने में जुटे हैं। इसलिए कड़े कानून बनाने होंगे जिससे देश की संस्कृति विषाक्त न हो सके क्योंकि भारत में डी टी एच टेलीविजन के विरोध में मुख्यतया यह कहा जा रहा है कि इससे न केवल भारतीय संस्कृति पर कुठाराघात होगा बल्कि इसके द्वारा प्रसारित विदेशी कार्यक्रम भारतीय जनमानस विशेष रूप से किशोर वय के युवाओं पर कुप्रभाव डालेंगे।

एच-61, रामा पार्क, मोहन गार्डन, उत्तम नगर के पास, नई दिल्ली 110059

यूरोपीय देशों का साझा प्लेटफार्म और नई मुद्रा यूरो

—एम. पी. सैनी

यूरो का औपचारिक उदय : पहली जनवरी 2002 से यूरोपीय साझी मुद्रा यूरो के प्रचलन से यूरोपवासियों को एकता के रूप में बांधने की ऐतिहासिक कोशिश कहा जाएगा। यूरोप के 12 देशों आस्ट्रिया, बैल्जियम, फिनलैंड, फ्रांस, जर्मनी, यूनान, आयरलैंड, इटली, स्पेन, लक्जमबर्ग नीदरलैंड व पुर्तगाल की सरकारों ने औपचारिक रूप से संयुक्त मुद्रा यूरो को अपनाकर 31 दिसंबर 2001 की मध्य रात्रि को यूरोप के तकरीबन 33 करोड़ देशवासियों को नववर्ष का तोहफा भेंट किया है। ब्रिटेन, स्वीडन व डेनमार्क ने फिलहाल यूरो मुद्रा न अपनाने का निर्णय लिया है। भविष्य में इन तीन देशों का यूरो के प्रति क्या झुकाव रहता है इस बारे में अभी कुछ नहीं कहा जा सकता। नववर्ष की पूर्व सन्ध्या पर नकदी मशीनों ने यूरो के जरिए लेनदेन शुरू करके लोगों को आनन्दित कर दिया है। जैसा कि विदित है कि यूरो एक जनवरी, 1999 को अस्तित्व-में आया था। अब एक जनवरी, 2002 से लोग अपनी परंपरागत मुद्रा को यूरो में बदलने लगे हैं। स्मरण रहे कि यूरोपीय साझी मुद्रा अपनाने वाले इन 12 देशों के 15 बिलियन बैंक नोट व 50 बिलियन धातु के सिक्कों के रूप में कुल 400 बिलियन पौंड की राशि अब बेकार हो गई है। सरल शब्दों में यूरो पहली ऐसी अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कहलाएगी जिसके पीछे न तो स्वर्ण मुद्रा ही होगी और न ही कोई मिली जुली राष्ट्रीय सरकार। यूरो नामक मुद्रा का संचालन एक केन्द्रीय बैंक द्वारा ही नियंत्रित होगा।

साझा सदस्य देश: एक जनवरी 1999 को आरंभिक सदस्य देशों के रूप में यूरोप के 11 राष्ट्रों ने [आस्ट्रिया, बैल्जियम, फिनलैंड, जर्मनी, आयरलैंड, इटली, स्पेन, लक्जमबर्ग, नीदरलैंड व पुर्तगाल] ने यूरो अपनाने का निर्णय लिया था। सन् 2000 में यूनान भी इस सूची में शामिल हो गया था। सन् 1999 के बाद से ही यह आशा की जा रही थी कि ब्रिटेन जो इस श्रेणी में शामिल नहीं था शीघ्र ही इस श्रेणी में शामिल हो जाएगा लेकिन ब्रिटेन ने अभी भी यूरो को अपनाने का निर्णय नहीं लिया।

जनवरी 1999 में यह आशा की जा रही थी कि ब्रिटेन अपनी पहचान अमरीका के साथ ज्यादा तथा अपनी यूरोपीय बिरादरी के साथ कम बनाने को इच्छुक है। उस समय इस बात की संभावना नजर आ रही थी कि यूरोपीय देशों के साझा निर्णय को ब्रिटेन शीघ्र ही स्वीकार कर लेगा

लेकिन तमाम संभावनाओं को नकारते हुए, जबकि 12 यूरोपीय देशों ने एक जनवरी 2002 से यूरोपीय मुद्रा यूरो को औपचारिक रूप से अपना लिया है वहां ब्रिटेन अभी भी अपना पूर्ववर्ती रवैया अपनाते हुए इस नई मुद्रा यूरो को अपनाने के पक्ष में नहीं हैं। जहां तक ब्रिटेन, स्वीडन व डेनमार्क का सवाल है इन देशों ने अपने अतीत की प्रतिष्ठा के दबाव के कारण यूरो को न अपनाने का निर्णय लिया है। ब्रिटेन की परेशानी तो समझी जा सकती है क्योंकि यूरोपीय मुद्रा संघ का सदस्य बनने के लिए ब्रिटेन में जनाधार एकत्रित किए जाने की तैयारियां चल रही हैं। लेकिन पहले से ही यूरोपीय मौद्रिक संघ के सदस्य देश स्वीडन तथा डेनमार्क आदि के यूरो मुद्रा न अपनाने का निर्णय किसी भी तरह से समझ में नहीं आ रहा।

बहरहाल यह आशा की जानी चाहिए कि यूरो के उदय व प्रचलन से यूरोपीय अर्थव्यवस्था में एक विकसित दौर उभरकर सामने आएगा।

उद्भव व विकास की कहानी : यूरो मुद्रा का इतिहास एकदम नया नहीं है। 1991 में मॉस्ट्रिच संधि में यूरोपीय एकल मुद्रा पर समझौता हुआ था। इससे पहले 1969 में राष्ट्र प्रमुखों ने ई. एम. यू. आर्थिक व मौद्रिक संघ (Economic and Monetary Union) पर सहमति जताई थी। 1995 में यूरो को मुद्रा घोषित किया गया। 1999 में यूरोप के 11 देशों में इसे लागू किया गया। 2000 में यूनान भी इस सूची में शामिल होकर अंतिम 12वां देश बन गया। 2001 में यूरो के नोट व सिक्कों का प्रचलन शुरू हो गया तथा बैंकों ने इसे मुद्रा के रूप में ग्रहण किया तथा 31 दिसंबर, 2001 की मध्य रात्रि को यूरोप के 12 देशों ने इसे वैधानिक मुद्रा के रूप में औपचारिक रूप में अपना लिया है।

दूसरे विश्व युद्ध के बाद से ही यूरोप के 6 देशों की तहस-नहस अर्थव्यवस्था ने 1950 के बाद से ही आर्थिक उदारीकरण या एकीकरण की तरफ पहला कदम बढ़ाया था। धीरे-धीरे यह महसूस किया गया कि जब तक यूरोप के 15 शक्तिशाली देशों के यूरोपीय संघ की साझी व संयुक्त मुद्रा नहीं होगी तब तक घरेलू व विदेशी बाजारों में इन देशों के सामने परेशानियां आती ही रहेंगी। यह धारणा सही भी साबित हुई और इन देशों के निर्यातकों को आज तक बढ़ी हुई लागतों का बोझा उठाना पड़ा है।

अमरीकी डालर को चुनौती : यूरोपीय साझा सदस्य देशों की मुद्रा यूरो को दूसरे विश्व युद्ध के बाद की सबसे महत्वपूर्ण घटना माना जा रहा है। इस बात की आशा की जा रही है कि यूरो मुद्रा आने वाले वर्षों में विश्व की अकेली सबसे बड़ी मुद्रा उभरकर सामने आएगी। 12 यूरोपीय देशों का एक साझे प्लेट फार्म पर खड़े होकर एक साझी मुद्रा यूरो को अपनाने का निर्णय न केवल यूरोपीय देशों के लेनदेन में मितव्ययी साबित होगा बल्कि इससे अमरीकी डालर का वर्षों पुराना एकाधिकार भी कम किया जा सकेगा।

भारतीय व्यापार को लाभ : जनवरी 1999 में यूरो को अपनाए जाने के समय सब इस बात से आशंकित थे कि यूरो मुद्रा का भारतीय रुपए के साथ व्यवहार या लेनदेन ना जाने किस प्रकार का होगा। उस समय यूरो का मूल्य रुपए के साथ 49.50 रुपये के आसपास आंका जा रहा था। आज फरवरी 2002 में हर्ष की बात है कि आज जब यूरो का लेनदेन शुरू हो गया है तो यूरो की कीमत 43.25 रु० पर आंकी जा रही है। यूरोपीय बाजार में भारत का व्यापार काफी महत्वपूर्ण माना जाता है। आशा की जा रही है कि यूरो के उदय से भारत की डालर पर निर्भरता को कम किया जा सकेगा। इस दशा में भारतीय निर्यातकों के लिए व्यापार की बेहतर संभावनाओं को बल मिलेगा। भारत के केन्द्रीय बैंक ने जनवरी 1999 से ही इस दिशा में आवश्यक कदम उठाते हुए यूरो जमा खाता खोलने, स्टाफ को आवश्यक प्रशिक्षण तथा यूरो से संबंधित नई-नई जानकारी प्राप्त करना जैसे आवश्यक कार्य करने आरंभ कर दिए थे ताकि जनवरी 2002 में यूरो मुद्रा के प्रचलन से आने वाली आर्थिक परेशानियों को नकारा जा सके। आशा की जानी चाहिए कि यूरो मुद्रा भारतीय निर्यातकों के लिए एक सुनहरा सपना लेकर आएगी।

अब यह संभव हो सकेगा कि यूरो के प्रचलन से न केवल भारत के एकीकृत व्यापार में भारत के निर्यातों में वृद्धि होगी बल्कि विनियम संबंधी कठिनाइयों पर भी काबू पाया जा सकेगा। अमरीका के बाद यूरोपीय समुदाय दूसरे नम्बर पर आता है जिसके साथ भारत का अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार होता है। रुपये की नई विनिमय दर से भारतीय निर्यातकों के सामने शुरूआती दौर में कठिनाइयां आ सकती हैं लेकिन यूरोप के विशाल बाजार में भारतीय व्यापार की बढ़ती हुई संभावनाओं को देखते हुए इन शुरुआत की कठिनाइयों को नजर अन्दाज कर देना चाहिए।

विश्व पर प्रभाव : समस्त विश्व की अर्थव्यवस्था में अमरीकी डालर व यूरोपियन मुद्रा यूरो के बाद एशियाई मुद्राएं केन्द्र बिन्दु मानी जाएंगी क्योंकि एक जनवरी, 2002 से यूरो को उदय से कम से कम 10 यूरोपियन मुद्राओं का अस्तित्व ही समाप्त हो जाएगा। लन्दन बाजार में यूरो को आज एक करिश्मे के रूप में देखा जा रहा है क्योंकि इस बाजार में आज यह एक महत्वपूर्ण मुद्रा के रूप में उभरकर सामने आई है।

यूरो की सफलता का पैमाना : यूरोप के इन 12 देशों की साझी मुद्रा यूरो के प्रचलन की सुखद कामयाबी के लिए इन सदस्य राष्ट्रों को मौद्रिक व राजकोषीय नियमों का पालन करते हुए अपने अपने देश में वित्तीय अनुशासन स्थापित करना होगा तथा साथ ही साथ घाटे की बजट व्यवस्था तथा मुद्रा स्फीति की दर को भी नियंत्रित स्तर पर रखना होगा। इसके साथ यूरोप के विशाल बाजार में नकली नोटों व सिक्कों के प्रचलन को भी बेअसर करना होगा तभी हम मुद्रा बाजार में यूरो के सफल भविष्य की कामना कर सकते हैं।

यूरो का प्रचलन कितना दमदार : इतनी बड़ी संख्या में किसी मुद्रा का परिवर्तन विश्व में सम्भवतः पहली बार हुआ है। शुरुआती दौर में यूरो के प्रचलन के लिए करीब 15 अरब करेंसी

नोटों व 50 अरब धातू के सिक्कों की आवश्यकता होगी। साथ ही साथ विशाल बाजार में इसके वितरण में किसी भी प्रकार की अनियमितता को रोकने के लिए इन राष्ट्रों के केन्द्रीय बैंक को जहाँ एक तरफ अपनी संग्रहण क्षमता बढ़ानी होगी वहीं दूसरी तरफ इसके वितरण में शांति तथा व्यवस्था बनाए रखने के लिए भारी मात्रा में कानूनी इन्तजाम भी करना होगा।

जहाँ एक तरफ नई मुद्रा यूरो अपनी संग्रहण क्षमता व वितरण की समस्या से जूझ रही है वहीं दूसरी तरफ मुद्रा स्फीति व व्यवसायों के प्रभावित होने की भी पूरी आशंका है। पुरानी मुद्रा के धारकों व व्यवसायियों को अपनी मौजूदा मुद्रा को यूरो में बदलने के लिए मात्र 60 दिनों का ही समय दिया गया है। विशेषज्ञों की राय में 60 दिनों की इस अल्पवधि में उपभोक्ताओं के भ्रमित होने की आशंका है। अतः इस मुद्रा परिवर्तन की न्यूनतम अवधि को तीन महीनों के लिए बढ़ाया जाना चाहिए।

यूरोपीय खुदरा विक्रेताओं के संगठन यूरो कामर्स ने आशंका जताई है कि नई मुद्रा यूरो के प्रचलन से यदि सामान्य लेनदेन में 10 सैकण्ड की भी देरी होती है तो व्यापार में 5 प्रतिशत की गिरावट होगी। ब्रिक्की में गिरावट तथा लेनदेनों में गिरावट व व्यवधान जैसी मुश्किलों के रहते हुए यूरोपीय अर्थजगत के लिए यूरो के प्रचलन को एक ठोस शुरुआत नहीं कहा जा सकता।

विशेषज्ञों ने यह भी अनुमान लगाया है कि एक जनवरी 2002 के पहले ही उपभोक्ताओं की खरीददारी में असाधारण वृद्धि हो जाने से लोग अपनी मुद्रा बाजार बाहर निकालने का प्रयास करेंगे और ऐसी दशा में विक्रेता अपने उत्पादों की कीमत पूर्णकों में तय करके अधिकतम लाभ प्राप्त करना चाहेंगे। इस सारी प्रक्रिया के कारण कीमतों में वृद्धि का अन्देशा भी बना रहेगा। इसके विपरीत कुछ विशेषज्ञों के अनुसार कीमत वृद्धि की आशंका एकदम निर्मूल साबित होगी। उनका तर्क है कि 1970 में जब ब्रिटेन में दशमलव पद्धति अपनाई गई थी तो तब भी मूल्य वृद्धि की आशंका जताई गई थी जो कि बाद बाद में एकदम निर्मूल साबित हुई थी।

यूरो का उदय कितनी लागत पर : यूरो के प्रचलन को लेकर शुरुआती दौर में उपभोक्ताओं, समस्त देशवासियों तथा व्यवसायियों को आरंभिक परेशानियों का समाना करना पड़ सकता है। एक सर्वेक्षण में बताया गया है कि कर्मचारियों को वेतन भुगतान करते समय तथा वस्तुओं का क्रय-विक्रय करते हुए समय विलंब तो होगा ही साथ में अन्य कठिनाईयां भी पैदा हो सकती है। यूरो मुद्रा के प्रचलन पर पूरे विश्व में कितनी लागत आएगी इसका अन्दाज़ा लगाना तो मुश्किल है क्योंकि इसमें तो वह लागत भी शामिल होगी जो नई मुद्रा के विषय में लोगों को जागरूक व शिक्षित किए जाने पर आने वाली है। फिर भी इस बात की संभावना है कि यूरो का जन्म 175 अरब यूरो की अनुमानतः लागत पर तो कम से कम हुआ ही होगा।

पंजाब नेशनल बैंक, एन०आई०टी० फरीदाबाद-121002 (हरियाणा)

विश्व व्यापार संगठन : दोहा का दोहन अधूरा रहा

—वेद प्रकाश अरोड़ा

विश्व व्यापार संगठन के दोहा मंत्रि-सम्मेलन ने यह तथ्य दिन के उजाले की तरह स्पष्ट कर दिया है कि व्यापार जगत मंदी से गुजरने के बावजूद नई करवट ले रहा है। चौथे मंत्रि-सम्मेलन में भारत, ब्राजील और 55 अफ्रीकी देशों ने जिस एकजुटता के साथ तीसरी दुनिया के हितों के लिए आवाज उठाई और इन्हें अंतिम घोषणा में शामिल कराया वह एक युग परिवर्तन की ओर इशारा करता है। इस उभरते सच का ज्वलंत प्रमाण यह है कि विकासशील देश विश्व व्यापार के नियामक की भूमिका निभाने और विश्व व्यापार संगठन को दिशा निर्देश देने में कुछ समर्थ होते जा रहे हैं। सोवियत संघ के विघटन से पहले विश्व पूंजीवादी और साम्यवादी-दो खेमों में बंटा था। तब तीसरी दुनिया के लगभग एक सौ देश विशाल गुट निरपेक्ष आंदोलन से बंधे होने के बावजूद हाशिफ या नैपथ्य से ही अपनी मिमियाती आवाज सुनाने का प्रयास कर पाते थे, लेकिन उनका मिमियाना भी विकसित देशों को कर्णकटु लगता था। पूर्व-यूरोप से साम्यवादी संसार के लोप हो जाने के बाद अंतर्राष्ट्रीय क्षितिज पर उत्पन्न रिक्तता की भरपाई विकासशील देश निरंतर अधिक करते जा रहे हैं। इसकी कुछ झलक संयुक्त राष्ट्र के विभिन्न संगठनों और अन्य अंतर्राष्ट्रीय संस्थाओं के साथ साथ विश्व व्यापार संगठन के दोहा सम्मेलन में भी देखने को मिली। वहां वे अपनी बात खुल कर कहने में ही नहीं चूके बल्कि कुछ पहलुओं पर अपनी बात मनवाने में भी सफल हो गए।

इसमें कोई दो राय नहीं कि अगर इस व्यापार मंत्रि-सम्मेलन में अमरीका, पश्चिमी यूरोप और जापान अपनी सामरिक और आर्थिक शक्ति के घमंड में चढ़े तेवरों और तनी गर्दन के साथ मनमानी या एकतरफा कार्रवाई करने से बाज न आते तो विकासशील देशों की सुगबुगाहट खुले विद्रोह का रूप ले लेती। तब सभी कार्यक्रम और सभी निर्णय सर्वसम्मति से करने के संगठन के उपबंध धरे के धरे रह जाते और सीएटल की विफलता की कहानी दोहराई जाती। इसे भांपते हुए और अफ्रीका, एशिया तथा लेटिन अमरीका के देशों की एकजुटता देखते हुए मजबूत देशों के मजबूत इरादे कमजोर पड़ने लगे और विकासशील देश कई मुद्दों पर अपनी बात मनवाते चले गए। अंतिम क्षणों तक अंतिम घोषणा के कुछ पहलुओं पर उन्होंने अपना जबरदस्त विरोध दर्ज ही नहीं कराया अपनी बात मनवा भी ली। सौदेबाजी में उन्होंने जो रियायतें प्राप्त की, वह अपने में एक इतिहास है जो पिछड़े अल्प और अर्धविकसित देशों के पक्ष में रचा गया और जिससे

घोषणा एक तरफा न रही। उसमें इन देशों की चिंताओं, मांगों और अपेक्षाओं की साफ छाप झलकती है। इस सौदेबाजी और खींचतान के कारण ही सम्मेलन की समयावधि बढ़ानी पड़ी।

सच तो यह है कि शुरु से ही दोहा सम्मेलन सख्त सौदेबाजी और मोलतोल का मंच बना रहा। पहले ऐसा लगा कि यह पहली और तीसरी दुनिया के हितों के बीच टकराव का अखाड़ा बन गया है। लगातार पांच दिन दोनों पक्ष अपनी अपनी जिद पर अड़े रहे। बढ़ाए गए आखिरी दिन हवा का रख बदला नजर आया। टकराव का स्थान सुलह सफाई ने ले लिया और कुछ ले दे के माहौल में पांचवें मंत्रि- सम्मेलन के आयोजन पर सहमति के साथ यह सम्मन्न हो गया। उस समय सबके चेहरों पर मुस्कान लौट आई। सीएटल का भूत गहरा दफना दिया गया और उसकी असफलता की कहानी दोहा में नहीं दोहराई गई। लेकिन यह भी नहीं कहा जा सकता कि दोहा सम्मेलन पूरी तरह सफल रहा। असल में यह सफलता और असफलता की मिश्रित इतिहास बन गया है। यह सफल अधिक और विफल कम या विफल अधिक और सफल कम रहा। इस पर अलग-अलग नजरिए हैं। लेकिन सभी इस दृष्टिकोण से सहमत हैं कि दोहा सम्मेलन सीएटल सम्मेलन की तरह विफलता और निराशा की मनहूस छाया अपने पीछे नहीं छोड़ गया। विश्व व्यापार की पेचीदगियों और टेढ़े मेढ़े मसलों पर बातचीत का क्रम जारी रहना और उसकी पक्की नींव इस सम्मेलन में रखना अपने में बड़ी उपलब्धि है।

नवंबर 1999 में अमरीका के सीएटल शहर में मंत्रि-सम्मेलन इसलिए असफल रहा कि विकसित देश श्रम मानकों और पर्यावरण को कामकाजी एजंडे में शामिल करने की जिद पर अड़े रहे। लेकिन विकासशील देश इन दो मुद्दों का व्यापार वाणिज्य से प्रत्यक्ष संबंध न होने के कारण इन्हें एजंडे से बाहर रखने के पक्षधर थे। दूसरे, पहली दुनिया के देश इन मामलों की आड़ में तीसरी दुनिया के व्यापार विस्तार में अवरोध पैदा कर अपने निर्यात को गति और विस्तार देना चाहते थे। विकासशील देशों के पिछड़ेपन को दूर करने में सहायता देने की बजाए उन्हें और अधिक दबाना चाहते थे। वे अगड़ेपन और पिछड़ेपन की ऊंचनीच वाली जमीन को समतल करने की बजाए विकासशील देश की कमजोरियों और कमियों का लाभ उठा कर अपनी स्वार्थ सिद्धि का चक्र चलाने का प्रयास करते रहे। वे विकासशील देशों को रियायतें देने और उनकी स्थिति सुधारने की बजाए उनसे रियायतें हासिल करने और एकतरफा खेल का मंसूबा बनाते रहे। विकासशील देश यह कैसे बर्दाश्त कर सकते थे कि उन्नत देशों के बाजार उनके तैयार माल के लिए बंद रहें और उनके अपने बाजार समृद्ध देशों की वस्तुओं की बिक्री के लिए खुलते चले जाएं। वे इस दुष्चक्र को तोड़ना चाहते थे। तीसरे संसार के हितों के प्रति बेरुखी और अपने हितों के प्रति उन्नत देशों का अत्यधिक लगाव यह सब कैसे चल सकता था। उन्नत जगत के दिमाग में तो ये कीड़े बराबर पलते रहे कि नए-नए विषय जोड़ कर बड़ा गोरखधंधा रच डाला जाए। वरना पिछले विषयों पर फैसला किए बिना और उन्हें लागू किए बिना, नए मुद्दे शामिल करने

का कोई तुक नहीं था। अगर कोई तुक था तो वह विकसित देशों की अपनी हित साधना। दूसरी तरफ विकासशील देशों को यह गवारा नहीं था कि विकसित देश पुराने और नए मसलों को गडमड कर अपने लिए अधिक से अधिक सुविधा हासिल करें। पहले सिंगापुर सम्मेलन में केवल दो मुद्दों अर्थात् बहुदेशीय पुंजीनिवेश और अंतरराष्ट्रीय प्रतियोगिता नीति पर वार्ता के लिए रजामंदी की बात कही गई थी। बाद में दो और विषय यानी सरकारी खरीद में पारदर्शिता और व्यापार सुविधाओं को भी शामिल करने का आग्रह किया गया। इन चार विषयों को शामिल करने से आर्थिक उपनिवेशवाद मजबूती से स्थापित हो जाता और निर्धन देशों पर समृद्ध देशों की बहुराष्ट्रीय कंपनियों का दबदबा बढ़ जाता। सम्मेलन की घोषणा के मसौदे को अंतिम रूप देने के समय भारत ने उसका यह कह कर विरोध किया कि उसमें विकासशील देशों की चिंताओं पर ध्यान नहीं दिया गया। इसलिए वह व्यापार वार्ता का नया दौर शुरू करने के विरुद्ध है। मलेशिया तंजानिया और यहां तक कि पाकिस्तान ने भी नए मुद्दे शामिल न करने में भारत का साथ दिया। भारत को अन्य विकासशील और अफ्रीका देशों को समर्थन मिलने पर उसे अलग थलग करने की चाल और धमकी पर पानी फिर गया। विकसित देशों का एक पक्षीय खेल सफल नहीं हुआ। भारत का कड़ा रुख रंग लाया, यथास्थिति बनाई रखी गई और पांचवे मंत्रि-सम्मेलन से पहले इन मुद्दों पर आम स्वीकृति की आवश्यकता स्वीकार कर ली गई। यह सहमति न सिर्फ बातचीत शुरू करने के लिए बल्कि उसके तौर तरीके निर्धारित करने के लिए भी जरूरी मानी गई। बात चीत से पहले यह आकलन करना भी आवश्यक ठहरा दिया गया कि इन मुद्दों से देशों के आंतरिक कामों, जिम्मेदारियों और अधिकारों पर क्या असर पड़ेगा। रही बात श्रम मानकों, पर्यावरण और सफाई स्वच्छता की, तो भारत शुरू से इन्हें व्यापार से जोड़ने के एकदम खिलाफ रहा है। आधारभूत श्रम मानकों के विषय में भारत ने पश्चिमी देशों को यह मानने के लिए बाध्य कर दिया कि यह मामला विश्व व्यापार संगठन के एजेंडे की बजाए अंतरराष्ट्रीय श्रम संगठन के कार्य क्षेत्र में आता है और उसे ही इस पर विचार करना चाहिए। जहां तक पर्यावरण का संबंध है भारत बराबर इस बात पर जोर देता रहा था कि विश्व व्यापार संगठन की व्यापार और पर्यावरण समिति को ही निदिष्ट आदेश के अंतर्गत काम जारी रखना चाहिए और सदस्य देशों के स्वास्थ्य, सुरक्षा और पर्यावरण संरक्षण के लिए कदम उठाते समय घोषणा में कोई ऐसी बात या बयान नहीं होना चाहिए जो एकतरफावाद को बढ़ावा दे, नियमों में उपलब्ध संरक्षणों को कमजोर कर दे या फिर अनिश्चय की स्थिति पैदा कर दे। दूसरी तरफ पर्यावरण के मुद्दे पर यूरोपीय संघ का रवैया अधिक अड़ियल था। कुछ यूरोपीय देशों के लिए यह अधिकारों और जिम्मेदारियों के बीच संतुलन का मामला ही नहीं था, वे इसे अत्यंत राजनीतिक महत्व का मामला मानते थे। वहां ग्रीन पार्टियों का काफी जोर है। उन्होंने अन्य राजनीतिक दलों से और आपस में गठजोर कर अपनी ताकत और बढ़ा ली है। भारत ने कृषि क्षेत्र में अधिक पाने के लिए पर्यावरण के मामलों में पीछे हटना श्रेयस्कर समझा। भारत की इस उदारता, तत्कालीन परिस्थितियों, व्यापार संगठन के

प्रावधानों और पर्यावरण की आड़ में संरक्षणवाद को बढ़ावा न देने के उपाय करने के आश्वासन के कारण अंतिम दिन गतिरोध दूर हो गया।

यहां इस बात की अनदेखी नहीं की जा सकती कि विकाशील देशों के खाद्यान्न सुरक्षा और ग्रामीण विकास के मुद्दों पर संगठन की भावी कृषि नीति में खास ध्यान देने की भारत की मांग स्वीकार कर ली गई। इसके अलावा कृषि क्षेत्र से जुड़े कई अन्य मुद्दों पर सम्मेलन के लचीला रुख अपनाने से यह संभावना और आशा व्यक्त की जा रही है कि भारतीय किसान विश्व बाजार की प्रतियोगिता में टिक सकेगा। कृषि आज भी भारतीय अर्थव्यवस्था की रीढ़ है। इसलिए सरकार को देखना होगा कि कृषि उत्पादों के सस्ते आयात से हमारी ग्रामीण अर्थव्यवस्था चौपट न हो जाए। इसीलिए जैव विविधता, पारंपरागत और यहां तक कि लोक गाथाओं की रक्षा को व्यापारपरक बौद्धिक संपदा अधिकारों-ट्रिप्स-की समीक्षा में शामिल कर लिया गया है। इसके अलावा दार्जिलिंग चाय और बासमती चावल जैसे भारतीय उत्पादों की भौगोलिकता के आधार पर रक्षा की काफी गुंजाइश है। यूरोपीय संघ द्वारा कृषि उत्पादों पर सब्सिडी को क्रमिक रूप से हटाना और शुल्कों में कमी करना विकासशील देशों की एक अन्य विजय कही जा सकती है। इस निर्णय से भारतीय किसानों को यह लाभ होगा कि अंतर्राष्ट्रीय बाजारों में उनकी पैदावार अधिक स्पर्धात्मक बन जाएगी। भारतीय कृषि उत्पादों की बिक्री में जबरदस्त उछाल आएगा और हमारा डालर भंडार अधिक भर जाएगा। विकासशील देशों को एक बड़ी सफलता यह भी मिली कि प्राकृतिक आपदा महामारी या स्वास्थ्य के लिए किसी संकट के दौरान पेटेंट नियमों में ढील दी जाएगी जिससे गरीब देश सस्ते मूल्य पर आसानी से दवाएं खरीद सकें। सार्वजनिक स्वास्थ्य को पेटेंट से अधिक महत्व और प्राथमिकता देने के फैसले से विकासशील देशों को लाभ ही लाभ होगा। व्यापार परक बौद्धिक संपदा अधिकारों-ट्रिप्स और सार्वजनिक स्वास्थ्य संबंधी घोषणा के अनुसार देश अपने प्रभुता संपन्न अधिकारों के अंतर्गत अनिवार्य लाइसेंस जारी कर सकते हैं और सार्वजनिक स्वास्थ्य की समस्याओं के समाधान के लिए प्रशासनिक व्यवस्था द्वारा समानांतर आयात कर सकते हैं। जानलेवा बीमारियों से जूझने के लिए जन-जन को सस्ती दवाएं दिलाने के निर्णय में आसामा बिन लादेन के अलकायदा संगठन के सिरफिरे फिदायीन और मुजाहिदीन द्वारा लोगों को मारने के लिए डाक वगैरा से भेजे एंथ्रेक्स पाउडर से फैले रोगों की दहशत ने एकाधिकारवादी पेटेंटों के नियमों को ढीला करने में अपने ढंग से महत्वपूर्ण योगदान किया।

संक्षेप में कह सकते हैं कि विश्व व्यापार संगठन के समझौतों में विकासशील देशों के प्रति नरम रवैया अपनाने हुए विशेष और अलग प्रावधानों को प्रमुखता दी गई। दूसरे, विश्व व्यापार संगठन के मंत्रि-सम्मेलन द्वारा पांचवें मंत्रि-सम्मेलन के आयोजन का फैसला करना, उस की दिशा, चाल और एक तरह से उसके एजेंडे को निर्धारित करना दोहा-सम्मेलन की सार्थकता का प्रमाण है। व्यापार की दृष्टि से विश्व के दो शिविरों में बंटा होने और उसके हितों में टकराव होने

के कारण सम्मेलन विवाद-स्थल बन कर ठहर सा गया था, उसे जड़ अवस्था से उबार कर गतिशील बनाना, कोई कम महत्व की बात नहीं। जिद को तोड़ना और लंबी चलने वाली वार्ता प्रक्रिया में ब्रेक न लगाना अपने में उपलब्धि थी। जब देशों के दो खेमें ताल ठोक कर आमने सामने भिड़ंत की मानसिकता लिए हो, उन्हें बातचीत की राह पर अग्रसर करना कोई छोटी बात नहीं। तीसरे मंत्रि-सम्मेलन में विकासशील देशों की मरियल आवाज तकों के साथ-साथ गर्जन-तर्जन में बदली हुई थी। इससे विकसित देशों के ऊंचे तीखे तेवर ढीले पड़ने लगे और आखिर में उन्होंने थोसधमकी की पुरानी परिपाटी का परित्याग कर गरीब दुनिया के दुखदर्दों को सुना, समझा, सराहा और उन्हें कम करने में सहयोग का हाथ बढ़ाया। संगठन का रुख पहले की अपेक्षा विकासशील देशों की तरफ अधिक और साफ झुकता दिखाई दिया। अमरीका और यूरोपीय संघ विकासशील देशों द्वारा उठाए गए 93 मुद्दों में सं 41 का हल निकालने पर राजी हो गए। कुछ महत्वपूर्ण क्रियाचयन मुद्दे निपटा दिए गए और शेष को विश्व व्यापार संगठन की कार्य योजना का अभिन्न अंग बना दिया गया। अमरीका और यूरोपीय संघ इस बात पर भी सहमत हो गए कि नई व्यापार वार्ता के एजेंडे से अप्रसन्न भारत और अन्य विकासशील देशों की चिंताओं को अलग घोषणा में शामिल किया जाएगा। चौथे, भारत की भूमिका इस बार फिसड्डी की नहीं दमदार अगुआ, कुशल संगठनकर्ता और जबरदस्त खिलाड़ी के रूप में उभरी। खिलाड़ी भी ऐसा जो सभी विकासशील देशों को साथ लेकर चला, बढ़ा और कुछ मसलों को हल करने के उपाय करने में सफल रहा।

सम्मेलन की उपलब्धि को इस लिहाज से भी नकारा नहीं जा सकता कि उसके दायरे में विश्व की सबसे बड़ी जनसंख्या वाला देश चीन और उससे अलग हुआ देश फारमूसा भी शामिल हो गया। इस तरह इस संगठन के सदस्य देशों की संख्या स्थापना के समय के 17 देशों से बढ़कर 44 हो गई है। इस सबको देखते हुए कह सकते हैं कि नए-नए क्षेत्रों में भारत और अन्य विकासशील देशों की चिंताओं को ध्यान में रखकर जो फैसले किए गए, उनकी वजह से दोहा मंत्रि-सम्मेलन, सिंगापुर सम्मेलन की तुलना में कहीं अधिक सफल रहा।

इस कुछ उज्ज्वल पक्ष के बावजूद हम इस सच को भी नजरअंदाज नहीं कर सकते कि दोहा सम्मेलन औद्योगिक शुल्कों, डंपिंग विरोधी करो, पर्यावरण विषयों और कृषि तथा सेवाओं से जुड़े कुछ महत्वपूर्ण पहलुओं का समाधान नहीं कर सका। दोहा सम्मेलन में भारत की मुख्य चिंता क्रियान्वयन और संगठन के मौजूदा समझौतों में निहित असंतुलनों और विषमताओं को दूर करने के संबंध में थी जो अब भी बरकरार है। दोहा सम्मेलन के सामने लाए गए 93 मुद्दों में से 41 मुद्दों का ही कुछ हल निकल पाया है। ये मुद्दे कब और कैसे लागू होंगे-यह सब कुछ अनिश्चय के भवर में है। बाकी मुद्दों पर 2002 के अंत में होने वाला सम्मेलन क्या रुख अपनाएगा और क्या निर्णय करेगा-यह सब कुछ भी अधर मे लटका है। इनसे गरीब देशों की चिंताओं का कब और कितना निवारण होगा और होगा भी या नहीं यह सब कुछ भी आने वाले

कल के गर्भ में छिपा है। विशेष रूप से कपड़ा कोटा को जल्द हटाने के लिए भारत के आग्रह पर समुचित ध्यान नहीं दिया गया। इस सम्मेलन से जहां विश्व में मुक्त व्यापार के दरवाजे पर दरवाजे खुलते जा रहे हैं और उसका निरंतर विकास होता जा ही रहा है, वहां चीन के व्यापार संगठन में शामिल होने से अब भारत के सामने होड़ लेने की नई चुनौती और नए अवसर पैदा हुए हैं। भारतीय सामान की न सिर्फ गुणवत्ता बढ़ानी होगी तथा विश्व के बाजारों में देर तक पैठ बनाने के लिए उसे सस्ता और पायदार बनाना होगा बल्कि निर्यात आर्डर तेजी से और समय पर पूरा करने में प्रबंधकीय कौशल भी बढ़ाना होगा। केंद्र और राज्यों तथा मजदूरों और मालिकों के संबंधों को सही पटरी पर लाने के लिए एक नए युग की शुरुआत भी करनी पड़ेगी।

268 सत्य निकेतन, मोती बाग, नई दिल्ली-21

पिरामिडों की दिव्य विशेषताएं—नई शोध

—डा. वासुदेव प्रसाद यादव

मिश्र को पिरामिडों का देश कहा जाता है और ये संसार के सात आश्चर्यों में से हैं। ये पिरामिड अपने भीतर एक से एक अनगिनत रहस्य छिपाए हुए हैं। मिश्र की गिनती दुनिया के प्राचीनतम देशों में से है। वहां की संस्कृति अति प्राचीन नदी घाटी की सभ्यता के अंतर्गत मानी जाती है। मिश्र की प्राचीन सभ्यता और संस्कृति के अब केवल अवशेष ही बचे हैं। इन अवशेषों से ज्ञात होता है कि मिश्र में आज से चार-पांच हजार वर्ष पूर्व एक उन्नत सभ्यता निवास करती थी, जो वैज्ञानिक प्रगति में आज से पीछे नहीं थी। उन्नत विज्ञान के सर्वश्रेष्ठ उदाहरण मिश्र के पिरामिड हैं। मिश्र में छोटे-बड़े आकार के सैंकड़ों पिरामिड हैं जिनके कारण मिश्र को पिरामिडों का देश कहा जाता है।

अभी हाल में मिश्र में कुछ नए पिरामिडों एवं ममियों की खोज हुई है। इससे साथ ही, पिरामिडों पर अन्वेषण की बाढ़ सी आ गई और अब सभी पिरामिडों पर नए सिरे से अनुसंधान होने लगे हैं। इस कार्य में पुरातत्ववेत्ताओं के अतिरिक्त भौतिक विज्ञान, गणित, रसायन शास्त्र, चिकित्सा विज्ञान एवं विज्ञान के अन्य विविध क्षेत्रों के वैज्ञानिक भी इस कार्य में अन्वेषणरत हो गए हैं। इन शोधों की प्रगति एवं परिणामों को जानने के लिए सारा बुद्धिजीवी जगत उत्सुक है।

★ आज से लगभग 4250 से 4800 वर्ष पूर्व इन पिरामिडों का निर्माण हुआ था। मिश्र की राजधानी काहिरा से 10 किलोमीटर की दूरी पर स्थित ये पिरामिड बड़े ही विशालकाय हैं। इनमें से कुछ पर्वताकार, कुछ स्पूताकार तथा कुछ झुके हुए हैं। इनमें सबसे बड़ा है गीजा का महान पिरामिड। यह राजा (फराओं) की कब्र पर बना हुआ है। यह महान पिरामिड 450 फुट ऊंचा है तथा 13 एकड़ भूमि में बना हुआ है।

इनके निर्माण में उपयोग किए गए अधिकांश पत्थर 12 फीट से भी अधिक ऊंचे हैं। पत्थरों की सतह भी लम्बाई और चौड़ाई में 15-15 फीट से अधिक हैं अर्थात् समयाकृति वाले पत्थरों का क्षेत्रफल 225 वर्गफुट से भी अधिक है। ये पत्थर किस प्रकार इतनी ऊंचाई तक चढ़ाए गए यह समझ पाना बहुत ही कठिन है। आश्चर्य तो यह है कि इनकी बनावट के बीच तथा जमाए गए पत्थरों के बीच एक बाल की मोटाई के बराबर भी जगह नहीं है। पिरामिडों की कलात्मकता का अनुमान लगाना भी कठिन है। इन्हीं कारणों से पिरामिडों को विश्व का प्रथम आश्चर्य माना गया है।

मिस्र एक रेगिस्तानी क्षेत्र है और वहां पानी मिलना बहुत कठिन है। फिर भी इतने बड़े-बड़े निर्माण-कार्यों के लिए पानी का प्रबन्ध करना टेढ़ी खीर है। यदि जल का प्रबन्ध किया भी जाता, तो 1300 एकड़ का तालाब बनाया जाता जिसमें पानी इकहठा होता। परन्तु, ऐसे कोई अवशेष नहीं हैं जिनसे ज्ञात हो कि पिरामिडों के निर्माण में जल का उपयोग भी किया गया होगा। इन पिरामिडों की रचना बहुत ही जटिल है। यह कह पाना कठिन है कि इनके निर्माण में कितने अनुभवी और प्रशिक्षित शिल्पियों का योगदान रहा होगा।

रहस्यमय ध्वनियां

पिरामिड रहस्यों और अजूबों की खान हैं। इन पिरामिडों के बाहर कभी-कभी चीखने, चिल्लाने तथा पत्थरों को काटने की आवाजें सुनाई पड़ती हैं। इन ध्वनियों की व्याख्या की गई है। इस व्याख्या के अनुसार इन पिरामिडों की निर्माणधीन अवस्था में इनमें ये ध्वनियां पर्त-दर-पर्त ग्रामोफोन टेप की तरह टेप होती गई : जो अब वायु-घर्षण के फलस्वरूप सुनाई देती हैं।

विशेषज्ञों ने इन पिरामिडों के रहस्यों पर प्रकाश डालते हुए सिद्ध किया है कि इन स्मारकों में उस समय विभिन्न कलाओं, गणित और जयामितीय अन्वेषणों का प्रतिचित्रण किया गया है। पिरामिडों में नक्षत्र विज्ञान सम्बन्धी अनेक घटनाओं के विवरण भी प्रतिचित्रित हैं।

भविष्यवाणियां

ये पिरामिड पृथ्वी के एक गोलाई के ठीक मध्य में स्थित हैं। इससे स्पष्ट होता है कि इन स्मारकों के निर्माणकर्ताओं को उत्तरी तथा दक्षिणी ध्रुवों का स्टीक ज्ञान था। पिरामिडों पर भविष्यवाणियां संकेतात्मक भाषा में प्रतिचित्रित हैं। ये भविष्यवाणियां ध्रुव तारे को आधार मानकर की गई हैं। विद्वानों का मत है कि इन पिरामिडों का निर्माण किसी धार्मिक कार्यवश नहीं किया गया, बल्कि भविष्य में भविष्य के लोगों को भविष्य के बारे में संकेत देने के लिए किया गया।

विख्यात पिरामिड रहस्यकार सर डेविडसन ने सन् 1924 में मापन इकाई द्वारा पिरामिडों पर अंकित भविष्यवाणियों को पढ़ने में सफलता प्राप्त की। कहा जाता है कि यदि पिरामिडों पर अंकित भविष्यवाणियों का संकलन किया जाए तो एक विशालकाय ग्रंथ तैयार हो जाएगा। सर डेविडसन ने भविष्यवाणियों को हीथरोग्राफी नाम दिया।

यदि पिरामिडों पर अंकित भविष्यवाणियों के संकेतों के बारे में कुछ पता चला, तो हम भविष्य की घटनाओं तथा नक्षत्र-ज्ञान के बारे में कुछ जानकारी पाने में सक्षम हो जाएंगे।

सभी लोग ऊंटों पर सवारी नहीं करेंगे, हवा से भी तेज आकाश पर चलेंगे, मौसम पर नियंत्रण रखेंगे, स्वर्ग सदृश सुख और ऐशो-आराम प्राप्त कर सकेंगे, आदि भविष्यवाणियां पिरामिडों पर अंकित हैं।

इन तथ्यों से सिद्ध होता है कि इन पिरामिडों का निर्माण उस समय हुआ होगा जब मिस्र की सभ्यता, वास्तुकला तथा चित्रकला चरम सीमा पर थी।

पिरामिडों की खुदाई करके उन पर शोध करने का साहस कोई नहीं करता है, क्योंकि 1924 में पुरातत्व विशेषज्ञों की उस टीम का, जो खुदाई करके पिरामिडों पर शोध करना चाहती थी, कोई पता नहीं चला।

पिरामिड एक अनबूझ पहेली है, जिन्हें अब तक पूरी तरह बूझने में हम सक्षम नहीं हो सके हैं। जब तक रहस्यों के खजाने से भरे पिरामिड आज के वैज्ञानिक युग को चुनौती देते हुए गर्व से सिर उठाए खड़े हैं।

ममी ऐसे होती थी सुरक्षित

'ममी' शब्द की उत्पत्ति अरबी भाषा के ममियाह (mummiyah) शब्द से हुई है, जिसका अर्थ होता है मोम या टार (tar) द्वारा शरीर को सुरक्षित रखना। प्राचीन मिस्र में ममियों को सुरक्षित रखना एक अत्यन्त लोकप्रिय काम था। मिस्र के लोगों का विश्वास था कि मृत्यु के बाद एक दूसरा जीवन शुरू होता है। इसी धारणा के कारण वे मृतक शरीर को दूसरे जीवन के लिए तैयार करते थे। उनका विचार था कि मानव की आत्मा एक चिड़िया की तरह होती है, जिसका चेहरा आदमी से मिलता-जुलता है। चिड़िया की भांति यह आत्मा दिन में कहीं भी उड़कर भ्रमण कर सकती है लेकिन रात्रि में दुरात्माओं के भय से मृतक शरीर में वापस आ जाती है। इस विश्वास के आधार पर ही वे मृतक शरीर पर ऐसे रसायनों का लेप करते थे, जिससे वह खराब न हो, सुरक्षित रह सके, आत्मा अपने शरीर को पहचान सके और लौटकर उसमें वापस आ सके।

ईसा से लगभग साढ़े तीन हजार वर्ष पूर्व मिस्र के लोग रेगिस्तान की गर्म बालू में मृतक शरीरों को किसी चीज में लपेटकर सीधा दफनाते थे। बालू मृतक शरीर को सुरक्षित रखने का काम करती थी। इसके बाद यह विधि बदल गई और महत्वपूर्ण व्यक्तियों को चट्टानों से काटकर बनाए गए गुम्बजों में दफनाया जाने लगा। ये पिरामिड और चट्टानों से बने गुम्बज बालू की भांति सूखे नहीं होते थे। अतः, नमी के कारण मृतक शरीर शीघ्र ही खराब हो जाता था। मृतक शरीर को खराब होने से बचाने के लिए मिस्रवासियों ने अन्य उन्नत विधियों का विकास किया। धीरे-धीरे यह विधि विकसित और प्रसिद्ध हो गई।

मृतक शरीरों को सुरक्षित रखने की विधियां समय-समय पर बदलती रही हैं। एक समय था जब कोई व्यक्ति मरता था, तो उसके मस्तक, पाचन-तंत्र और फेफड़ों जैसे भीतरी अंगों को शरीर से अलग निकालकर, अलग-अलग जारों में रख दिया जाता था। जारों में विशिष्ट रसायनों के घोल होते थे। बाद में उन्हें शरीर में यथास्थान लगा दिया जाता था। इसके बाद मृतक शरीर पर कुछ विशेष लवणों का लेप किया जाता था और कुछ लवण शरीर के अंदर रख दिए जाते थे।

के पश्चात् मृतक शरीर को गर्म बालू पर रखा जाता था, जिससे शरीर के भीतर की नमी समाप्त जाती थी। जब मृतक शरीर सूख जाता था, तो उसे नहलाया जाता था और चीड़ के पेड़ से रेसिन से रगड़ा जाता था। अंत में, मृतक शरीर को सैकड़ों मीटर लम्बे लिनेन (linen) के टुकड़ों में लपेट दिया जाता था। इस समस्त कार्य में लगभग 70 दिन लगते थे।

इस दौरान, सुरक्षित किए गए मृतक शरीर के लिए, बड़ई ताबूत बनाता था। यदि भरने वाला केत धनी और महत्वपूर्ण होता था, तो उसके मृतक शरीर के लिए कई ताबूत बनाए जाते थे। ताबूतों का आकार ऐसा होता था, जिससे कि वे एक के अन्दर एक फिट किया जा सकता था। [त के अंदर मृतक शरीर को रखकर उस पर कलाकार चमकीले रंगों से चित्रकारी करते थे। 3 गुम्बज में मृतक शरीर को दफनाना होता था, उसकी दीवारों पर भी चित्रकारी की जाती थी। मरने वाले की जीवन-गाथा उस पर लिखी जाती थी। पुनः उन सभी चीजों को एकत्रित या जाता था, जिन्हें वह व्यक्ति अपने जीवन-काल में अपनी सुख-सुविधा के लिए प्रयोग में आ था, जिससे कि मरने के बाद भी उसका जीवन सुखमय रहे। इन सभी वस्तुओं को मृतक साथ गुम्बज में रख दिया जाता था। इस प्रकार मिस्र के लोग सोचते थे कि उन्होंने मृतक को ले जन्म के लिए तैयार कर दिया है।

मिडों का उद्देश्य

अरब के विद्वान दावा कर चुके हैं कि प्राचीन मिस्र का सारा ज्ञान इन पिरामिडों की दीवारों खुदा हुआ है। इस भाषा को हीअरोग्राफी (Heirography) कहते हैं, जिसे अभी तक पूरी पढ़ा नहीं जा सका है। गीजा (Giza) के तीन पिरामिडों के बारे में यह समझा जाता रहा है वे अन्न के विशालकाय भंडारों के रूप में बनाए गए थे जिससे कि अकाल के समय खाद्य आपूर्ति सुचारू रह सके। स्मरणीय है कि पिरामिड के आकार में बने किसी भी भवन में चीजें 3 समय तक खराब नहीं होती हैं।

यूरोपीय विद्वानों ने इन दैत्याकार पिरामिडों का अध्ययन 19 वीं सदी के प्रारंभ में किया। 1 के निवासी अपने राजा को मनुष्य और देवता का मिला-जुला रूप मानते थे। अतः, अपने 1 के शरीर को सुरक्षित रखना उनके लिए अनिवार्य था। लेखकों ने इन पिरामिडों के निर्माण पीछे काम करने वाले चिन्तन की व्याख्या करते हुए कहा है कि ये पिरामिड मिस्र के सिसियों के जीवन की अमरता को सिद्ध करने के लिए बनवाए गए थे।

पिरामिडों की आकृति बताती है कि उनके निर्माता निश्चित रूप से सूर्य की साधना करते 1. मिस्रवासी बाज के सिर की आकृति वाले 'रा (Ra)' नामक सूर्य के प्रतीक एक देवता 1 मुजारी थे। 'पिरामिडों' की आकृति बिलकुल ऐसी है मानो सूर्य से पृथ्वी पर किरणें गिर रही 1

पिरामिडों का निर्माण

पिरामिडों का निर्माण 2686—2181 ईसा पूर्व में प्रारंभ होकर अपने स्वर्ण-काल पहुंचा। पहला पिरामिड तीसरे वंश के राजा (2606-2613 ई. पू.) जोसर (Zoser) के यु बनवाया गया, जो 'स्टेप पिरामिड' (step-pyramid) के नाम से जाना जाता है। इस पिरामिड के निर्माण का श्रेय जाता है राजा के प्रधानमंत्री इम्होटेप (Imhotep) को, जो वास्तुकला अन्वय कलाओं का महान आचार्य था। पिरामिड पर इम्होटेप का नाम खुदा हुआ है। इन पिरामिडों में न केवल जोसर के अवशेष रखे गए हैं, बल्कि उसके परिवार के सदस्यों के अवशेष भी गए हैं। इस पिरामिड के भीतर कमरे और गलियारे भी बने हुए हैं। इसमें सुरक्षा के भारी प्र होने के बावजूद पिछली कई शताब्दियों से हुई लूट-मार ने इस पिरामिड की बहुमूल्य वस्तु की संख्या नगण्य कर दी है।

इसके बाद चौथे वंश (2613-2494 ई.पू.) के राजा सोनेफेरु (Soneferu) ने पिरामिड बनवाए। मैदुम (Maidum) में बनाया गया पहला पिरामिड फाल्स पिरामिड (False pyramid) के नाम से जाना जाता है। संरचना में कुछ गड़बड़ी होने के कारण उसका बाघेरा ढह गया है। आजकल यह पिरामिड अपने ही मलबे के ढेर पर गर्व से सीना ताने खड़ा

दाहशुर (Dahshur) में सेनेफेरु ने दूसरा पिरामिड बनवाया जिसका नाम बेन्ट पिरामिड (Bent pyramid) है। यह एक ऐसे आधार पर बना हुआ है, जहां से इसकी दीवारें 54° उठी हुई हैं और फिर अचानक 42° पर झुक जाती हैं। 320 फुट ऊंचे इस पिरामिड पर चूने पत्थर की परत चढ़ाई गई है। बेन्ट पिरामिड से थोड़ी ही दूरी पर सेनेफेरु का तीसरा पिरामिड मौजूद है।

सेनेफेरु के उत्तराधिकारी चिआप्स (Cheops) (2545-2520 ई. पू.) ने काहिरा कुछ किलोमीटर की दूरी पर 756 वर्गफुट के आधार पर 13 एकड़ भूमि पर इतना शान पिरामिड बनवाया कि उसकी दीवारों की लम्बाई में केवल 7.3 इंच का अन्तर है और उस अवनमन कोण 50/52° है। इस भीमाकार इमारत को देखकर लगता है कि यह न केवल राउ मकबरा है, बल्कि सूर्य-घड़ी (Sundial), कैलेण्डर तथा खगोलीय वेधशाला भी है। पिरामिड को बनाने में 20 वर्ष लगे तथा इसके चारों ओर सड़क बनवाने में 10 वर्ष और लगे। पिरामिड 50 मंजिली गगनचुम्बी इमारतों से काफी ऊंचा है। यह इतना विशाल है कि दिल्ली सभी बड़ी इमारतों सरलता से इसमें समा सकती है। शुरु में इसकी ऊंचाई 481 फीट थी, कि कहा जाता है कि पृथ्वी के धंसने से यह घटकर 458 फीट रह गई है। यह पिरामिड लगभग लाख ग्रेनाइट के पत्थरों से बना हुआ है। इनमें से प्रत्येक पत्थर का भार 30 टन से लेकर 90 तक है।

इस पिरामिड और उसके निर्माता के बारे में इतने विचार प्रस्तुत किए जा चुके हैं कि उनसे ग्रंथ के ग्रंथ लिखे जा सकते हैं। विख्यात खगोल वैज्ञानिक चार्ल्स स्मिथ का विचार था कि यह पिरामिड देवताओं के मार्गदर्शन में बनाया गया तथा इस पिरामिड से पाई (II) का सही मान, पृथ्वी, का द्रव्यमान और परिधि तथा सूर्य और पृथ्वी के बीच की दूरी सही-सही ज्ञात की जा सकती है। कुछ अन्य विद्वानों ने पिरामिड के गहन अध्ययन में वर्ष के 365 दिनों का रहस्य खोजा है, तो किसी ने इतिहास की विभिन्न तारीखों की भविष्यवाणी को पिरामिड के स्थापत्य में देखने का प्रयास किया है।

सन् 1954 में इस पिरामिड में एक ऐसा बन्द गड्ढा खोजा गया, जिसमें 140 फुट लम्बी और 16 फुट चौड़ी नाव निकली। अनुमान है कि यह नाव एक सौर नाव (Solar boat) थी, जिसमें बैठकर राजा और उसके परिवार के लोगों ने अमरत्व की ओर यात्रा की होगी।

गीजा का दूसरा पिरामिड चिफ्रेन (Chephren) के पिरामिड के नाम से जाना जाता है। यह 471 फुट ऊंचा है। इसी के पास चिफ्रेन के अंतिम संस्कार का मंदिर तथा उसकी रक्षक स्फिंक्स (Sphinx) की मूर्ति बनी हुई है। गीजा का तीसरा पिरामिड मायसीरिनस (Mycerinus) एक छोटा पिरामिड है।

पिरामिड का गणितीय आधार

गीजा के प्रत्येक पिरामिड की प्रत्येक दीवार का क्षेत्रफल उसकी लम्बवत् ऊंचाई के वर्ग के बराबर है। यह आयाम $51' - 51^\circ$ का कोण रखने पर ही मिल सकता है। पिरामिड के अवरोह मार्ग का कोण $26' - 17^\circ$ है। स्मिथ के अनुसार इस अवरोह मार्ग को जान-बूझकर ध्रुव तारे की सीध में रखा गया है। इस मार्ग से कोई भी दो बिन्दु ध्रुव तारे के ठीक सीध में एक सरल रेखा बनाते हैं। खगोल वैज्ञानिक हर्शल के अनुसार जब ये पिरामिड बने थे, उस समय अल्फा ड्रेकोनिस नामक तारा, ध्रुव तारा था, लेकिन आजकल पोलरिस नामक तारा ध्रुवतारा है। पृथ्वी की धुरी 25000 वर्ष में 45° का कोण बनाती है। इसी कारण ध्रुवतारा बदलता है।

पिरामिड में एक और विशेषता दिखाई दी कि पिरामिड के आधार में ऊंचाई से भाग देने पर भागफल पूर्ण इकाई नहीं आती है और वह लगभग 3.14285 रहता है। सभी पिरामिडों के साथ यही स्थिति रहती है। यह पाई (II) के मान के बराबर होती है। वैज्ञानिकों का निष्कर्ष है कि पिरामिड में एक टन से लेकर 70 टन तक के पत्थरों को इतनी ऊंचाई पर ले जाकर उन्हें ठीक-ठीक कोण पर असीम दक्षता से व्यवस्थित करना आज के क्रेनों और इंजीनियरों के वश की बात नहीं है।

कालातीत कौशल

प्रश्न यह है कि उस युग में पहिए का आविष्कार नहीं हुआ था, फिर इतने बड़े-बड़े पिरामिड उस युग में कैसे बन पाये होंगे? उदाहरण के लिये, चिओप के पिरामिड में 2,300,000 पत्थर के बड़े-बड़े शिलाखंड लगे हुए हैं, जिनका वजन 6,500,000,000 टन है।

नेपोलियन ने जब मिस्र पर आक्रमण किया था, तो इन पिरामिडों को देखकर उसने अनुमान लगाया था कि इन पिरामिडों में लगे सामान से पूरे फ्रांस के चारों ओर 10 फुट ऊंची और तीन फुट चौड़ी दीवार बनाई जा सकती है।

अनुमान है कि पिरामिड के निर्माण में मिस्रवासियों ने स्पिरिट लेवेल का उपयोग किया था। पिरामिड वर्गाकार बने हुये हैं। इससे स्पष्ट है कि उस युग के वास्तुकारों को ज्यामिति का गहन ज्ञान अवश्य था, लेकिन अभी तक यह पता नहीं चल पाया है कि पिरामिडों को इतने सही कोण पर खड़ा करने में वे कैसे सफल हुए। 15-15 टन वजन के पत्थरों को खानों से निकालकर तथा बेड़ों पर रखकर नील नदी में तैरा दिया जाता था। वर्षों तक हजारों श्रमिक और कारीगर गीजा में पिरामिडों के निर्माण में लगे रहे और उन्होंने इतनी कुशलता से काम किया कि उनकी दीवारों की जोड़ में एक बाल तक के घुसने की जगह नहीं है। इसी कारण कुछ विद्वानों को सन्देह होता है कि वे संभवतः किसी अन्य ग्रह से आई विकसित सभ्यता द्वारा लेसर जैसी किरणों से काटे गए थे।

पुरातत्वशास्त्रियों में आज भी इस विषय पर व्यापक मतभेद है कि बिना किसी यांत्रिक सहायता के इन भारी-भारी पत्थरों को इतनी ऊंचाई पर कैसे चढ़ाया गया! अब तक जो सिद्धान्त प्रस्तुत किया गया है, उसके अनुसार इन पत्थरों को ढालों (Ramps) के निर्माण द्वारा ऊपर चढ़ाया गया होगा, जो सर्पिलाकार सीढ़ियों की तरह बनाए गये होंगे। इन्हीं कारणों से कुछ लोग यह अनुमान भी लगाते हैं कि संभवतः वे लोग किसी प्रकार, गुरुत्व बल का निषेध करके पत्थरों को भारहीन कर लेते थे, परन्तु आज के विज्ञान के लिए ऐसा कर पाना संभव नहीं है।

पिरामिड में ऊर्जा कहां से आती है? ऊर्जा का स्रोत क्या है? ऊर्जा-तरंगों के स्रोत का पता लगाने के लिए काफी प्रयत्न किए गए, लेकिन किसी ठोस निष्कर्ष पर पहुंच पाना संभव नहीं हुआ है। अभी तक यह देखा गया है कि सभी पिरामिड ठीक उत्तर और दक्षिण दिशा में ही बनाये गये हैं। यह कोई संयोग नहीं है। पिरामिड बनाने में कोई मामूली-सी गलती भी नहीं हुई है। हम जानते हैं कि उत्तर-दक्षिण पृथ्वी का चुम्बकीय याग्योत्तर (magnetic meridian) है। चुम्बकीय शक्ति और विद्युत तरंगों में सीधा संबंध है। तो क्या चुम्बकीय याग्योत्तर की सही-सही दिशा में बनी ये इमारतें किसी विशेष उपाय से अपने भीतर चुम्बकीय ऊर्जा संचित करने और उसमें आने वालों को प्रभावित करने की क्षमता रखती हैं? विशेषज्ञों का निष्कर्ष है कि पिरामिड

में लगाए गए ग्रेनाइट पत्थर कुछ विशेष प्रकार के तत्वों से बने हैं जो 'स्टोरेज बैटरी' का गुण रखते हैं अर्थात् विद्युत-चुम्बकीय तरंगों को संचित रखने में समर्थ होते हैं।

अद्भुत संरचना विलक्षण शक्ति

पिरामिड की विस्मयकारी संरचना के कारण उसमें अलौकिक प्रकार की ऊर्जा उत्पन्न हो जाती है जिसका, जड़ और चेतन, दोनों पर असाधारण प्रभाव पड़ता है। इस पर अनेक परीक्षण किए गए और आज भी किए जा रहे हैं। कुछ उदाहरण देखिए—

(a) सन् 1930 में ब्रिटिश वैज्ञानिक रोजर पेनरोज पिरामिड की धरती पर सैर करने पहुंचे। जब वह गीजा का प्रसिद्ध पिरामिड देखने पहुंचे, तो पिरामिड के भीतर कचरे के ढेर में एक मरी बिल्ली को देखकर उन्हें आश्चर्य हुआ कि बिल्ली का शव पूर्णता: सुरक्षित था, वह जरा भी सड़ा नहीं था, और न विकृत हुआ था और न उससे दुर्गन्ध आ रही थी। घर आकर पेनरोज ने पिरामिड के आकार का मॉडल तैयार किया और उसमें मरी हुई बिल्ली को रख दिया। उन्हें यह देखकर आश्चर्य हुआ कि बिल्ली का शव, ममी में बदल चुका था। इस महत्वपूर्ण परीक्षण से वह इस निष्कर्ष पर पहुंचे कि किसी डाक्टर या रसायन के प्रयोग ने बिल्ली को ममी नहीं बनाया, यह पिरामिड की विशिष्ट ऊर्जा की देन है।

(b) रोजर पेनरोज के परीक्षण को पढ़कर कई अन्य वैज्ञानिकों ने भी परीक्षण किए। पोलैंड के वैज्ञानिक आइवर रॉविन्सन ने एक छोटा पिरामिड तैयार कर उसमें कुंठित धार वाला ब्लेड रखा। गीजा के पिरामिड में जिस स्थिति में राज-प्रकोष्ठ है, उसी स्थिति में रॉविन्सन ने अपने पिरामिड में ब्लेड को रखा या इस प्रकार कह सकते हैं कि वह स्थान पिरामिड की कुल ऊंचाई की एक तिहाई ऊंचाई पर केन्द्र में होना चाहिए। ब्लेड की धार वाले हिस्से पूर्व-पश्चिम में रखने पर उन्होंने पाया कि ब्लेड की धार काफी तेज हो गई थी। रॉविन्सन ने यही प्रयोग कई बार दोहराया और दावा किया कि इस तरह के एक ब्लेड से 200 बार दाढ़ी बनाई जा सकती है। सन् 1955 में रॉविन्सन ने उस पिरामिड को पेटेन्ट करा लिया और उनके पिरामिड 'चेयोप्स पिरामिड रेजर-ब्लेड शार्पनर' के नाम से बिकने लगे।

(c) पिरामिड में रखे जल का उपयोग करके बीमारी का सफल इलाज हुआ है। इस जल से टांसिल जैसे रोग ठीक हो जाते हैं। पिरामिड में रखे जल से आंखें धोने पर नेत्र-ज्योति बढ़ती है। इस जल से पाचन-क्रिया ठीक होती है। एक महिला द्वारा पिरामिड के भीतर रखे पानी को कई दिनों तक लोशन की तरह उपयोग में लाने पर वह युवा लगने लगी।

(d) रॉविन्सन ने पिरामिड के आकार की टोपी बनाकर पहनी, जिससे उनका सिर दर्द गायब हो गया तथा उनकी सारी मानसिक उलझनें दूर हो गईं।

पिरामिड की अन्य वैज्ञानिक विशेषताएं

जल तथा अन्य द्रवों को पिरामिड के भीतर रखने पर उनका प्रदूषण समाप्त हो जाता है। इसके भीतर दूध नहीं फटता है और उसे कई दिनों तक रख सकते हैं। चाय, कॉफी और फलों के रस भी पिरामिड के भीतर खराब नहीं होते हैं, बल्कि उनका स्वाद और अच्छा हो जाता है। पिरामिड के इन गुणों से प्रेरित होकर जर्मनी और ब्रिटेन के कई निर्माताओं ने पिरामिड के आकार के दूध और दही के डिब्बे बनाए। इस काम में उन लोगों को सफलता के साथ-साथ भारी आमदनी भी हुई।

पिरामिड के आकार के भंडार गृहों के अंदर रखे अनाज के लिए कीटनाशक औषधियों का उपयोग भी नहीं करना पड़ा।

कुछ अन्य परीक्षण

1. सेलों और बैटरियों की ऊर्जा समाप्त हो जाने पर उन्हें पिरामिड में रखने से उनसे नई ऊर्जा पुनः प्राप्त की जा सकती है।

2. 72 वर्षीय एलन के बाएं हाथ में लकवा मार गया था। लम्बे समय तक चिकित्सा कराने से कोई लाभ नहीं हुआ। तब एलन ने प्रतिदिन एक घंटा पिरामिड में बिताना शुरू किया। फलस्वरूप, उसका लकवा ठीक हो गया। एलन अमेरिका के टेक्सास शहर की रहने वाली है और अब भी वह स्वस्थ तथा सुखी जीवन व्यतीत कर रही है।

पिरामिड की इस विशेषता से प्रभावित होकर, अमरीकी अस्पतालों को भी पिरामिड जैसा रूप दिया जा रहा है।

असम के सांस्कृतिक प्रतीक

—अजयेंद्रनाथ त्रिवेदी

भारत के पूर्वोत्तर भाग में असम हिमालय और ब्रह्मपुत्र की प्रशस्त घाटी के सौंदर्य से मंडित विस्तृत भूभाग को ऐतिहासिक काल में कभी कामरूप तो कभी प्राज्योतिषपुर के नाम से जाना गया। यहां के प्राचीन इतिहास के जानकारों के अनुसार यह क्षेत्र आरम्भ में आर्य सभ्यता का पूर्वदेशिक सीमान्त था। महाभारत तथा कई पुराणों में इस बात के प्रचुर साक्ष्य उपलब्ध हैं कि प्राचीन असम सर्वतोभावेन उस सांस्कृतिक परम्परा का पूर्वी प्रस्तार था जिसे आम तौर पर आर्य सभ्यता कहा जाता है। हां, उस काल में भी इस प्रदेश के अनेक भू-भाग उस जनजातीय सभ्यता से समृद्ध थे जिसके जाग्रत अवशेष आज भी अपनी समग्र चेतना के साथ इस प्रदेश की पहचान बने हुए हैं।

मध्यकालीन असम राजनीतिक दृष्टि से अनेक महत्वपूर्ण घटनाओं का साक्षी बना। ब्रह्मदेश (आधुनिक म्यांमार) की शान जाति के लड़ाकों ने असम पर आक्रमण कर दिया। ये अहोम कहलाते थे। ऊपरी असम के शिवसागर जिले में आज भी उनकी राजधानी के अवशेष विद्यमान हैं। इन लड़ाकों के विरुद्ध स्थानीय शासकों ने अनुकरणीय वीरता का परिचय देते हुए संघर्ष किया। परन्तु विजयश्री ने अहोमों का ही वरण किया। असम की अगली डेढ़ शताब्दी का इतिहास अब इन्हीं अहोमों ने लिखा। आरम्भ में अहोमों का शासन कमोबेश विदेशी शासन ही रहा पर शीघ्र ही उन्हें यह समझ में आ गया कि सफलता पूर्वक शासन करने के लिए स्थानीय लोगों की भावनाओं का सम्मान करना ही पड़ेगा। इस बात को ध्यान में रखते हुए अहोम शासकों ने अपने नामों का संस्कृतीकरण किया और जहां तक संभव हुआ स्थानीय परम्पराओं को सम्मान दिया।

अहोमों ने युद्ध कौशल तथा राजप्रशासन के क्षेत्र में अनेक नवीन संकल्पनाएं स्थापित कीं। इसके अतिरिक्त उन्होंने कला और संस्कृति को भी अपने अमूल्य योगदान से समृद्ध किया। समर-कौशल में अहोमवीर लाचित बरफुकन का नाम आज किसी परिचय की अपेक्षा नहीं रखता। मुगलों की लगभग अजेय सेना को ब्रह्मपुत्र नदी के उस पार ही रोक लेना और करारी मात दे उन्हें दिल्ली लौटने पर मजबूर कर पाना लाचित के रणकौशल के कारण ही संभव हो पाया। असम के ऊपरी भाग में पुरातात्विक महत्व के अनेक स्मारक, राजप्रसाद, उद्यान, कब्रगाह (जिसे स्थानीय भाषा में मैदाम कहते हैं) आदि आज भी उस काल की भव्यता की गाथा गा रहे हैं।

असम में भारतीय संस्कृति के कुछ महनीय मूल्यों को भी आश्रय मिला है। सर्वधर्म समभाव तथा नारी समानता के क्षेत्र में असम के व्यवहार को शेष भारत के लिए-आज भी अनुकरणीय समझा जा सकता है विभिन्न प्रजातियों से बने यहां के समाज में वह सौमनस्य देखा जाता है जिसे भारत के परिवेश में आदर्श कहा जाएगा।

ऐतिहासिक काल से निकल कर असम आधुनिक काल में आ गया है। यहां एशिया का सबसे पुराना तेल शोधनागार बना और इस प्रकार तरल सोना के उत्पादन में असम ने अपनी पहचान बनाई। यहां की घाटियों में दमदार चाय के उत्पादन हेतु सभी परिस्थितियां विद्यमान हैं। इसके बल पर ही असम को चाय के उत्पादन के लिए संसार में उल्लेखीय स्थान प्राप्त हुआ है। वहां की लोक संस्कृति तो अपनी विशेषताओं के साथ विश्व की लोक संस्कृति का श्रृंगार करती है। तांत्रिक साधना की जाग्रत भूमि असम ही है और नववैष्णववाद की आधारशिला भी वहीं रखी गई। विस्तृत ब्रह्मपुत्र की गोद में बसा संसार-प्रसिद्ध नदी द्वीप माजुली असम की वह विरासत है जिसे यूनेस्को ने भी मान्यता प्रदान की है।

असम मानव प्रजातियों का ऐतिहासिक मिलन स्थल रहा है। यहां मंगोलियाई, काकेशसी, बर्मी, ऑस्ट्रेलियाई आदि मानव प्रजातियां सदियों से अनुकरणीय मिलन-भाव से रह रही हैं। इन सभी प्रजातियों के अतिरिक्त विभिन्न धर्मों के अवलम्बी भी वहां निवास कर रहे हैं। इस मेल-जोल ने असम के सामाजिक जीवन के सभी पक्षों को प्रभावित किया फलतः वहां एक ऐसी जीवन शैली का विकास हुआ जिस पर संपूर्ण भारत नाज करता है। इसी शैली ने वहां के सांस्कृतिक जीवन को एक अलग पहचान दी। यह पहचान कतिपय प्रतीकों के माध्यम से व्यक्त होती देखी गई है। उनमें कुछ उल्लेखनीय प्रतीकों का परिचय नीचे दिया जा रहा है।

असम सदा से ही कृषि प्रधान रहा है। वहां वर्षा भी खूब होती है। वर्षा की झड़ी के बीच खेती के काम को सुचारु रूप से चलाने के लिए वहां के किसान बांस के गोल टोप पहनते रहे हैं। इन टोपों से धारकों के सिर तथा कंधे वर्षा की झड़ी से बिल्कुल अछूते रहते हैं। ये टोप ताड़ या अन्य समान गुण वाले पत्तों को बांस के टोपनुमा आवरण में रखकर तैयार किए जाते हैं। आगे चलकर इन टोपों पर सलमे-सितारे टांके जाने लगे और इनकी किनारी एकरंगे से मढ़ी जाने लगी। धीरे-धीरे वॉल हैंगिंग के रूप में इनका महत्व सजावटी वस्तु के रूप में स्थापित हो चला और वे असम के खास उत्पादन होने के कारण ये वहां के शिल्प के प्रतीक बन गये। असम के अतिथि-परायण लोगों ने विदाई के अवसर पर इन टोपों को अपने अतिथियों के माथे पर धर अपना सम्मान व्यक्त करना आरम्भ किया और इस प्रकार यह टोप लगभग सारे देश में गया। इसकी सुन्दर बनावट और चित्ताकर्षक सजावट ने सबको प्रभावित किया। इसके सजावटी उपयोग के कारण आज इसकी मांग अन्तर्राष्ट्रीय जगत में भी होने लगी है। असम का यह अनुपम उत्पादन जापी कहलाता है।

जापी यूँ तो असम के अनेक भागों में बनाई जाती है पर इसके उत्पादन का मुख्य केन्द्र है गुवाहाटी के समीपस्थ नलबाड़ी नामक स्थान। जापी असमिया समाज के सार्वभौम उत्सव रंगाली बिहु के अवसर पर होने वाले नृत्य का अभिन्न अंग बन गया है। मूगा रेशम की साड़ियों में लिपटी बिहु नाचोनी (नर्तकी) के हाथों में जापी कुछ उसी प्रकार शोभित होती है जिस प्रकार नारायण के हाथों में सुदर्शन चक्र शोभित होता है। परम्परागत असमिया घरों में यह शोभा का एक आवश्यक उपादान बन ही गया है साथ ही असम के पर्यटन पर आने वाले लोगों में भी यह काफी लोकप्रिय हुआ है।

असम अपनी शिल्पकारिता के लिए भारत में अपनी अलग पहचान रखता है। यहां का धातु शिल्प सदियों से अपनी गुणवत्ता बनाए हुए है। धातु के बरतन, दीपाधार, ताल (झाल की तरह वे वाद्य), नैवेद्य अर्पण करने के विशिष्ट आधान आदि आज भी बड़े कौशल के साथ बनाये जाते हैं। बेल मेटल तथा पीतल बरतन निर्माण में असमिया ठठेरों द्वारा सर्वाधिक प्रयुक्त होने वाली धातु है। ध्यान देने की बात है कि स्टेनलेस स्टील के इस युग में भी असमिया लोग इन व्यय-साध्य बरतनों में खाना-खिलाना अपनी शान समझते हैं। पान, जिसे असमिया भाषा में तामोल के रूप में जाना जाता है, खाना और निवेदित करना वहां के शिष्टाचार का अपरिहार्य अंग है। तामोल अर्पित करने के लिए वहां एक खास तरह के आधान का उपयोग किया जाता है। इसे बाटा कहते हैं। बाटा अष्टधातु का बना आधार पर खड़ा एक पात्र होता है। बाटा का निर्माण बेल मेटल से किया जाता है। इसके लिए बेल मेटल को खूब पीटा जाता है तथा उसका पत्र तैयार किया जाता है। इस पत्र को फिर बरतन की शकल में ढाल कर बाटा बनाया जाता है। अतिथि सत्कार तथा पूजन-अर्चन में प्रयुक्त होने वाला यह आधान भी आगे चलकर असम का एक सांस्कृतिक प्रतीक बन गया। आज असम में अनुष्ठित होने वाली किसी भी पूजा-अर्चना में इस पात्र का होना आवश्यक सा समझा जाता है और अतिथि को तामोल निवेदित करने के लिए इससे उपयुक्त और कोई आधान माना ही नहीं जाता।

बाटा के आदर्श नमूने असम के बरपेटा जिले में स्थित सरथेबाड़ी और हाजो नामक स्थानों पर तैयार किए जाते हैं। असम के अन्य स्थानों पर बनाये जाने वाले बाटों की गुणवत्ता भी वहीँ के बाटों से ही मापी जाती है। कहीं-कहीं ढक्कन वाले बाटा भी बनाये जाते हैं। इन्हें सराइ कहा जाता है। स्थानीय लोगों के अतिरिक्त असम के पर्यटन पर गए लोगों और गैर असमिया समाज में भी बाटा और सराइ अपनी सुन्दरता और कलात्मकता के लिए काफी लोकप्रिय हैं।

असम के सांस्कृतिक प्रतीकों में सिर्फ शिल्प के नमूने ही नहीं वरन् प्रकृति के उपादान भी शामिल हैं। असमिया कैलेंडर का पहला मास है बहाग। इसी मास में यहां बसन्त का शुभागमन होता है। वृक्षों पर ललाम पल्लव निकल आते हैं और वातावरण की ठंडक जाती रहती है। असम का सार्वभौम महोत्सव रंगाली बिहु इसी मास में मनाया जाता है। मौसम के गरमाते ही इस अंचल

के वृक्ष सपुष्प और रंग-बिरंगे आर्किड खिल उठते हैं। पुष्पवंत वृक्षों में नाहर तथा आर्किडों में कपोफूल को बसंत का अग्रदूत माना जाता है। नाहर एक सदाबहार वृक्ष है जिसके फूलों में कामोत्तेजक गंध होती है। कपोफूल आर्किड का एक परजीवी प्रकार है जो आम तौर पर टिगने वृक्षों पर शरण लेता है। अपने सौंदर्य के लिए ही यह सबको प्रिय होता है। इसका रंग हल्का से गहरा द्युतिमान बैंगनी होता है।

रंगाली बिहु का प्रधान अनुष्ठान है बिहु नृत्य जो खुले मैदान में आयोजित होता है। युवक-युवतियों का समूह परम्परागत वाद्यों पर पूरे जोश के साथ इस कामोदीपक नृत्य में बढ़चढ़ कर भाग लेता है। ग्रामीण अंचल में नाहर के छायादार वृक्ष इस नृत्य के आश्रय बनते हैं। अपनी परम्परागत पोशाक में बिहु नृत्यांगनाएं जूड़े में कपोफूल खोंसकर जब बिहुतलियों (बिहु नृत्यांगन) में उतरती हैं तो लगता है असम का सारा सौंदर्य ही पुंजीभूत हो उठा हो। असम के साथ बिहु के तादात्म्य और बिहु के साथ नाहर के वृक्ष की संगति के कारण सांस्कृतिक प्रतीकों में नाहर के वृक्ष को विशेष महत्व मिला है।

असम के सांस्कृतिक प्रतीकों का वर्णन तब तक पूरा नहीं हो सकता जब तक हम वहां के लोगों के प्रेमोपहार, गमोसा (गमछे) की चर्चा नहीं कर लेते। हथकरघे पर कपड़ा बुनने में असम का उदाहरण असम ही हो सकता है। महात्मा गांधी ने असम-यात्रा के दौरान यहां की कन्याओं को करघे पर कपड़ा बुनते देखा था। आगे चलकर एक संस्मरण में उन्होंने लिखा कि असमिया कन्याएं करघे पर स्वप्न बुनती हैं। करघे पर असमिया बालाओं की कारीगरी का कमाल उनके द्वारा बुनी डिजाइनों को देखकर ही समझा जा सकता है। गमोछा असमिया करघे पर बुना जाने वाला एक उत्तरीय है जो यहां अपने से बड़ों को अपनी श्रद्धा के प्रतीक स्वरूप भेंट किया जाता है। सफेद कपड़े पर गहरे लाल रंग के धागे से कढ़ाई कर गमोसा तैयार किया जाता है।

असम को कामरूप भी कहा जाता है। कामरूप अर्थात् कामनाएं जहां रूप धारण करती हैं। असम की संस्कृति में बहुत कुछ ऐसा है जिसमें काम को अभिव्यक्त होते देखा जा सकता है। कई मान्यताओं के अनुसार असमिया गमोछे का विशिष्ट लाल रंग काम का ही प्रतीक है। श्रद्धा निवेदित करने का यह असमिया उपादान वस्तुतः प्रणय निवेदन का उपादान था। असमिया बालाएं अत्यन्त जतन से और काफी गोपनीयता से साल भर में गमोसा बुनती और रंगाली बिहु के अवसर पर छिप कर उसे अपने समनिया (प्रेमी) को देकर अपने प्रेम की अभिव्यक्ति करतीं। इस अवसर पर दिया जाने वाला गमोसा 'बिहुआन' कहलाता है। प्रेम प्रदर्शन के इस साइबर युग में प्रेमी-प्रेमिकाओं को भावाभिव्यक्ति के अब अनेक माध्यम मिल गए हैं। ऐसी स्थिति में गमोसा के प्रयोजन का विस्तार हुआ है और अब यह सम्मान तथा आदर व्यक्त करने का सबसे सबल माध्यम बन चला है। आज के असमिया समाज में गमोसा पाने का अर्थ है स्नेह और आदर का महनीय पात्र होना।

गमोसे को भिन्न-भिन्न प्रकार की कलाकृतियों से सजाने में असमिया बालाएं एक से बढ़कर एक हैं। बेल-बूटे से लेकर पशु-पक्षियों की आकृतियां बुनकर गमोछे को सजाना वहां की हथकरघा कलानिपुणा बालाओं के लिए बाएं हाथ का खेल है। बिहु के अवसर पर अपनी प्रेमिका से इस गमोसे को पाने की अभिलाषा हर प्रेमी वर्ष भर से संचित करता रहता है। जिसे यह गमोसा मिल जाता है उसके लिए रंगाली बिहु का अर्थ ही बदल जाता है। ऐसे प्रेमी का हर्षसिक्त बाग-बाग मन बिहुतलियों (बिहु नृत्य क्षेत्रों) में दूर से ही पहचाना जा सकता है।

असम के सांस्कृतिक प्रतीक परम्परा, शिल्प और लोक-मान्यताओं का विस्तार ही है। लोक संस्कृति की समृद्धि के लिहाज से असम भारत का कदाचित्त सबसे धनी प्रदेश है। किसी संदर्भ में यहां यदि परम्परा का शासन है तो किसी मामले में स्थानीय शिल्प को अग्रता मिली है। कहीं-कहीं हम लोक मान्यताओं को अन्य सभी पर भारी पाते हैं। आम तौर पर सभी सांस्कृतिक इकाइयों में ऐसे प्रतीक पाए जाते हैं जिनसे उन इकाइयों को विशिष्ट सांस्कृतिक पहचान मिलती है। पर जिस गंभीरता के साथ असमिया समाज अपने सांस्कृतिक प्रतीकों से जुड़ा है वह अन्य समाज के लिए अनुकरणीय ही नहीं है अपितु उद्बोधक भी हैं। ये प्रतीक ही हैं जिनसे आज का असम अपने को अभिव्यक्त कर पाता है। अनेक प्रकार के नकारात्मक आन्दोलनों के बावजूद असम आज यदि जागृत है तो इसमें संदेह नहीं कि यह जागृति, बहुत हद तक, इन सांस्कृतिक प्रतीकों के कारण ही है।

राजभाषा अधिकारी, यूको बैंक, सैनिक बाजार, मेन रोड, रांची - 834001

बीसवीं सदी का विलक्षण आविष्कार : लेसर

—डा. विभा शुक्ला

बीसवीं सदी में तीन ऐसे महत्वपूर्ण आविष्कार किए गए, जिन्होंने सम्पूर्ण विश्व को चकित कर दिया। ये हैं—लेसर, सिलिकान चिप और सुपर कंडक्टिविटी। इनमें पहले दो आविष्कार तो पूरे हो चुके हैं, किन्तु तीसरा आविष्कार सुपर कंडक्टिविटी का आविष्कार अभी तक अधूरा है। वैज्ञानिकों को विश्वास था कि सुपर कंडक्टिविटी का आविष्कार बीसवीं सदी के अन्त तक पूरा हो जाएगा, किन्तु सोवियत संघ के विघटन तथा कुछ अन्य कारणों से सुपर कंडक्टिविटी का आविष्कार अभी तक अधूरा है।

बीसवीं सदी में जो दो प्रमुख आविष्कार हुए हैं, उनमें लेसर प्रमुख है। लेसर के आविष्कार ने दूरसंचार, परिवहन, अन्तरिक्ष विज्ञान, चिकित्सा विज्ञान, व्यवसाय, प्रौद्योगिकी आदि अनेक क्षेत्रों में क्रान्तिकारी परिवर्तन के द्वार खोल दिए हैं। लेसर किरणों की सहायता से एक सैकेन्ड से भी कम समय में मोतिया बिन्द का इलाज किया जा सकता है, कैंसर को जड़ से समाप्त किया जा सकता है एवं हृदय के रोगों को बिना ऑपरेशन के ठीक किया जा सकता है। आजकल गुर्दे की पथरी का बिना ऑपरेशन इलाज लेसर की सहायता से ही किया जा रहा है। लेसर का उपयोग अन्तरिक्ष के अध्ययन में भी बड़ी तेजी से बढ़ रहा है। लेसर किरणों की सहायता से पृथ्वी से हजारों-लाखों किलोमीटर दूर स्थित ग्रहों और नक्षत्रों की ठीक-ठीक दूरी मालूम की जा सकती है एवं इनका अध्ययन किया जा सकता है। उद्योगों के विकास में भी लेसर का कम योगदान नहीं है। लेसर के द्वारा धातुओं की मोटी-मोटी चादरों में छेद किए जा सकते हैं, वेल्डिंग की जा सकती है तथा धातुओं की कठोरता बढ़ाई जा सकती है एवं धातुओं पर अन्य पदार्थों की पर्त चढ़ाकर उन्हें अधिक कठोर टिकाऊ एवं उपयोगी बनाया जा सकता है। आजकल साफ और महीन कटाई के लिए लेसर का उपयोग किया जा रहा है। संयुक्त राज्य अमरीका सहित विश्व के अनेक देशों में साधारण कपड़ों से लेकर पानी के जहाज बनाने वाली लोहे की मोटी-मोटी चादरों को काटने का काम लेसर किरणों से ही किया जाता है। छपाई के क्षेत्र में तो लेसर ने अभिनव कीर्तिमान स्थापित किए हैं। लेसर प्रिन्टर की बढ़ती हुई लोकप्रियता इसका प्रमाण है। लेसर प्रिन्टर की सहायता से छपाई का काम करने में न केवल समय की बचत होती है, बल्कि इसके द्वारा सस्ती ओर स्तरीय छपाई की जा सकती है।

लेसर ने एक ओर जहाँ मानव जीवन के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है, वहीं दूसरी ओर इसकी विध्वंसक शक्ति भी प्रलयकारी है। लेसर का उपयोग करके मध्यम दूरी और लम्बी दूरी तक मार करने वाले प्रक्षेपास्त्रों तथा युद्ध में काम आने वाले बमवर्षक विमानों,

हेलीकॉप्टरों, जलयानों, पनडुब्बियों आदि को बहुत अधिक विध्वंसक बनाया जा सकता है। 23 मार्च, 1981 को तत्कालीन अमरीकी राष्ट्रपति रोनाल्ड रीगन ने "स्टारवार योजना" प्रस्तुत की। यह योजना लेसर किरणों की विनाशकारी शक्ति पर आधारित है।

लेसर एक असीम शक्ति है। यह मानव के लिए वरदान है, अथवा अभिशाप? यह तो मानव द्वारा इसके उपयोग पर निर्भर करता है। लेसर किरणों का उपयोग करके मानव जीवन को अत्यन्त सुखी-सम्पन्न और सुविधापूर्ण बनाया जा सकता है तथा इसका दुरुपयोग करके मानव जीवन को विनाश के गर्त में भी धकेला जा सकता है। लेसर और इसके उपयोग के सम्बन्ध में अधिक जानकारी प्राप्त करने के पहले यह जानना अत्यन्त आवश्यक है कि लेसर क्या है? इसका आविष्कारक कौन है? तथा लेसर का आविष्कार किस प्रकार हुआ?

लेसर शब्द अंग्रेजी भाषा के लाइट एम्पलीफिकेशन बाई स्टिम्युलेटेड एमीशन ऑफ रेडिएशन के प्रथम अक्षरों को मिला कर बनाया गया है। अर्थात् इसमें लाइट का एल, एम्पलीफिकेशन का ए स्टिम्युलेटेड का एस, एमीशन का ई और रेडियेशन का आर लिया गया है। इस प्रकार एल ए एस ई आर से मिल कर लेसर बना है। लेसर के आविष्कार का मुख्य श्रेय संयुक्त राज्य अमरीका के न्यूयार्क स्थित कोलम्बिया विश्वविद्यालय के महान वैज्ञानिक प्रोफेसर चार्ल्स टाउन्स को है। प्रोफेसर चार्ल्स टाउन्स ने सर्वप्रथम मेसर किरणों का आविष्कार किया था। मेसर शब्द भी लेसर के समान ही माइक्रोवेव एम्पीफिकेशन बाई स्टिम्युलेटेड एमीशन ऑफ रेडिएशन के पहले अक्षरों को मिला कर बना है। मेसर और लेसर का आविष्कार कब और किस प्रकार हुआ? यह कहानी भी बड़ी रोचक है। सामान्यतया वैज्ञानिकों के मस्तिष्क में इस प्रकार के आविष्कारों के विचार प्रयोगशालाओं में प्रयोगों के मध्य आते हैं अथवा विज्ञान सम्बन्धी प्रयोगों के मध्य अचानक इस प्रकार के आविष्कार हो जाते हैं, किन्तु बीसवीं सदी के सर्वाधिक विलक्षण आविष्कार लेसर की कहानी इन सबसे पूरी तरह भिन्न है।

सन् 1951 में संयुक्त राज्य अमरीका की राजधानी वाशिंगटन डी.सी. में वैज्ञानिकों के एक राष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन किया गया। इस सम्मेलन में भाग लेने के लिए संयुक्त राज्य अमरीका के साथ ही बाहर के कुछ वैज्ञानिकों को भी आमंत्रित किया गया था। इस सम्मेलन में सम्मिलित होने वाले अमरीकी वैज्ञानिकों में एक थे—प्रोफेसर चार्ल्स टाउन्स।

प्रोफेसर चार्ल्स टाउन्स न्यूयार्क के कोलम्बिया विश्वविद्यालय में भौतिक शास्त्र के प्राध्यापक थे और पिछले कुछ समय से दूरसंचार के विभिन्न क्षेत्रों—रेडियो, टेलीविजन, रेडार आदि में प्रयुक्त होने वाली विभिन्न तकनीकी प्रणालियों में विद्युत चुम्बकीय तरंगों के प्रवर्धन पर शोध कर रहे थे। उनका यह शोध प्रकाश तरंगों व चुम्बकीय तरंगों की लम्बाई और उनकी आवृत्ति से सम्बन्धित था।

भौतिकशास्त्रियों के सम्मेलन में भाग लेने हेतु प्रोफेसर टाउन्स काफी सुबह-सुबह ही आ गए थे। उन्होंने अभी तक नाश्ता भी नहीं किया था, अतः उन्हें हल्की-हल्की भूख लग रही थी। प्रोफेसर टाउन्स एक कप गरम-गरम चाय अथवा कॉफी पीना चाहते थे। उन्होंने सड़क का एक चक्कर लगाया, किन्तु कोई भी कैफे अथवा रेस्टोरेन्ट खुला नहीं था, अतः वह टहलते हुए नगर के एक रमणीक स्थल फ्रेंकलिन पार्क आ गए और एक बैंच पर बैठ कर आराम करने लगे। उनके सामने अजेलिया के मनमोहक फूल अपनी छटा बिखेर रहे थे। प्रोफेसर टाउन्स को अजेलिया के फूल पसन्द थे। वह बड़ी देर तक इन फूलों की सुन्दरता में खोए रहे।

फ्रेंकलिन पार्क में बहुत से लोग इधर-उधर चहलकदमी कर रहे थे। इनमें से अधिकांश वृद्ध लोग थे, जो मॉर्निंग वॉक के लिए नियमित रूप से आते थे। कुछ प्रकृति प्रेमी युवक-युवतियां भी थे, जो शहर के कोलाहल से अलग इस पार्क में नैसर्गिक सौन्दर्य का आनन्द लेने आए थे। आठ-दस मोटी-मोटी महिलाएं भी थीं, जो अपना वजन कम करने के लिए तेज चाल से पार्क के मध्य बने एक स्मारक के चारों ओर चक्कर लगा रही थीं। प्रोफेसर टाउन्स कभी पार्क में विचरण करते लोगों को देखते तो कभी अजेलिया के सुन्दर फूलों के सौन्दर्य में खो जाते।

विख्यात वैज्ञानिक आईस्टाइन और जर्मन वैज्ञानिक मैक्स प्लांक के सिद्धान्तों की विवेचना करते-करते अचानक प्रोफेसर टाउन्स के मस्तिष्क में एक विचार आया और वह उठ कर खड़े हो गए। प्रोफेसर टाउन्स के मस्तिष्क में एक क्रान्तिकारी आविष्कार की योजना ने जन्म लिया था तथा उन्हें इस बात का पूरा विश्वास हो गया था कि वह एक ऐसे यंत्र का आविष्कार कर लेंगे जिससे अति लघु तरंगों को अनुशासित एवं सम्बद्ध किया जा सकता है।

प्रोफेसर टाउन्स टहलते हुए सड़क पर आ गए। समय हो चुका था। वह सीधे सम्मेलन स्थल पहुंचे और सम्मेलन में भाग लेकर न्यूयार्क वापस आ गए। न्यूयार्क आकर प्रोफेसर टाउन्स ने अपने सहयोगियों को अपनी योजना से अवगत कराया और अपने मिशन में जुट गए।

प्रोफेसर टाउन्स ने तीन वर्षों तक अपनी अभिनव योजना पर कार्य किया और अन्त में उन्होंने एक ऐसा आविष्कार कर डाला, जिससे सम्पूर्ण विश्व में तहलका मच गया। इसी आविष्कार के आधार पर ही बीसवीं सदी के सर्वाधिक महत्वपूर्ण आविष्कार लेसर का जन्म हुआ।

प्रोफेसर टाउन्स ने पेन्सिल के बराबर मोटी संश्लिष्ट माणिक्य (रूब्री) शलाका द्वारा विश्व की पहली मेसर (माइक्रोवेव एम्पलीफिकेशन वाई स्टिम्युलेटेड एमीशन ऑफ रेडिएशन) तैयार करने में सफलता प्राप्त की। यह एक आश्चर्य की बात है कि इसी विषय पर सोवियत संघ की मास्को स्थित लेवडेव प्रयोगशाला के ए. एम. प्रोखोरोव और एन. जी. वासोव नामक दो वैज्ञानिक वर्षों से कार्यरत रहे थे। ये दोनों वैज्ञानिक सफलता के काफी निकट भी पहुंच गए थे, किन्तु प्रोफेसर टाउन्स इन देशों से आगे निकल गए। आगे चल कर सन् 1964 में प्रोफेसर टाउन्स के

साथ ही दोनों सेवियत वैज्ञानिकों को इसी क्षेत्र में उनकी उपलब्धियों के लिए भौतिकी का नोबल प्राइज प्रदान किया गया।

प्रोफेसर टाउन्स के मेसर के आविष्कार के बाद विज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों में नए-नए अनुसंधान आरम्भ हो गए। इस आविष्कार के बल पर अन्तरिक्ष विज्ञान में एक क्रान्तिकारी युग का आरम्भ हुआ। अन्तरिक्ष का अध्ययन करने वाले शक्तिशाली दूरदर्शी यंत्रों में मेसर का उपयोग करने से इनकी क्षमता इतनी अधिक बढ़ गई कि इनके द्वारा अरबों किलो मीटर दूर स्थित ग्रहों का अध्ययन सम्भव हो गया। मेसर युक्त विश्व की पहली रेडियो दूरदर्शी संयुक्त राज्य अमरीका की राष्ट्रीय अनुसंधान प्रयोगशाला में लगाई गई। इस रेडियो दूरदर्शी की गणना आज भी विश्व की सर्वाधिक आधुनिक एवं विकसित रेडियो दूरदर्शियों में की जाती है।

मेसर के आविष्कार के बाद विश्व के अनेक देशों के वैज्ञानिक मेसर जैसे आविष्कारों में लग गए। संयुक्त राज्य अमरीका के वैज्ञानिक तो पहले से ही देश की विभिन्न प्रयोगशालाओं में इस विषय पर कार्य कर रहे थे। अमरीका के जो वैज्ञानिक इस प्रकार के आविष्कारों में रूचि ले रहे थे, उनमें प्रमुख थे—युवा वैज्ञानिक रिचर्ड गोर्डन गुल्ड। गोर्डन गुल्ड प्रोफेसर टाउन्स के सहयोगी थे तथा उन्हें इस क्षेत्र में प्रोफेसर टाउन्स के साथ कार्य करने का लम्बा अनुभव भी था।

प्रोफेसर टाउन्स के मेसर के आविष्कार के कुछ समय बाद गोर्डन गुल्ड ने उनसे प्रकाशीय मेसर के विकास की सम्भावनाओं के सम्बन्ध में चर्चा की। वह प्रकाश की आवृत्तियों के सम्बन्ध में आगे शोधकार्य करना चाहते थे, किन्तु प्रोफेसर टाउन्स ने समयाभाव के कारण साथ देने में अपनी असमर्थता व्यक्त की तथा इस कार्य को अकेले ही करने का सुझाव दिया। इसके साथ ही प्रोफेसर टाउन्स ने उन्हें समय-समय पर सहयोग देने का आश्वासन दिया। गोर्डन गुल्ड को इतना बड़ा शोधकार्य करना असम्भव सा लगा, फिर भी उन्होंने हिम्मत से काम लिया और कोलम्बिया विकिरण प्रयोगशाला आकर अपने काम में लग गए। गोर्डन गुल्ड को अपने अनुसंधान कार्य में अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ा, किन्तु वह अपने कार्य में जुटे रहे। 1 नवम्बर, 1957 को उन्होंने टेलीफोन पर प्रोफेसर टाउन्स से प्रकाशीय मेसर के सम्बन्ध में विस्तृत चर्चा की तथा मेसर से सम्बन्धित अनेक जानकारियां प्राप्त कीं।

गोर्डन गुल्ड ने प्रोफेसर टाउन्स से जानबूझकर टेलीफोन पर विस्तृत चर्चा की थी। इस चर्चा के दो प्रमुख कारण थे। गोर्डन गुल्ड मेसर के मूल सिद्धांत की गहन जानकारी चाहते थे। इसके साथ ही उन्हें यह भ्रम हो गया था कि प्रोफेसर टाउन्स भी प्रकाशीय मेसर पर कार्य कर रहे हैं। यदि प्रोफेसर टाउन्स उनसे पहले अपना आविष्कार पूरा कर लेते तो गोर्डन गुल्ड का सारा श्रम व्यर्थ जाता। प्रोफेसर टाउन्स के साथ की लम्बी बातचीत से गोर्डन गुल्ड को यह स्पष्ट हो गया कि प्रोफेसर टाउन्स प्रकाशीय मेसर पर कार्य नहीं कर रहे थे, अतः अब वे अपनी पूरी क्षमता के साथ अपने कार्य में लग गए।

गोर्डन गुल्ड अपने कार्य को जल्दी से जल्दी पूरा कर लेना चाहते थे, क्योंकि मेसर की जानकारी विश्व के प्रायः सभी भागों तक पहुंच गई थी तथा अनेक देशों के लोग प्रकाशीय मेसर पर कार्य कर रहे थे।

गोर्डन गुल्ड ने प्रोफेसर टाउन्स से टेलीफोन पर बात करने के बाद लगभग पन्द्रह दिनों तक कड़ी मेहनत की और अपने कार्य के परिणामों के आधार पर नौ पृष्ठों का शोधपत्र तैयार किया। गोर्डन गुल्ड ने अपने शोधपत्र का शीर्षक रखा "लाइट एम्पलीफिकेशन वाई स्टिमुलेटेड एमिशन ऑफ रेडिएशन" अर्थात् लेसर। अपना शोधपत्र तैयार होते ही गोर्डन गुल्ड स्थानीय नोटरी के पास गए। नोटरी ने उनके शोधपत्र के सभी नौ पृष्ठों पर अपनी सील लगा दी तथा इस प्रकार गोर्डन गुल्ड का शोधपत्र पंजीकृत हो गया।

गोर्डन गुल्ड ने अपने शोधपत्र में लेसर के सैद्धांतिक आधार को पूरे विस्तार के साथ प्रस्तुत किया था। उनके इसी सैद्धांतिक विवेचन के आधार पर 7 जुलाई, 1960 को ह्यूजेस विमान कम्पनी, कैलीफोर्निया की हूजर अनुसंधान प्रयोगशाला में विख्यात वैज्ञानिक डॉ. टी. एच. मेमन ने बड़े ही गोपनीय ढंग से विश्व का पहला लेसर यंत्र तैयार किया। डॉ. टी. एच. मेमन ने सर्वप्रथम इसका नाम 'आप्टिकल मेसर' रखा। शीघ्र ही उन्होंने इस नाम में संशोधन किया और इसे नया नाम दिया—मेसर। डॉ. मेमन ने अपने लेसर यंत्र में रूबी का उपयोग किया था। इस यंत्र से लाल रंग की लेसर किरण निकली थी तथा इस लेसर किरण की चमक सूर्य की किरणों से एक करोड़ गुना अधिक थी।

विश्व के पहले लेसर यंत्र की कार्यप्रणाली मेसर के समान ही थी। इसमें आधी सिगरेट के बराबर लम्बी एक संशिलष्ट माणिक्य (रूबी) छड़ का उपयोग किया गया था। इस छड़ के दोनों सिरे समतल और चिकने थे तथा इन्हें दर्पण का रूप देने के लिए इन पर चांदी की पॉलिश की गई थी। एक सिरे पर चांदी की पॉलिश हल्की की गई थी जिससे वह अर्ध पारदर्शक बन गया था। इस सिरे की पारदर्शक क्षमता लगभग साठ प्रतिशत थी जबकि दूसरे सिरे पर चांदी की पॉलिश इस प्रकार की गई थी कि उसकी पारदर्शक क्षमता 99% तक पहुंच गई थी।

रूबी छड़ की लम्बाई लगभग 5 सेन्टीमीटर तथा मोटाई 6 मिलीमीटर थी। इस छड़ को कुण्डलीनुमा जिानान फ्लैशलैम्प के मध्य भाग में इस प्रकार रखा गया था कि इसके पूरे भाग पर जिानान फ्लैश लैम्प का सीधा प्रकाश पड़े। इसके बाद एक कैपिस्टर बैंक को आवेशित करके रूबी छड़ पर लगभग दो हजार जूल प्रकाश ऊर्जा डाली गई। ऐसा करते ही रूबी छड़ में एक आश्चर्यजनक प्रतिक्रिया हुई। रूबी छड़ पर प्रकाश ऊर्जा पड़ते ही इसमें लेसर प्रक्रिया आरम्भ हुई और इसके एक सिरे से गहरे लाल रंग की एक लेसर किरण निकली। यह लेसर किरण रूबी छड़ के उस सिरे से बाहर निकल रही थी, जिस पर चांदी की पर्त चढ़ा कर लगभग 60% पारदर्शक क्षमता वाली पॉलिश की गई थी। जिानान फ्लैश लैम्प द्वारा उत्पन्न होने वाली ऊर्जा के रूबी छड़

पर पड़ने से रूबी छड़ के दोनों सिरों के मध्य के फोटान दोनों दर्पणों के मध्य बार-बार परावर्तित हो रहे थे और अन्त में रूबी छड़ के अर्ध पारदर्शक सिरे की तरफ से एक शक्तिशाली प्रकाश अंशु बन कर तीर की तरह बाहर निकल रहे थे।

रूबी छड़से निकलने वाली लेसर किरण बड़ी विलक्षण थी। इसकी चमक असाधारण थी तथा यह सूर्य के प्रकाश से एक करोड़ गुना अधिक चमकीली थी। यह एक सीधी रेखा में ला रही थी तथा इसमें पृथ्वी के कठोर से कठोर पदार्थ को भेद देने की क्षमता थी।

लेसर किरणों ने विश्व के वैज्ञानिकों के सामने शोध के अनेक आयाम खोल दिए तथा दुनिया भर के वैज्ञानिक लेसर किरणों के अध्ययन में जुट गए। लेसर किरणों के अध्ययन से अनेक तथ्य प्रकाश में आए तो अत्यन्त रोचक होने के साथ ही साथ बड़े विलक्षण भी थे।

लेसर किरणें एक प्रकार की प्रकाश किरणें ही थीं। ये प्रकाश की किरणों के समान ही गति करती थीं अर्थात् जिस गति से प्रकाश की किरणें यात्रा करती हैं, उसी गति से लेसर किरणें भी यात्रा करती थीं, किन्तु लेसर किरणें प्रकाश किरणों से असाधारण रूप से भिन्न थीं। साधारण प्रकाश किरण को यदि एक प्रिज्म में प्रवेश कराया जाए और दूसरी ओर सफेद रंग का एक पर्दा लगा दिया जाए तो इस पर्दे पर सात रंग उभर आते हैं। ये हैं—बैंगनी, नीला, जामुनी, हरा, पीला, नारंगी और लाल। अर्थात् सूर्य से प्राप्त होने वाली साधारण प्रकाश किरणों में सात रंग होते हैं, किन्तु लेसर किरण को प्रिज्म अथवा किसी भी माध्यम से गुजारा जाए, यह हमेशा अपने मूल रंग में ही बनी रहती है, क्योंकि यह केवल एक ही रंग की होती है।

लेसर किरणों की तीव्रता साधारण प्रकाश किरणों की तीव्रता से बहुत अधिक होती है। जैसा कि अभी-अभी बताया जा चुका है कि लेसर किरणों की तीव्रता सूर्य की किरणों की तीव्रता से एक करोड़ गुना अधिक होती है, यही कारण है कि जहां साधारण प्रकाश की किरण वर्षा, कोहरे और घने अंधेरे में अधिक दूरी तक नहीं जा सकती, वहीं लेसर किरण बड़ी सरलता से वर्षा, कोहरे और घने अंधकार को भेदती हुई उन्हें पार कर जाती है। साधारण प्रकाश की किरणें कुछ दूर चलने के बाद बिखर जाती हैं। इसे एक टार्च की सहायता से सरलता से समझा जा सकता है। एक टार्च का प्रकाश कुछ दूरी तक चलने के बाद फैलने लगता है और शीघ्र ही फैल कर बिखर जाता है। यही कारण है कि एक अच्छी से अच्छी टार्च का प्रकाश केवल कुछ किलोमीटर की दूरी तक ही पहुंच पाता है। लेसर किरण एक सीधी रेखा में चलने के साथ ही नाम यात्रा को ही बिखरती है। एक लेसर किरण लगभग बिना बिखरे हुए लाखों करोड़ों किलोमीटर की यात्रा कर सकती है। लेसर किरण की इसी विशेषता के कारण इसकी सहायता से लाखों करोड़ों किलोमीटर की दूरी पर स्थित ग्रहों के अध्ययन में क्रांतिकारी युग का शुभारम्भ हुआ। इसके साथ ही लेसर किरणों की सहायता से लाखों-करोड़ों किलोमीटर की दूरी पर स्थित ग्रहों

की ठीक-ठीक दूरी नापना भी बड़ा आसान हो गया है। संयुक्त राज्य अमरीका के विख्यात अन्तरिक्षयान अपोलो-11 के अन्तरिक्ष यात्रियों द्वारा चन्द्रमा पर एक विशाल दर्पण लगाया था तथा जमीन से उस पर लेसर किरणें डाली गई थीं। ये किरणें पृथ्वी से सीधी चन्द्रमा पर पहुंची और चन्द्रमा पर लगे विशाल दर्पण से टकरा कर परावर्तित हुईं और वापस पृथ्वी पर आ गईं। सर्वप्रथम लेसर किरणों द्वारा इसी विधि से पृथ्वी और चन्द्रमा के बीच की सही दूरी नापी गई। यह दूरी पूरी तरह प्रामाणिक थी एवं इसमें एक मीटर तक की भी त्रुटि नहीं थी।

लेसर किरणें बड़ी तीव्र और शक्तिशाली होती हैं। एक स्रोत से निकलने वाली सभी लेसर किरणें एक दूसरे के समानान्तर होती हैं, अतः इनकी शक्ति बहुत अधिक बढ़ जाती है। लेसर किरणें इतनी अधिक शक्तिशाली होती हैं कि इनकी सहायता से धातुओं की मोटी-मोटी चादरों की कटाई की जा सकती है, वेल्डिंग की जा सकती है, तथा हीरे जैसे कठोर पदार्थ में छेद किया जा सकता है। लेसर की सहायता से इतने छोटे छेद किए जा सकते हैं जो नंगी आंखों से नहीं दिखाई देते। लेसर किरणों की एक अन्य महत्वपूर्ण विशेषता यह है कि एक लेसर यंत्र से निकलने वाली सभी लेसर किरणों में एक दूसरे से सम्बद्धता होती है। विश्व में अभी तक ऐसी प्रकाश किरणों का आविष्कार नहीं हुआ है, जिनमें पूर्ण सम्बद्धता हो, किन्तु अभी तक जितनी भी किरणों की खोज की गई है, अथवा जितनी भी किरणों का आविष्कार किया गया है, उनमें लेसर किरणों में सर्वाधिक सम्बद्धता होती है। लेसर किरणों के इसी गुण के कारण दूर संचार के क्षेत्र में एक क्रान्तिकारी युग का आरम्भ हुआ है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि लेसर किरणों में चार ऐसी विशेषताएं पाई जाती हैं जो अन्य प्रकाश किरणों में देखने को नहीं मिलती। पहला—लेसर किरणों का एक वर्णीय होना। साधारण प्रकाश किरणों में सात रंग होते हैं, किन्तु लेसर किरण में केवल एक रंग होता है। लेसर किरणों के इसी गुण के कारण प्रकाश और किरणों का अध्ययन करने वाले विज्ञान प्रकाशिकी में क्रान्तिकारी युग का आरम्भ हुआ। दूसरा—एक ही दिशा में बिना फैलाव के सीधी रेखा में गति करना। इसी गुण का उपयोग करके लेसर किरणों द्वारा लाखों करोड़ों किलोमीटर की दूरी पर स्थित ग्रहों की ठीक-ठीक दूरी नापी जा सकती है। तीसरा—शक्तिशाली तीव्रता। लेसर किरणों के इसी गुण के कारण इससे धातुओं की मोटी-मोटी चादरों की कटाई एवं वेल्डिंग की जा सकती है, तथा हीरे जैसे कठोर पदार्थ में छिद्र किया जा सकता है। चौथा—लेसर किरणों की सम्बद्धता। एक लेसर यंत्र से निकलने वाली सभी लेसर किरणें एक दूसरे के समानान्तर होती हैं। अतः इनकी तीव्रता और शक्ति बहुत बढ़ जाती है। लेसर किरणों के इसी गुण के आधार पर होलोग्राफी का विकास सम्भव हुआ। इसके साथ ही लेसर किरणों के इसी गुण के कारण दूर संचार के क्षेत्र में विकास हुआ है। इसलिए, लेसर किरणों पर आधारित दूर संचार प्रणाली निश्चित रूप से अधिक विश्वसनीय है।

लेसर किरणों के और भी अनेक उपयोग हैं। इन किरणों का रसायन शास्त्र में बहुत उपयोग किया जा रहा है। लेसर किरणों की सहायता से रासायनिक क्रियाओं को तेज किया जा सकता है अथवा धीमा किया जा सकता है। इसी तरह इन किरणों की सहायता से बहुत उच्चताप उत्पन्न किया जा सकता है तथा अत्यन्त निम्न ताप की स्थिति लाई जा सकती है। लेसर के द्वारा वैज्ञानिक उपयोग में लाये जाने वाले पदार्थों की शुद्धता का प्रतिशत ज्ञात किया जा सकता है एवं इनकी अशुद्धियों को दूर किया जा सकता है। इस प्रकार हम देखते हैं कि लेसर किरणों का उपयोग रसायन विज्ञान एवं विज्ञान की अन्य शाखाओं में भी तेजी से बढ़ रहा है। आधुनिक वैज्ञानिक लेसर किरणों का उपयोग नाभिकीय विज्ञान में भी करने लगे हैं। इन किरणों की सहायता से पदार्थ की संरचना एवं उसके गुणों के अध्ययन का क्रान्तिकारी युग आरम्भ हो गया है।

लेसर किरणों का उपयोग केवल उच्च विज्ञान तकनीकी और उद्योग आदि में ही नहीं हो रहा है, बल्कि इनके साथ ही लेसर किरणों का उपयोग साधारण कामों में भी किया जाने लगा है। उदाहरण के लिए परम्परागत तरीकों का उपयोग करके सीधी सड़कें बनाने में अनेक समस्याएं आती थीं। इन समस्याओं को लेसर किरणों ने दूर कर दिया है। अब लेसर किरणों की सहायता से सौ प्रतिशत सीधी सड़कों का निर्माण सम्भव हो गया है। इसी विधि का उपयोग करके बिल्कुल सीधी पाइप लाइनें डाली जा सकती हैं, गैस और तेल की लाइनें डाली जा सकती हैं, बिजली और टेलीफोन के तार बिछाए जा सकते हैं तथा जमीन के भीतर सुरंगें तैयार की जा सकती हैं। इंग्लैण्ड और फ्रान्स के मध्य सागर के नीचे बनाई गई तीनों रेल सुरंगें किरणों की सहायता से तैयार की गई थीं। इन सुरंगों की इंग्लैण्ड और फ्रान्स दोनों ओर से खुदाई आरम्भ की गई थी और जब सागर में दोनों ओर से आती हुई सुरंगें एक दूसरे से मिलीं तो वे एक दूसरे के आमने सामने थीं। लेसर किरणों के और भी अनेक महत्वपूर्ण उपयोग हैं। इनकी सहायता से फसलों की सुरक्षा की जा सकती है। फसलें शीघ्र प्राप्त की जा सकती हैं, पर्यावरण प्रदूषण का अध्ययन किया जा सकता है, भूकम्प का पूर्वानुमान लगाया जा सकता है एवं मौसम विज्ञान सम्बन्धी अनेक जानकारियां प्राप्त की जा सकती हैं।

लेसर किरणें जहां एक ओर मानव के लिए वरदान हैं वहीं दूसरी ओर इनका दुरुपयोग करके सम्पूर्ण मानवता का विनाश भी किया जा सकता है। आजकल जिस प्रकार परमाणु हथियारों, मिसाइलों एवं इसी प्रकार के अन्य अस्त्रों-शस्त्रों में लेसर का उपयोग किया जा रहा है, उससे यह स्पष्ट है कि लेसर किरणों द्वारा मानवता के विनाश की आशंका निर्मूल नहीं है। वास्तव में लेसर किरणों की शक्ति और क्षमता को देख कर बहुत पहले ही कुछ वैज्ञानिकों ने इसके विध्वंसक स्वरूप की चेतावनी दी थी। 7 जुलाई, 1960 में जब विश्व की पहली लेसर किरण तैयार की गई थी तभी एक अमरीकी वैज्ञानिक ने इसे "डेथ रे" अर्थात् "मौत की किरण" नाम दे डाला था।

लेसर किरणों के रचनात्मक उपयोग के साथ ही इसके विध्वंसक उपयोग पर भी शोधकार्य आरम्भ हो गए थे। इस दिशा में संयुक्त राज्य अमरीका सबसे आगे है। संयुक्त राज्य अमरीका के साथ ही रूस, चीन, फ्रान्स, इंग्लैण्ड आदि देशों में भी लेसर किरणों के विध्वंसक उपयोग पर बहुत बड़े स्तर पर कार्य हो रहा है। वर्तमान समय में लेसर किरणों की सहायता से लेसर डेजिगनेटर जैसे खतरनाक यंत्र बनाए जा चुके हैं। लेसर युक्त हथियारों की सहायता से किसी भी देश के महत्वपूर्ण ठिकानों, जमीन पर आगे बढ़ते टैंकों, छोटे-बड़े सभी प्रकार के विमानों तथा सागर की अथाह गहराइयों में विचरण करती हुई पनडुब्बियों आदि पर आक्रमण किए जा सकते हैं। लेसर यंत्रों से युक्त हथियारों के निशाने अचूक होते हैं और सीधे अपने लक्ष्य पर प्रहार करते हैं। संयुक्त राज्य अमरीका द्वारा इस प्रकार के लेसर युक्त हथियारों का सफलतापूर्वक उपयोग विएतनाम युद्ध, खाड़ी युद्ध और अफगानिस्तान युद्ध में किया जा चुका है। युद्ध में काम आने वाले खतरनाक और घातक हथियारों में प्रायः याग लेसर, ग्लास लेसर और कार्बन डार्डऑक्साइड लेसर किरणों का उपयोग किया जाता है, किन्तु विश्व के कुछ विकसित देशों ने अब युद्धक हथियारों में रासायनिक लेसर, डायोड लेसर, मुक्त इलेक्ट्रान लेसर आदि का उपयोग आरम्भ कर दिया है। ये सभी अत्याधुनिक लेसर किरणें हैं तथा इनकी विध्वंसक क्षमता बहुत अधिक है। इस प्रकार की लेसर किरणों की तकनीक अत्यन्त गुप्त रखी गई है, अतः विश्व के अधिकांश देशों के पास इनकी कोई विशेष जानकारी उपलब्ध नहीं है।

लेसर युक्त हथियारों का अनेक प्रकार से उपयोग किया जा सकता है। इन हथियारों से जमीन से जमीन पर मार की जा सकती है, जमीन से हवा में मार की जा सकती है। हवा से जमीन पर मार की जा सकती है तथा हवा से हवा में मार की जा सकती है। लेसर युक्त यंत्रों का नौसेना में भी दिन-प्रतिदिन उपयोग बढ़ता जा रहा है। लेसर युक्त हथियार बहुत ही हल्के होते हैं, अतः इन्हें एक स्थान से दूसरे स्थान पर सरलता से ले जाया जा सकता है। इसके साथ ही सभी प्रकार के जलयानों, वायुयानों एवं जमीन पर काम आने वाले वाहनों में भी इन्हें लगाया जा सकता है। लेसरयुक्त हथियार इतने छोटे और हल्के होते हैं कि साधारण हेलीकाप्टरों में भी इनका उपयोग किया जा सकता है।

लेसर युक्त हथियारों की कार्य प्रणाली बड़ी जटिल होती है। प्रायः अलग-अलग प्रकार के हथियारों में अलग-अलग प्रकार की लेसर किरणों का उपयोग किया जाता है। इन लेसर किरणों की क्षमता और शक्ति में भी काफी भिन्नता होती है। लेसर युक्त हथियारों द्वारा किसी लक्ष्य को निशाना बनाने के लिए प्रायः उस लक्ष्य के एक भाग को लेसर किरणों द्वारा प्रकाशित करके लक्ष्य की दूरी मालूम की जाती है और फिर उस लक्ष्य पर प्रहार करके उसे नष्ट कर दिया जाता है। लेसर किरणें एक सीधी रेखा में चलती हैं और बहुत कम बिखरती हैं, अतः प्रकाश की गति और प्रकाश के परावर्तन के नियम का उपयोग करके लक्ष्य तक की बिल्कुल ठीक-ठीक दूरी सरलता से मालूम की जा सकती है। लेसर किरणें वर्षा, बादल कोहरा आदि को भेदती हुई आगे बढ़ने की

शक्ति रखती हैं तथा लक्ष्य से टकराकर परावर्तित होकर पुनः वापस आ जाती हैं अतः सभी प्रकार के मौसमों में, आसमान साफ हो अथवा बादलों और कोहरे से भरा हुआ, लेसर किरणों द्वारा लक्ष्य की दूरी नापने और उस पर प्रहार करने का कार्य किया जा सकता है।

युद्ध क्षेत्र में किसी भी लक्ष्य का ठीक-ठीक निशाना लगाने के लिए उसकी दूरी मालूम करना अत्यन्त आवश्यक होता है, दूरी की जानकारी जितनी ठीक होगी, निशाना उतना ही अचूक होगा। यही कारण है कि वर्तमान समय के सभी अत्याधुनिक युद्धक विमानों -बी-2, सुखोई, एफ-16, मिराज, जेगुआर आदि में लेसर युक्त दूरी मापक यंत्र लगाए गए हैं। संयुक्त राज्य अमरीका के वैज्ञानिकों ने बहुत छोटे और हल्के लेसर युक्त दूरी मापक यंत्र तैयार किये हैं। इन यंत्रों को युद्ध में काम आने वाली सामान्य तोपों और बन्दूकों में प्रयुक्त किया जा रहा है।

लेसर किरणों का उपयोग युद्ध में काम आने वाले राडारों में भी किया जाने लगा है। इन राडारों को "लिडार" कहते हैं। लिडार बहुउपयोगी होते हैं। ये इतने हल्के होते हैं कि इनका हेलीकाप्टरों में भी उपयोग किया जा सकता है। लिडार युक्त हेलीकाप्टरों की सहायता से शत्रु के वायुयानों एवं उनके ठिकानों का सरलता से पता लगाया जा सकता है। ये हेलीकाप्टर थल सेना के साथ ही वायुसेना और नौसेना में बड़ी तेजी से लोकप्रिय हो रहे हैं। लिडार युक्त हेलीकाप्टर युद्ध क्षेत्र में टोही कार्यों के लिए सर्वोत्तम माने जाते हैं।

लेसर किरणों का सर्वाधिक विध्वंसक उपयोग संयुक्त राज्य अमरीका में किया गया है। संयुक्त राज्य अमरीका ने 23 मार्च, 1991 को "स्टारवार योजना" की घोषणा की। स्टारवार मूल रूप से एक प्रकार का अन्तरिक्ष युद्ध है तथा लेसर पर आधारित है। "स्टारवार योजना" अभी तक के सभी युद्धों से अधिक भयानक और खतरनाक योजना है। इसका उद्देश्य यूं तो तात्कालीन सोवियत संघ की न्यूक्लियर बेलिस्टिक मिसाइलों से संयुक्त राज्य अमरीका की रक्षा करना था, किन्तु अब सोवियत संघ के विघटन के बाद स्टारवार योजना पर पुनः कार्य करना इस बात का प्रमाण है कि अमरीका लेसर किरणों के बल पर विश्व का सर्वाधिक शक्तिशाली देश बनना चाहता है।

संयुक्त राज्य अमरीका की स्टारवार योजना बड़ी स्पष्ट है। इस योजना के अनुसार सर्वप्रथम कृत्रिम उपग्रहों द्वारा विश्व के कोन-कोने पर नजर रखी जायेगी और जैसे ही कोई देश न्यूक्लियर बेलिस्टिक मिसाइलों से आक्रमण करता है तो लेसर युक्त अमरीकी मिसाइलें अमरीका अथवा उसके मित्र देशों से निकलेंगी और आक्रमण करने वाली मिसाइल अथवा मिसाइलों को उड़ान भरने के पूर्व ही नष्ट कर देगी। यदि किसी कारण से सुरक्षात्मक मिसाइलें छोड़ने में कुछ विलम्ब हो जाता है तो लेसर युक्त मिसाइलें शत्रु की मिसाइलें को लक्ष्य पर पहुंचने के पूर्व रास्ते में ही नष्ट कर देंगी। सामान्यतया न्यूक्लियर बेलिस्टिक मिसाइलों को रॉकेट द्वारा भेजा जाता है। इस कार्य के लिए जो रॉकेट उपयोग में लाये जाते हैं, उनकी क्षमता 26000 किलोमीटर प्रति घण्टा होती है। जबकि लेसर किरणों की गति 3 लाख किलोमीटर प्रति सेकेण्ड होती है, अतः, पलक

झपकते ही शत्रु के आक्रमण का पता लगाया जा सकता है। संयुक्त राज्य अमरीका ने स्टारवार योजना में अपना "मिसाइल डिफेन्स सिस्टम" इतने वैज्ञानिक ढंग से तैयार किया है कि शत्रु देश की मिसाइलें अमरीका और उसके मित्र देशों तक पहुंच ही नहीं पाएंगी।

स्टारवार योजना का उद्देश्य कुछ भी कहा जाए, किन्तु वास्तव में यह एक खतरनाक अंतरिक्षीय युद्ध की योजना है। स्टारवार योजना यदि अमरीका विकसित करता है तो निश्चित रूप से विश्व के अन्य देश भी इसी तरह की योजनाओं का विकास करेंगे। अतः भविष्य में स्टारवार अर्थात् अन्तरिक्षीय युद्ध निश्चित रूप से होगा। अन्तरिक्षीय युद्ध कितना भयानक होगा? इसकी केवल कल्पना ही की जा सकती है। हो सकता है कि अन्तरिक्षीय युद्ध होने पर पृथ्वी से पूरी तरह जीवन समाप्त हो जाए अथवा पृथ्वी ही नष्ट हो जाए। इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि लेसर किरणों ने एक ओर मानव के सामने विकास के अनेक द्वार खोल दिए हैं तो दूसरी ओर सम्पूर्ण पृथ्वी को ही विनाश के कगार पर खड़ा कर दिया है। वास्तव में लेसर किरणों एक प्रकार की महाशक्ति हैं। इन किरणों का उपयोग मानव की प्रगति, सुख और शान्ति के लिए किया जा सकता है और उसके विनाश के लिए भी। अब यह मानव पर निर्भर करता है कि वह लेसर किरणों का उपयोग किस प्रकार करता है।

विभागाध्यक्ष—हिंदी, शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, 100 पंचशील नगर, सिविल लाइन्स, दतिया-475661 (म. प्र.)

पर्यावरण में अदृश्य प्रदूषण एवं जन स्वास्थ्य

— डॉ. डी. डी. ओझा

सामान्यतौर पर मिट्टी, वायु एवं जल में हो रहे प्रदूषण से हम सभी अवगत हैं परंतु कुछ अदृश्य प्रदूषण भी हैं जिनसे भी हमारा स्वास्थ्य प्रतिकूल रूप से प्रभावित होता है। ऐसे अदृश्य प्रदूषण में ध्वनि, तरंग तथा घरेलू प्रदूषण को लिया जाता है। हमारे मनोरंजन, परिवहन, सामाजिक क्रियाकलाप तथा औद्योगिकीकरण के फलस्वरूप ध्वनि प्रदूषण का उग्ररूप दृष्टिगोचर हुआ है जिससे न केवल मानव वरन् मवेशी भी कुप्रभावित हुए हैं।

बहुत कम प्रचार के कारण अत्यल्प लोग ही जानते होंगे कि विद्युत चुम्बकीय तरंगों भी प्रदूषण उत्पन्न करती हैं जो मानव शरीर पर कई हानिकारक प्रभाव पैदा कर सकती हैं, परंतु दैनिक जीवन में प्रयुक्त होने वाली इन तरंगों द्वारा उत्पन्न प्रदूषण की ओर अनायास ध्यान नहीं जाता है क्योंकि यह प्रदूषण न तो दिखता है और न ही महसूस किया जा सकता है। तरंगों से कोई भी अछूता नहीं है। यह बात अलग है कि कहीं यह ज्यादा है तो कहीं कम।

वस्तुतः तरंगों का अपना अलग ही विज्ञान है। ध्वनि, प्रकाश एवं विद्युत चुम्बकीय तरंगे, तीनों ही तरंगों के अलग-अलग स्वरूप हैं जो कि तरंगदैर्घ्य (Wavelength) या आवृत्ति (frequency) पर आधारित होते हैं। कम्पन की इकाई आवृत्ति कहलाती है। सैंकड़ में एक बार कांपने को 1 हर्ट्ज कहते हैं। तरंगों को उसकी दूसरी इकाई तरंग दैर्घ्य से भी व्यक्त किया जाता है। शार्ट वेव, मीटर वेव, तथा माइक्रोवेव आदि नाम इसी पर आधारित हैं। जबकि आवृत्ति आधारित तरंगों के नामों यथा उच्च आवृत्ति, (High Frequency) अति उच्च आवृत्ति (Very High Frequency) या परा उच्च आवृत्ति (Ultra High frequency) को भी यदा-कदा इस्तेमाल करते हैं।

विद्युत चुम्बकीय तरंगें दूर संचार, टी वी रेडियो, उपग्रहीय संचार उद्योगों, रक्षा क्षेत्रों के अलावा अन्य कार्यों में अब प्रयुक्त हो रही हैं। ये तरंगे भिन्न-भिन्न आवृत्तियों के कारण अलग-अलग कार्यों में इस्तेमाल की जाती हैं। टेलीविजन के लिए प्रयुक्त होने वाली तरंगें उपग्रहीय, संचार में प्रयोग में नहीं लाई जा सकती हैं तो सूक्ष्म तरंगों का उपयोग रेडियो प्रसारण में नहीं होता है। कम शक्ति की उच्च आवृत्ति की तरंगे सर्वत्र वायुमंडल में विद्यमान है। अंतरिक्ष में घूम रहे ग्रहों से, पृथ्वी के चारों ओर चक्कर काटते मानव निर्मित उपग्रहों से, रेडियो प्रसारण, टेलीविजन प्रसारण, माइक्रोवेव स्टेशनों, उच्च शक्ति की विद्युत परीक्षण लाइनों आदि से तरंगें हर समय निकलती रहती हैं।

इन तरंगों को हम निरापद मानते रहे हैं परंतु ये तरंगे ही तब घातक बन जाती हैं जब कि मानव शरीर इनके निकट प्रभाव में रहता है। यह प्रेक्षित किया जा चुका है कि अति उच्च आवृत्ति, परा उच्च आवृत्ति एवं अत्यधिक उच्च आवृत्ति वाली तरंगें मानव स्वास्थ्य के लिए नुकसानदायक होती हैं। हमारी त्वचा पर पड़ने पर ये ऊष्मा उत्पन्न करती है तथा शरीर के अंदर प्रवेश करके ऊतकों को निष्क्रिय बना देती है तथा उनकी डी.एन.ए. संरचना को बदल कर दूरगामी परिणामों को जन्म दे सकती हैं। उदाहरण के तौर पर यदि 200 मेगा हर्ट्ज आवृत्ति की तरंगों को 40 मिनट तक चूहे के ऊपर डाला जाए तो वह मर जाता है।

इन तरंगों के आंखों पर पड़ने से आंखों की पुतली व लेंस पर बुरा प्रभाव पड़ता है। इसके अतिरिक्त इनके लगातार आंखों पर पड़ने से उनमें मोतियाबिन्द हो सकता है, चूंकि हमें ये तरंगें दिखाई नहीं देती हैं इस कारण इनके कारणों का सहज पता नहीं चलता है। टेलीविजन सेट को निकट से देखने पर भी आंखों में कमजोरी आना एक सहज सा अनुभव है जो कि हम महसूस भी करते हैं। रंगीन टेलीविजन सेटों से अधिक मात्रा में एक्स किरणें निकलती हैं, जो कि टेलीविजन के पर्दे को पार करके उसे देखने वाले की आंखों व शरीर पर पड़ कर उसे प्रभावित करती है। यही कारण है कि टी वी कार्यक्रम को देखने के लिए एक सुरक्षित दूरी बताई जाती है। यही बात कम्प्यूटरों पर लगातार काम करने वालों के साथ होती है। श्वेत-श्याम पर्दे वाले की अपेक्षा रंगीन पर्दे वाले कम्प्यूटरों से उपेक्षाकृत अधिक नुकसानदायक विकिरण आंखों व दिमाग को प्रभावित करते हैं।

इसी प्रकार उच्च शक्ति वाली विद्युत परीक्षण लाइनों एवं उच्च क्षमता वाले ट्रांसफार्मरों के आस-पास उत्पन्न विद्युत चुम्बकीय क्षेत्र मानव शरीर पर प्रभाव डालता है। कुछ प्रयोगों में यह पाया गया कि ऐसे क्षेत्र में लगातार रहने वाले व्यक्ति में कैंसर की संभावना बढ़ सकती है। इसी प्रकार घर के अंदर लगे घरेलू उपकरण भी अनेक प्रकार की कम शक्ति की तरंगे उत्पन्न करते रहते हैं।

उच्च शक्ति की सूक्ष्म तरंगें (आवृत्ति 300 मेगा हर्ट्ज से 30 गीगा हर्ट्ज) पुरुष की प्रजनन क्षमता को प्रभावित कर सकती है। इसी प्रकार महिलाओं के मासिक चक्र पर भी इसका प्रभाव देखा गया है। गर्भवती महिलाओं में तरंगें गर्भस्थ शिशु के लिए हानिकारक होती हैं। इन तरंगों के अधिक मात्रा में पड़ने से सिरदर्द, बैचेनी, आंखों के आगे धुंधलापन तथा चक्कर जैसे लक्षण उत्पन्न हो सकते हैं। परीक्षणों में पाया गया है कि सूक्ष्म तरंग व मिलीमीटर तरंग, जो कि अति उच्च आवृत्ति (Very High Frequency) से अत्यधिक उच्च आवृत्ति के मध्य से आती है, पशुओं में रक्त कैंसर की संभावना को बहुत बढ़ा देती है। ऐसी उच्च शक्ति की तरंगें रेडार, केन्द्रों, आकाशवाणी, रेडियो स्टेशनों, टेलीविजन स्टेशनों, सूक्ष्मतरंग केन्द्रों, भू-उपग्रहीय केन्द्रों के आस-पास अधिक तीव्र होती है तथा दूरी के ज्यादा बढ़ने पर उनकी तीव्रता कम होती चली जाती है। रसोई में प्रयुक्त होने वाली माइक्रोवेव अंगीठियों से भी कुछ सूक्ष्म तरंगें रिसकर उसके निकटवर्ती व्यक्ति पर प्रभाव डाल सकती हैं।

प्रायः यह देखा गया है कि नए संचार उपकरणों व विधाओं ने तरंग प्रदूषण बढ़ाने में कोई कसर नहीं रख छोड़ी है। रेडिया पेजरों में भी सूक्ष्म तरंग की आवृत्ति को प्रयोग में लाया जाता है। सैटेलाइट फोन में इन्हीं तरंगों का इस्तेमाल होता है। सेलुलर फोन से निकलने वाली सूक्ष्म तरंगें भी हानिकारक होती हैं। विद्युत चुम्बकीय प्रदूषण एक ऐसे किस्म का प्रदूषण है जिसकी ओर अभी कम ही ध्यान दिया जाता रहा है। परन्तु आज के परिपेक्ष्य में इस प्रकार के प्रदूषण के बारे में आम आदमी को सचेत करने के साथ-साथ इनसे बचाव के तरीकों को ढूंढने व अपनाने की आवश्यकता है।

स्वच्छता-विषाक्तता का मेल—यह प्रेक्षित किया गया है कि तरल तथा पाउडर के रूप में विद्यमान विरंजक सबसे अधिक प्रदूषक घरेलू रसायन होते हैं। ये पदार्थ जीवाणुओं को सिर्फ मारते ही नहीं वरन् उन्हें मार कर पाखानों में बहा देने के बाद भी उन्हें मारते रहते हैं। इसका परिणाम यह होता है कि ये विरंजक उन जीवाणुओं को भी नष्ट कर देते हैं जो मल मूत्र का भक्षण कर उसे हानि रहित बनाते हैं।

हमारे स्नानघर की अलमारी में दवाओं के अलावा, कई प्रकार के रसायन- उत्पाद होते हैं। मसलन टूथपेस्ट में ट्राइटेनियम डाइऑक्साइड (जिसका उपयोग सफेद पेंट में भी होता है) तरल पेराफिन तथा वहीं अपमार्जक होता है जिसका उपयोग कई धोने के पाउडरों में होता है।

सभी घरेलू चीजों में संभवतः सबसे अधिक प्रयोग में लाई जाने वाली वस्तु है - अपमार्जक पाउडर (Detergent powder) साबुन बनाने के लिए जिस कच्चे तेल का प्रयोग किया जाता है उसमें आई कमी के कारण, परम्परागत साबुन के उत्पादन में भी कमी आयी है तथा डिटरजेंट साबुन का उत्पादन भी बहुत अधिक बढ़ गया है। ये डिटरजेंट साबुन और पाउडर में परम्परागत साबुन के विपरीत ऐसे रसायन होते हैं जो जैवनिम्नीकृत नहीं होते हैं तथा जिनके कारण नदी-नालों, झील, तालाब आदि में प्रदूषण होता है।

यह देखा गया है कि खाना बनाने और भोजन करने वाले बर्तनों को डिटरजेंट या अपमार्जक से धोने से इसका कुछ भाग बर्तनों पर ही लगा रह जाता है तथा भोजन बनाते समय तथा इन बर्तनों में भोजन या पानी रखने से इसका कुछ भाग भोजन और पीने के पानी में समा जाता है। ऐसा अनुमान लगाया गया है कि इस तरह व्यक्ति अपने भोजन के साथ प्रतिदिन 2 मि.ग्रा. तक डिटरजेंट ले लेता है। गरमी के दिनों में यह स्थिति और भी भयावह हो जाती है क्योंकि पानी की कमी के कारण बर्तनों को कम पानी से धोया जाता है तथा लोग भी अधिक मात्रा में पानी का सेवन करते हैं। एक आंकलन के अनुसार इस मौसम में अन्य की तुलना में 3 से 5 मि. ग्रा. डिटरजेंट की मात्रा शरीर के भीतर चली जाती है। डिटरजेंट से सबसे अधिक हानि तो त्वचा को होती है क्योंकि इससे त्वचा में जलन, खुजली तथा यहां तक कि फफोले भी हो सकते हैं।

चूंकि रासायनिक स्वच्छता प्रसाधन इस ढंग से बनाए जाते हैं कि उनसे तत्काल परिणाम प्राप्त हों, वे बहुत शक्तिशाली तथा हानिकारक होते हैं। उदाहरण के तौर पर शौचालय क्लीनर्स

(Toilet cleaners) में रासायनिक "क्लीनरों" में ब्लीच होता है जिससे बांद में सोडियम हाइपोक्लोराइड उत्पन्न होता है। यह एक "कास्टिक" दाहक पदार्थ होता है जो पानी को प्रदूषित करके जल-मल का जीवाणु-संतुलन नष्ट कर देता है। इसका विकल्प सिरका है जिसका गाढ़ा घोल गंदगी की परतों को बिना प्रदूषण फैलाए दूर कर सकता है। प्रसाधन साबुन, डिटरजेंट तथा क्रोकररी धोने के पाउडरों में फास्फेट होते हैं जो जलीय जीवन को नुकसान पहुंचाते हैं। डिटरजेंटों में चर्बी तेजी से घुल जाती है और उसके साथ ही त्वचा के नैसर्गिक तेल भी घुल जाते हैं। मीठे पानी वाले क्षेत्रों में गरम पानी तथा साबुन से भी यह काम आराम से हो सकता है।

बहुत सारे उपभोक्ता सुनहरे विज्ञापनों से मोहित होकर "एयर प्यूरिफायर" या वायु रोधक का प्रयोग करने लगे हैं तथा बाथरूम, टॉयलेट तथा कार्यालयों में भी लगाते हैं। इन वायु रोधकों में एक प्रकार का कीटनाशक-पेराडाक्लोरोबैन्जीन होता है जो वाष्प बन कर कमरों में फैलता है तथा बंद कमरों में इसकी सीमा विषाक्त स्तर तक पहुंच जाती है। इसकी गंध जितनी तेज होगी, कमरे में इसकी वाष्प की मात्रा उतनी ही अधिक होगी। इसके फलस्वरूप वायु शुद्ध न होकर विषैली बन जाती है।

घरों के भीतर प्रदूषण का एक अन्य मुख्य कारण स्पंज रबड़ तथा फोम का प्रयोग भी है। स्पंज के गद्दों में सोने से लोगों की त्वचा में एलर्जी उत्पन्न हो जाती है तथा रीड की हड्डी प्रभावित होती है तथा वे अनिद्रा, थकावट, बेचैनी तथा चिड़चिड़ेपन आदि के भी शिकार हो जाते हैं।

वार्निश तथा पेन्ट से भी घरों के भीतर प्रदूषण फैलता है खासकर जब उनका प्रयोग तुरंत किया गया हो। ऐसे वार्निश तथा पेन्ट्स से फॉर्मैल्डिहाइड नामक कार्बनिक रसायन वायु में वाष्पित होता है जो श्वास के माध्यम से शरीर में प्रवेश कर हानि पहुंचाता है। अतः वार्निश तथा पेन्ट करने के उपरांत घरों के दरवाजे तथा खिड़कियों को खोलकर रखना चाहिए तथा पंखें चला देने चाहिए जिससे हानिकारक गैस भाप बनकर बाहर निकल जाए इसी प्रकार कई टेलकम पाउडरों में भी कई विषैले रसायन मिला दिए जाते हैं जो कि विभिन्न प्रकार के त्वचा रोग एवं जलन उत्पन्न करते हैं।

अतः आज के परिपेक्ष्य में यह नितान्त आवश्यक है कि जन साधारण को घरेलू एवं अदृश्य प्रदूषण से अवगत करवाया जाए तथा यह सलाह भी दी जाए कि रसायनों से मिश्रित सौन्दर्य प्रसाधनों का कम से कम प्रयोग किया जाए तथा प्राकृतिक पदार्थों से निर्मित वस्तुओं का अधिक प्रयोग करें।

"गुरु कृपा" ब्रह्मपुरी हजारी चबूतरा, जोधपुर-342001

राजभाषा कार्यान्वयन संबंधी गतिविधियां

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियां

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, रायपुर की 47वीं बैठक मुख्य महाप्रबंधक दूरसंचार, छत्तीसगढ़ परिमंडल श्री जी.एस. भाटिया की अध्यक्षता में 26 नवम्बर, 2001 को सम्पन्न हुई। बैठक में 52 सदस्य कार्यालयों में हुई राजभाषा प्रगति की समीक्षा की गई।

दिनांक 28-11-2001 को कटक नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की 18वीं बैठक आकाशवाणी, कटक के केन्द्र निदेशक श्री मुरलीधर साहु की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। बैठक में यह निर्णय लिया गया कि राजभाषा अधिनियम की धारा 3 (3) के शत-प्रतिशत अनुपालन को सुनिश्चित किया जाए और राजभाषा नियम 5 के अनुसार हिंदी में प्राप्त पत्रों के उत्तर अनिवार्यतः हिंदी में ही दिए जाएं।

दिनांक 23-11-2001 को भारतीय कपास निगम, इन्दौर के सभागार में नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (उपक्रम) की वर्ष 2001-2002 की द्वितीय छमाही बैठक नेशनल इंश्योरेंस कंपनी, इन्दौर के क्षेत्रीय प्रबंधक श्री श्रीकांतपा भिड़े की अध्यक्षता में हुई। बैठक में राजभाषा हिंदी की प्रगति से संबंधित छमाही रिपोर्ट की समीक्षा की गई।

बैंक नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, भोपाल की 34वीं बैठक सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया, केंद्र कार्यालय, मुंबई के महाप्रबंधक श्री धनश्याम गुप्ता की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। बैठक में सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया, भोपाल के उप महाप्रबंधक श्री वीरेन्द्र सिंह, भारतीय रिजर्व बैंक के उप महाप्रबंधक श्री आर.के.टण्डन, राष्ट्रीय कृषि और ग्रामीण विकास बैंक के महाप्रबंधक श्री बी.के. श्रीवास्तव और भारतीय औद्योगिक विकास बैंक के महाप्रबंधक श्री के.वी. चन्द्रशेखर उपस्थित थे। श्री गुप्ता ने तिमाही रिपोर्टों की समीक्षा करते हुए बैंकों में राजभाषा हिंदी में हो रहे कार्य पर प्रसन्नता जाहिर की। उन्होंने सभी सदस्य कार्यालयों के प्रतिनिधियों से अनुरोध किया कि वे कंप्यूटर पर हिंदी साफ्टवेयर लोड कराने को प्राथमिकता दें।

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, सिलचर की 24वीं बैठक हिंदुस्तान पेपर कारपोरेशन लिमिटेड, कछाड़ पेपर मिल, पंचग्राम के अतिथि गृह में दिनांक 2-11-2001 को मुख्य अधिशासी श्री प्रहलाद सिंह निर्वाण की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। उन्होंने कहा कि बैठक में उपस्थित सभी सदस्य अपने-अपने कार्यालयों में राजभाषा हिंदी का प्रयोग गर्व से करें, संकोच से नहीं।

दिनांक 31-10-2001 को नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, कोटा की बैठक मंडल रेल प्रबंधक, कोटा श्री आई. सी. शर्मा की अध्यक्षता में हुई। नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति ने राजभाषा विभाग द्वारा निर्धारित कार्यक्रम के लक्ष्यों को पूरा करने पर जोर दिया।

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, कलकत्ता की 31वीं बैठक दिनांक 30 अगस्त, 2001 को यूनाइटेड बैंक ऑफ इंडिया के अध्यक्ष और प्रबंध निदेशक श्री मधुकर की अध्यक्षता में संपन्न हुई। बैठक में राजभाषा विभाग के संयुक्त सचिव (राजभाषा) श्री मदन लाल गुप्ता भी उपस्थित थे। उन्होंने सभी सदस्यों से राजभाषा हिंदी के प्रगामी प्रयोग के लिए सतत् प्रयास करने का अनुरोध किया।

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, जयपुर की 41वीं अर्धवार्षिक बैठक दिनांक 29 अगस्त, 2001 को श्री वीरेन्द्र कुमार महालेखाकार (लेखा व हक) की अध्यक्षता में संपन्न हुई। बैठक में समीक्षा के दौरान यह पाया गया कि केवल 8 सदस्य कार्यालयों ने कार्यशालाओं का आयोजन किया। अन्य कार्यालयों से अनुरोध किया गया कि वे भी अपने कार्यालयों में कार्यशालाओं का आयोजन करें।

बैंक नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति मेरठ के तत्वावधान में एक हिंदी प्रश्नोत्तरी (क्विज) प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें नगर के विभिन्न कार्यालयों के 35 प्रतिनिधियों ने भाग लिया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि अपर आयुक्त आयकर मेरठ रेंज श्री जो.पी हिलौरी ने प्रतिभागियों को संबोधित करते हुए कहा कि केनरा बैंक में प्रतियोगिता को अत्यंत आकर्षक ढंग से आयोजित किया गया है। भाषण में सहायक प्रबंधक श्री आई.एन. शर्मा ने कहा कि बैंक सदैव भारत सरकार द्वारा निर्धारित किए गए लक्ष्यों को हासिल करता रहा है तथा राजभाषा हिंदी का कार्यान्वयन सुचारू रूप से चल रहा है।

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, मणिपुर (इम्फाल) की वर्ष 2001 की द्वितीय अर्धवार्षिक बैठक दिनांक 28 दिसंबर 2001 को महालेखाकार मणिपुर श्री के.जी. महालिंगम की अध्यक्षता में संपन्न हुई। उन्होंने सभी सदस्य कार्यालयों के प्रतिनिधियों को संबोधित करते हुए कहा कि राजभाषा हिंदी का अधिकाधिक प्रयोग करना सभी कार्यालयों के अधिकारियों और कर्मचारियों का वैधानिक दायित्व है।

बैंक नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, अहमदाबाद की 30वीं छमाही बैठक 27 जनवरी, 2002 को समिति के संयोजक देना बैंक द्वारा आयोजित की गई। बैठक की अध्यक्षता देना बैंक के महाप्रबंधक श्री पुरुषोत्तम कुमार ने की। राजभाषा विभाग के क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय के उप निदेशक श्री शिवानंद धूतरे मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे। श्री धूतरे ने कहा कि बैंकों द्वारा रिपोर्टों में वास्तविक आंकड़े प्रस्तुत किए जाने चाहिए। उन्होंने कहा कि अधिकांश बैंकों के सभी कर्मचारियों और अधिकारियों को हिंदी का कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त है पर फिर भी पत्राचार के लक्ष्य में अपेक्षा के अनुसार वृद्धि नहीं हो पाई। उन्होंने मूल कार्य हिंदी में करने पर बल दिया। श्री पुरुषोत्तम कुमार ने कहा कि समिति के कार्यक्रमों में निरन्तर वृद्धि हो रही है। उन्होंने सभी प्रतिनिधियों से अनुरोध किया कि वे राजभाषा के कार्यान्वयन का कार्य एक मिशन भावना से करें।

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, जम्मू की छमाही बैठक क्षेत्रीय अनुसंधान प्रयोगशाला के निदेशक एवं नराकास अध्यक्ष श्री जी.एन. काजी की अध्यक्षता में दिनांक 20 दिसंबर, 2001 को हुई। बैठक में क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय, गाजियाबाद के उप निदेशक डा. राजबहादुर सिंह भी उपस्थित थे। बैठक में नराकास सदस्य कार्यालयों के लगभग 70 प्रतिशत सदस्य उपस्थित थे। बैठक में राजभाषा हिंदी के प्रयोग को बढ़ाने हेतु वार्षिक कार्यक्रम के कार्यान्वयन की स्थिति की समीक्षा की गई और कार्यालयों में हिंदी के प्रयोग को बढ़ाने संबंधी विचार-विमर्श किया गया।

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, चण्डीगढ़ द्वारा 20-12-2001 को वार्षिक राजभाषा समारोह मनाया गया जिसकी अध्यक्षता आयकर आयुक्त एवं नराकास अध्यक्ष श्री जे. एस. आहलुवालिया ने की। तकनीकी शिक्षक प्रशिक्षण संस्थान के प्राचार्य डा. एस. कृष्णमूर्ति ने समिति द्वारा हिंदी के प्रचार प्रसार के लिए किए जा रहे प्रयासों की सराहना की। समिति द्वारा हिंदी निबंध प्रतियोगिता, हिंदी शब्द ज्ञान प्रतियोगिता कंप्यूटर पर हिंदी टाइप प्रतियोगिता, अनुवादकों के लिए कार्यशाला और कंप्यूटर पर राजभाषा कार्यशाला आदि का आयोजन किया गया। इस बीच समिति द्वारा वार्षिक पत्रिका "शिवालिका चण्डीगढ़" के तीसरे अंक को भी प्रकाशित किया गया। अध्यक्षीय भाषण में श्री आहलुवालिया ने कहा कि आजादी के इतने वर्षों के पश्चात् भी हमें बार-बार यह याद दिलाने की आवश्यकता नहीं होनी चाहिए कि हिन्दी हमारी राजभाषा है और हमें सरकार द्वारा निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त करना है। उन्होंने कहा कि हमें राजभाषा विभाग द्वारा निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए ईमानदारी से प्रयास करना चाहिए।

वडोदरा नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की 38वीं बैठक 25 जनवरी, 2002 को केन्द्रीय उत्पाद एवं सीमा शुल्क वडोदरा के आयुक्त श्री के.सी. ममगौन की अध्यक्षता में संपन्न हुई। उन्होंने कहा कि वर्ष 2001-02 के वार्षिक कार्यक्रम का पूर्ण रूप से पालन करना आवश्यक है। उन्होंने इस बात की ओर ध्यान आकर्षित करते हुए यह कहा कि जिन कार्यालयों का हिंदी पत्राचार का प्रतिशत बहुत कम है। उन्हें इस बारे में विशेष ध्यान देने और उसमें सुधार करने की बहुत आवश्यकता है।

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति करगों की छठी बैठक 5 फरवरी, 2002 को केन्द्रीय रोपण फसल अनुसंधान संस्थान; तासरगोड के निदेशक डा० वी. राजगोपाल की अध्यक्षता में आयोजित की गई। उन्होंने उपस्थित प्रतिनिधियों को संबोधित करते हुए कि हम नराकास के लक्ष्य की ओर बढ़ रहे हैं। बैठक में यह निर्णय लिया गया कि हिंदी पत्रों की आवृत्ति के लिए प्रत्येक कार्यालय में एक रजिस्टर रखा जाए। राजभाषा नियमों के अनुपालन, जांच बिन्दु बनाए जाएं और हिंदी पत्रिकाओं के प्रकाशन हेतु प्रयास किए जाएं।

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, हासन की 14वीं बैठक दिनांक 18 फरवरी, 2002 को समिति के अध्यक्ष एवं इनसैट, एम सी एफ के निदेशक श्री एम वाई एस प्रसाद की अध्यक्षता में संपन्न हुई। उन्होंने कहा कि हमें वार्षिक कार्यक्रम में निर्धारित लक्ष्यों के अनुसार हिंदी में अधिक से अधिक काम करना चाहिए। उन्होंने आशा व्यक्त की कि समिति के सभी सदस्य कार्यालयों के प्रतिनिधि राजभाषा के प्रचार प्रसार में अपना महत्त्वपूर्ण योगदान देंगे।

दिनांक 27 दिसंबर, 2000 को नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, उदयपुर की बैठक हुई। इसकी अध्यक्षता खान सुरक्षा निदेशालय, उदयपुर के उप-निदेशक श्री वी लक्ष्मीनारायण ने की।

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, त्रिशूर की 28वीं बैठक 29-11-2001 को लघु उद्योग सेवा संस्थान, त्रिशूर के निदेशक श्री बी. एस. शिंदे की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। अध्यक्ष महोदय ने समिति के सभी सदस्य कार्यालयों के प्रतिनिधियों से अनुरोध किया है कि वे सभी तिमाही प्रगति रिपोर्ट नियमित रूप से समय पर समिति कार्यालय में भेजना सुनिश्चित करें। वार्षिक कार्यक्रम में निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त करने हेतु पूरा प्रयास किया जाए।

हिंदी कार्यशालाएं

केन्द्रीय वैज्ञानिक उपकरण संगठन, चंडीगढ़

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, चंडीगढ़ के साथ दिनांक 5 से 6 दिसम्बर, 2001 तक दो दिवसीय संयुक्त हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमें संगठन के अलावा नगर के 6 कार्यालयों में कार्यरत 23 कर्मियों ने भाग लिया। कार्यशाला का उद्घाटन हरियाणा साहित्य अकादमी के अध्यक्ष एवं वरिष्ठ पत्रकार डा. चन्द्र त्रिखा ने किया। अपने सम्बोधन में उन्होंने कहा कि हिंदी भाषा बाजार में तेजी से अपनी पैठ बनाती जा रही हैं और अब वह समय दूर नहीं जब हिंदी भाषा का ज्ञान न होने पर हम अपने को पिछड़ा हुआ महसूस करेंगे। परिषद मुख्यालय के वरिष्ठ हिंदी अधिकारी डा. पूर्णपाल ने प्रतिभागियों को अपना दैनंदिन कार्य अधिकारिक हिंदी में करने का आह्वान किया।

राष्ट्रीय अनुसूचित जाति वित्त एवं विकास निगम, नई दिल्ली

दिनांक 9 जनवरी, 2002 को कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसकी अध्यक्षता डा. एस.पी. राय ने की। उन्होंने प्रतिभागियों को अधिकारिक हिंदी का प्रयोग करने के लिए आह्वान किया। निगम के प्रबंधक (वित्त) श्री वी.डी. शर्मा ने प्रतिभागियों के साथ वित्तीय विषयों पर चर्चा की और उनके प्रश्नों और समस्याओं का समाधान किया।

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली

मुख्यालय में 22 अक्टूबर, 2001 को वरिष्ठ अधिकारियों के लिए हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमें 19 वरिष्ठ अधिकारियों ने भाग लिया। रेलवे बोर्ड के भूतपूर्व निदेशक डा. महेश चंद्र गुप्त ने राजभाषा अधिनियम व नियमों के उपबंधों की व्याख्या की और प्रतिभागियों को सरकारी कामकाज में इसकी महत्ता व अनिवार्यता की जानकारी दी। उन्होंने सरकारी कामकाज हिंदी में करते समय प्रतिभागियों के कुछ महत्त्वपूर्ण बातें ध्यान में रखने के लिए कहा।

आकाशवाणी पणजी, गोवा

पणजी में 12 से 14 दिसंबर, 2001 तक त्रिदिवसीय हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। केन्द्र निदेशक श्री बी.डी. मजूमदार ने उद्घाटन किया। उन्होंने कहा कि हिंदी सरकार की राजभाषा है इसलिए सरकारी कामकाज में इसका ज्यादा से ज्यादा प्रयोग किया जाना हमारा संवैधानिक कर्तव्य है।

भारत हैवी प्लेट एण्ड वेसल्स लिमिटेड, विशाखापट्टनम

22 और 23 जनवरी, 2002 को विभिन्न श्रेणियों के कर्मचारियों के लिए 2 पूर्ण दिवसीय हिंदी कार्यशाला चलाई गई। राजभाषा कार्यान्वयन समिति के अध्यक्ष एवं मानव संसाधन प्रभाग के महाप्रबंधक श्री एस. हनुमंत राव ने 23वीं हिंदी कार्यशाला का उद्घाटन किया। उन्होंने कहा कि सभी सरकारी कर्मचारियों को हिंदी सीखनी चाहिए और यह अत्यंत आवश्यक है। कार्यशाला में राजभाषा नीति एवं कार्यान्वयन, राजभाषा नियम, अधिनियम, व्यावहारिक हिंदी एवं अनुवाद, टिप्पण और प्रारूप-लेखन तथा पत्राचार की विविध पद्धतियों का अभ्यास कराया गया।

हिंदुस्तान जिंक लिमिटेड

राजपुरा दरीबा माईन्स, दरीबा (राजस्थान)

राजपुरा दरीबा खान में लिपिकीय, तकनीकी और पर्यवेक्षीय वर्ग के कर्मचारियों के लिए दिनांक 30 और 31 जनवरी, 2002 को दो दिवसीय हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसका शुभारम्भ मजदूर संघ के वरिष्ठ सचिव श्री कल्याण सिंह शक्तावत के मुख्य आतिथ्य में हुआ। उन्होंने कहा कि हमें भिन्न-भिन्न भाषाओं के शब्दों को लेते हुए हमें हिंदी का प्रचार-प्रसार करने में किसी प्रकार की झिझक नहीं होनी चाहिए। कार्यशाला में विभिन्न विभागों के कुल 25 कर्मचारियों को हिंदी का सैद्धान्तिक और व्यावहारिक प्रशिक्षण दिया गया।

संघ प्रदेश दमन एवं दीव प्रशासन

दिनांक 9 से 11 जनवरी, 2002 तक त्रिदिवसीय हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमें प्रतिभागियों को राजभाषा अधिनियम आदि का परिचय कराया गया और हिंदी टिप्पण और आलेखन का अभ्यास कराया गया। संघ प्रदेश के वित्त सचिव श्री राकेश कुमार श्रीवास्तव ने सरकारी कामकाज में हिंदी के प्रयोग पर बल देते हुए कहा कि राजभाषा संबंधी लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए कार्यशालाओं की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण होती है।

कार्यालय प्रधान महालेखाकार लेख एवं हकदारी, भुवनेश्वर, उड़ीसा

दिनांक 10-12-2001 से 14-12-2001 तक 5 दिवसीय हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमें अधिकारियों/कर्मचारियों ने भाग लिया। कार्यशाला का उद्घाटन करते समय प्रधान महालेखाकार श्री उत्पल भट्टाचार्य ने प्रतिभागियों को कार्यशाला के महत्व को समझाते हुए कार्यशाला में प्रशिक्षित होने के बाद उन्हें हिंदी में काम करने के लिए प्रेरित किया। वरिष्ठ उप महालेखाकार (प्रशा.) श्री विजय कुमार महन्ती ने प्रतिभागियों के साथ उनकी अनुभूति पर चर्चा की और कार्यशाला को अधिक प्रभावी कैसे बनाया जाए, इस विषय पर विचार-विमर्श किया।

इंडियन फारमर्स फर्टिलाइजर कोऑपरेटिव लिमिटेड, कांडला, कच्छ (गुजरात)

21 से 22 दिसंबर, 2001 तक हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमें 26 प्रतिभागियों ने भाग लिया। श्री एस.पी. यादव ने दीप प्रज्वलित कर कार्यशाला का शुभारम्भ किया। उद्घाटन भाषण में उन्होंने कहा कि हिंदी हमारी राजभाषा है और राजभाषा का प्रयोग राष्ट्रीय अस्मिता का प्रतीक है। इसलिए इस भाषा में काम करने में हमें कोई कठिनाई नहीं होनी चाहिए। वरिष्ठ महाप्रबंधक श्री एस. के. मिश्रा ने कहा कि कांडला इकाई में 16वीं हिंदी कार्यशाला का आयोजन राजभाषा कार्यान्वयन की दिशा में किए जा रहे सतत् प्रयासों की श्रृंखला की एक कड़ी है। उन्होंने कहा कि मूल रूप से हिंदी में सोचने और लिखने का प्रयास करने पर कठिनाई अपने आप ही दूर हो जाएगी। उन्होंने कहा आवश्यकता है केवल इच्छाशक्ति जागृत कर इस झिझक को दूर करने की। कार्यशाला में राजभाषा नियम व अधिनियम पारिभाषिक शब्दावली हिंदी में टिप्पण, आलेखन, लेखन एवं उच्चारण में होने वाली भूलों तथा उनके निराकरण की जानकारी दी गई और अभ्यास कराया गया।

आवास एवं नगर विकास निगम लिमिटेड

7 दिसंबर, 2001 को निगम के सभी स्थानीय नोडल अधिकारियों और कर्मचारियों के लिए एक पूर्णदिवसीय हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। डा. राम गोपाल शर्मा "दिनेश" ने प्रतिभागियों को राजभाषा प्रबंधन, राजभाषा नीति, राजभाषा नियम, अधिनियमों और संवैधानिक स्थिति के बारे में जानकारी दी। राजभाषा नीति ज्ञान प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त करने वाले को 1000 रु., द्वितीय को 750 रु. और तृतीय को 500 रु. की राशि पुरस्कार स्वरूप दी गई।

वेस्टर्न कोलफील्ड लिमिटेड, चंद्रपुर (महाराष्ट्र)

18 से 20 जनवरी, 2002 तक 3 दिवसीय हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमें 17 अधिकारियों और कर्मचारियों ने भाग लिया। कार्यशाला का उद्घाटन कोलफील्ड लिमिटेड मुख्यालय, नागपुर के प्रबंधक (राजभाषा) श्री जनार्दन पाण्डेय ने किया। श्री पाण्डेय ने कार्यशाला के प्रतिभागियों के राजभाषा अधिनियम, राजभाषा नियम, राजभाषा नीति आदि के विषय में विस्तारपूर्वक जानकारी दी।

विजया बैंक, क्षेत्रीय कार्यालय, मंगलूर

दिनांक 27 से 29-11-2001 तक हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमें 22 प्रतिभागियों ने भाग लिया। कार्यशाला का उद्घाटन केन्द्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान के सहायक निदेशक डा. चन्द्रमोहन तिवारी ने किया। उन्होंने कहा कि कार्यशाला से प्रशिक्षण प्राप्त करने के

अभिप्राय राजभाषा संबंधी अद्यतन जानकारी प्राप्त करना है। कार्यशाला में प्रतिभागियों को राजभाषा संबंधी संवैधानिक प्रावधानों, हिंदी व्याकरण, शब्दावली, टिप्पण, आलेखन आदि की जानकारी दी गई और अभ्यास कराया गया।

केन्द्रीय भंडारण निगम, नई दिल्ली

निगम के कारपोरेट कार्यालय ने समूह "क" स्तर के अधिकारियों के लिए दिनांक 2 फरवरी, 2002 को एक विशेष हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसकी अध्यक्षता निगम के प्रबंध निदेशक श्री ऋषिकांत चौबे ने की। कार्यशाला का उद्घाटन राजभाषा विभाग के संयुक्त सचिव श्री एम.एल. गुप्ता ने दीप प्रज्वलित कर किया। इस अवसर पर निगम की गृह पत्रिका "भण्डारण भारती" का विमोचन भी मुख्य अतिथि द्वारा किया गया। श्री चौबे ने कहा कि इस निगम को सर्वदा श्री गुप्ता का मार्गदर्शन और सहयोग मिलता रहा है। उन्होंने बताया कि श्री गुप्ता ने भिछली बार निगम द्वारा आयोजित अखिल भारतीय राजभाषा प्रशिक्षण के अवसर पर उपस्थित हो हमें अनुगृहीत किया था और गृह पत्रिका "भण्डारण भारती" की प्रतियां पुस्तक मेले में डिस्प्ले की गई थीं। उन्होंने मुख्य अतिथि को यह आश्वासन दिया कि निगम में राजभाषा नीति सत्यनिष्ठा से लागू की जाएगी और राजभाषा हिंदी के कामकाज को सहज और स्वाभाविक गति से आगे बढ़ाया जाएगा।

अपने सारगर्भित संबोधन में राजभाषा विभाग के संयुक्त सचिव श्री गुप्ता ने कहा कि टिप्पण लेखन में हिन्दी का प्रयोग करना चाहिए और आवश्यक हो तो अंग्रेजी शब्दों के प्रयोग से हिचकिचाना नहीं चाहिए। श्री गुप्ता ने कहा कि राजभाषा हिंदी संसार की सबसे वैज्ञानिक भाषा है जिसे कंप्यूटर विशेषज्ञों ने भी स्वीकार किया है। केन्द्रीय अनुवाद ब्यूरो के निदेशक श्री विचारदास ने कहा कि हिंदी की शब्द सामर्थ्य बढ़ाने के लिए हर भाषा के प्रचलित शब्द ग्रहण करने चाहिए।

केन्द्रीय रेशम उत्पादन अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान, बहरमपुर (पश्चिम बंगाल)

21 फरवरी, 2002 को प्रशासनिक संवर्ग के कर्मचारियों के लिए एक दिवसीय पूर्णकालिक हिंदी कार्यशाला आयोजित की गई जिसमें संस्थान के कुल 33 कर्मचारियों को प्रशिक्षण प्रदान किया गया। कार्यशाला के महत्त्व पर प्रकाश डालते हुए पूर्वी क्षेत्र कोलकता नगर राजभाषा कार्यान्वयन कार्यालय के उप निदेशक श्री जी. डी. केसवानी ने कहा कि इससे कर्मचारियों की शिक्षक तो समाप्त होगी ही, इसके अलावा उनमें आत्मविश्वास के साथ कार्य हिंदी में निष्पादित करने की क्षमता भी बढ़ेगी। कार्यशाला में राजभाषा नीति लेखा एवं भण्डारण संबंधी मामलों में हिंदी के प्रयोग, वर्तनी की समस्या आदि विषयों पर व्याख्यान दिए गए।

नेशनल इंशायोरेंस कंपनी लिमिटेड, कनाट सर्कस, नई दिल्ली

25 जनवरी, 2002 को दिल्ली क्षेत्रीय कार्यालय (1) में एक दिवसीय हिंदी कार्यशाला आयोजित की गई जिसमें अधीनस्थ मंडलीय/शाखा कार्यालयों के 25 कर्मचारियों ने भाग लिया। कार्यशाला में टिप्पण, द्विभाषी फार्मों को हिंदी में अनुवाद करने आदि का अभ्यास कराया गया। प्रतिभागियों को अक्षर फार विन्डोज, सी-डेक, पुणे द्वारा विकसित लीप आफिस "मंत्रणा" की विशेषताओं की संक्षिप्त जानकारी दी गई।

नई दिल्ली में संक्षिप्त अनुवाद का पाठ्यक्रम का आयोजन

नेहरू प्लेस, नई दिल्ली स्थित इफको मुख्यालय में 19 से 23 नवम्बर, 2001 के दौरान 5 दिवसीय संक्षिप्त अनुवाद प्रशिक्षण पाठ्यक्रम का आयोजन किया गया। यह पाठ्यक्रम केन्द्रीय अनुवाद ब्यूरो, राजभाषा विभाग के सहयोग से आयोजित किया गया। कार्यक्रम में इफको मुख्यालय के विभिन्न विभागों में कार्यरत 20 प्रशिक्षणार्थियों ने भाग लिया।

19 नवम्बर, 2001 को कार्यक्रम का उद्घाटन विपणन निदेशक एवं अध्यक्ष, राजभाषा कार्यान्वयन समिति, श्री दया कृष्ण भट्ट ने किया। उन्होंने सभी प्रशिक्षणार्थियों से अनुरोध किया कि वे अपना दैनिक कामकाज हिंदी में करने के अपने प्रयास सतत जारी रखें और किसी प्रकार की मानसिकता को आड़े न आने दें। राजभाषा हिंदी के सफल कार्यान्वयन के लिए अनुवाद ब्यूरो ने कहा कि अनुवादक के लिए यह गर्व की बात होती है कि वह स्रोत भाषा और लक्ष्य भाषा का पूरा-पूरा ज्ञान रखता है। उन्होंने इस बात पर विशेष बल दिया कि मूल रूप से हिंदी में कार्य करते हुए तथा अनुवाद करते समय हमें क्लिष्ट भाषा के प्रयोग से बचना चाहिए। उद्घाटन अवसर पर केंद्रीय अनुवाद ब्यूरो की ओर से श्रीमती प्रवेश शर्मा, सहायक निदेशक उपस्थित थीं। इसी अवसर पर इफको के वरिष्ठ प्रबंधक (हिंदी), श्री घनश्याम दास ने सभी प्रतिभागियों को यह आश्वासन दिया कि यदि वे अपना दैनिक कामकाज हिंदी में करने के प्रयास पूरी निष्ठा के साथ करते हैं तो इसी प्रकार के और अधिक कार्यक्रमों का आयोजन किया जाएगा।

अनुवाद प्रशिक्षण पाठ्यक्रम के दौरान केन्द्रीय अनुवाद ब्यूरो की ओर से विभिन्न वक्ताओं ने अपने-अपने विषयों पर विद्वतापूर्ण और सारगर्भित व्याख्यान दिए। व्याख्यानदाताओं में श्रीमती किरण सक्सैना, डा. कुसुम अग्रवाल, श्रीमती प्रवेश शर्मा, श्री नन्द किशोर चावला और श्री सत्येन्द्र सिंह ने निर्धारित विषयों पर व्याख्यान दिए और अनुवाद का अभ्यास कराया।

23 नवम्बर, 2001 को इस कार्यक्रम का समापन कार्यकारी निदेशक (एन. एफ.), श्री विजय कुमार बाली की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर केंद्रीय अनुवाद ब्यूरो के निदेशक, श्री विचार दास भी उपस्थित थे। श्री विचार दास ने अनुवाद के महत्त्व पर प्रकाश डालते

हुए कहा कि अनुवाद युग-युगों से हमारे सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक जीवन में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता रहा है। आज ग्लोबलाइजेशन के युग में इसका महत्त्व और भी बढ़ गया है क्योंकि आज पूरा विश्व एक छोटे से गांव में तबदील हो गया है। सूचना क्रांति के इस युग में अनुवाद की भूमिका पहले से कहीं अधिक महत्त्वपूर्ण हो गई है।

श्री विजय कुमार बाली, कार्यकारी निदेशक (एन एफ) ने इस बात को स्वीकार किया कि आज भी हिंदी की प्रगति उस रफ्तार से नहीं हो पा रही है जो वास्तव में होनी चाहिए। उन्होंने सभी अधिकारियों/कर्मचारियों से अनुरोध किया कि वे अपना अधिक से अधिक काम हिंदी में करें और इसके लिए हिंदी अनुभाग उनकी हर संभव सहायता करने के लिए तैयार है। श्री बाली ने सभी प्रतिभागियों को प्रमाण-पत्र भी वितरित किए।

श्री घनश्याम दास, वरिष्ठ प्रबंधक (हिंदी) ने संपूर्ण कार्यक्रम की रिपोर्ट पढ़ी और प्रतिभागियों द्वारा दिए गए सुझावों को प्रबंधन के समक्ष रखा। श्री बी डी धमीजा, उप प्रबंधक (हिंदी) ने धन्यवाद ज्ञापित करते हुए सभी प्रतिभागियों और व्याख्यानदाताओं द्वारा इस कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए उपलब्ध कराए गए सहयोग के लिए आभार व्यक्त किया।

हिंदी सलाहकार समिति की बैठक

वस्त्र मंत्रालय की हिंदी सलाहकार समिति की चौथी बैठक दिनांक 11 अक्टूबर, 2001 को होटल अशोक, बैंगलोर में माननीय वस्त्र मंत्री काशीराम राणा की अध्यक्षता में संपन्न हुई। बैठक के पश्चात् 11-12 अक्टूबर, 2001 को दो दिवसीय हिंदी संगोष्ठी का भी आयोजन किया गया जो विशेष रूप से वस्त्र मंत्रालय के दक्षिण भारत स्थित कार्यालयों के अधिकारियों को हिंदी में काम करने हेतु प्रेरित करने को ध्यान में रख कर आयोजित की गई थी। संगोष्ठी का उद्घाटन माननीय वस्त्र मंत्री श्री काशीराम राणा द्वारा तथा स्वागत भाषण माननीय वस्त्र राज्य मंत्री वी. धनंजय कुमार द्वारा और धन्यवाद प्रस्ताव सचिव (वस्त्र) श्री अनिल कुमार द्वारा दिया गया। संगोष्ठी में वस्त्र मंत्रालय के हिंदी सलाहकार समिति के गैर-सरकारी सदस्यों, संसद सदस्यों तथा राजभाषा कार्यान्वयन नीति तथा भाषा से संबंधित अनेक विद्वानों जैसे प्रो. सूरज भान सिंह, डा. उदयनारायण सिंह, डा. वेलायुद्धन नायर, श्री कृष्ण कुमार ग्रोवर, डा. विजय राघव रेड्डी आदि ने अपने विचार प्रकट किए। संगोष्ठी का सफल समापन माननीय वस्त्र राज्य मंत्री श्री वी. धनंजय कुमार द्वारा किया गया।

वस्त्र मंत्रालय की राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकें प्रत्येक तिमाही में नियमित रूप से संयुक्त सचिव (प्रशासन) की अध्यक्षता में आयोजित की जाती हैं। राजभाषा कार्यान्वयन समिति की पिछली बैठक दिनांक 27-12-2001 को संयुक्त सचिव (प्रशासन), श्री सुधीर भार्गव की अध्यक्षता में आयोजित की गई।

क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलनों का आयोजन

प्रेरणा, प्रोत्साहन तथा सद्भाव से राजभाषा हिंदी के प्रयोग को बढ़ाने की सरकार की नीति के अनुरूप राजभाषा विभाग अपनी विभिन्न गतिविधियों के माध्यम से हिंदी के प्रचार-प्रसार और संवर्धन के लिए अपनी विशिष्ट भूमिका का निर्वहन कर रहा है। हिंदी में कार्य करने का वातावरण तैयार करने, उसमें आने वाली कठिनाइयों का निवारण करने, कम्प्यूटरों पर हिंदी में कार्य करने के संबंध में नवीनतम जानकारी देने और सरकारी कामकाज में हिंदी में सर्वोत्कृष्ट कार्य करने वाले केंद्रीय सरकार के कार्यालयों/बैंकों/उपक्रमों और नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों को पुरस्कृत करने के उद्देश्य से विभाग समय-समय पर क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलनों का आयोजन करता आ रहा है। इस श्रृंखला में वर्ष 2001-02 के दौरान चार संयुक्त क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलनों एवं क्षेत्रीय राजभाषा पुरस्कार वितरण समारोह आयोजित किए गए। इन सम्मेलनों में वर्ष 1999-2000 के क्षेत्रीय राजभाषा पुरस्कारों का वितरण किया गया। इन सम्मेलनों में संबंधित क्षेत्रों में स्थित केंद्रीय सरकार के कार्यालयों, सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों, बैंकों व नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों के सदस्यों व हिंदी के विद्वानों और हिंदी के प्रचार-प्रसार से जुड़े अन्य गणमान्य व्यक्तियों ने भाग लिया। प्रत्येक समारोह में प्रतिभागियों की उपस्थिति 500 से 600 के बीच रही।

मुंबई सम्मेलन : मध्य एवं पश्चिम क्षेत्रों (मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, राजस्थान, महाराष्ट्र, गुजरात, गोवा, दमण एवं दीव, दादरा नागर हवेली) के लिए संयुक्त सम्मेलन का आयोजन मुंबई में दिनांक 28-29 जनवरी, 2002 को किया गया। इस समारोह में श्री एम. शंकर, सचिव राजभाषा विभाग मुख्य अतिथि थे और उन्हीं के कर कमलों से पुरस्कार प्रदान किए गए। सचिव राजभाषा ने प्रतिभागियों को संबोधित करते हुए बताया कि संपर्क भाषा के रूप में हिंदी का व्यापक प्रयोग सदैव से ही होता रहा है। यहां तक कि अंग्रेजों को भी अपने शासन-काल में टूटी-फूटी ही सही पर हिंदी बोलने-समझने के लिए बाध्य होना पड़ा था। आप भारत के किसी भी प्रांत में चले जाएं, वहां आपको हिंदी का प्रयोग अवश्य मिलेगा अर्थात् हिंदी का व्यापक जनाधार है। हिंदी भाषा का प्रयोग बढ़ाने के लिए भी सूचना प्रौद्योगिकी को अपनाना जरूरी हो गया है। पुरजोर प्रयत्न किया जाना चाहिए कि कम्प्यूटर आदि उपकरणों में प्रयोग में आने वाले साफ्टवेयर द्विभाषी ही खरीदे जाएं और स्टाफ को हिंदी में काम करने का प्रशिक्षण देकर कार्यालय का अधिक से अधिक काम हिंदी में कराया जाए। आज के समय को पहचानते हुए यदि सूचना प्रौद्योगिकी से हिंदी को नहीं जोड़ते हैं तो इससे हिंदी का बड़ा अहित होगा और हम अपने संवैधानिक उत्तरदायित्वों को पूरा करने में पीछे रह जाएंगे।

बंगलूर सम्मेलन : दक्षिण-एवं दक्षिण-पश्चिम क्षेत्रों (आंध्र प्रदेश, कर्नाटक, केरल,

तमिलनाडु तथा पांडिचेरी) के लिए संयुक्त सम्मेलन का आयोजन 14-15 फरवरी, 2002 को बेंगलूर में किया गया। इस सम्मेलन में भी सचिव, राजभाषा मुख्य अतिथि थे और पुरस्कारों का वितरण संयुक्त सचिव, राजभाषा विभाग द्वारा किया गया। सचिव राजभाषा ने प्रतिभागियों को संबोधित करते हुए बताया कि हमारे संविधान में जहां संघ की राजभाषा हिंदी और लिपि देवनागरी रखी गई है, वहीं भारत के बहुभाषी स्वरूप को भी यथवत बनाए रखा गया है। संविधान निर्माताओं को आभास था कि दुनिया में सर ऊंचा करके जीने के लिए भारत को अपनी एक भाषा को ही संघ की राजभाषा के रूप में प्रतिष्ठित करना होगा। उनकी सोच का ही परिणाम था कि संविधान में भाषा नीति के बारे में एक ऐसी जमीन तैयार की गई जिसमें आधुनिक भारतीय भाषाओं को सबल करते हुए संघ की राजभाषा हिंदी को समृद्ध करने की व्यवस्था की गई है। आइए संविधान के इस भाषायी दायित्व को पूरी निष्ठा से हम निभाएं। इसके कार्यान्वयन से जहां समूचे भारत में वैचारिक एकता के लिए एक वातावरण बनने में मदद मिलेगी वहीं सद्भावना का वातावरण बनने में भी मदद मिलेगी। इस सम्मेलन में संयुक्त सचिव, राजभाषा ने भी प्रतिभागियों को संबोधित किया और बताया कि राजभाषा विभाग सूचना प्रौद्योगिकी के साथ हिंदी को जोड़ने पर बल दे रहा है। यह प्रौद्योगिकी इतनी तेजी से बढ़ रही है कि अगर हम इसके माध्यम से हिंदी का प्रयोग न बढ़ा पाए तो हिंदी निश्चित रूप से पिछड़ जाएगी। राजभाषा विभाग ने हिंदी भाषा सीखने के लिए दो साफ्टवेयर—लीला हिंदी प्रबोध तथा लीला हिंदी प्रवीण विकसित करवाए हैं। लीला हिंदी प्राज्ञ साफ्टवेयर भी लगभग तैयार है। कम्प्यूटर पर इनका प्रयोग करते हुए हिंदी आसानी से सीखी व पढ़ी जा सकती है। विशेष रूप से इसका लाभ उन अधिकारियों/कर्मचारियों को मिल पाएगा जो कक्षाओं में प्रशिक्षण प्राप्त करने के लिए समय नहीं निकाल पाते।

गंगटोक सम्मेलन : पूर्व एवं उत्तर-पूर्व क्षेत्रों (असम, त्रिपुरा, मिजोरम, नागालैंड, मणिपुर मेघालय, सिक्किम, अरुणाचल, पश्चिम बंगाल, उड़ीसा, बिहार झारखंड तथा अंडमान एवं निकोबार) के लिए संयुक्त सम्मेलन गंगटोक में दिनांक 06-07 मार्च, 2002 को आयोजित किया गया। इस समारोह में सिक्किम के महामहिम राज्यपाल श्री केदार नाथ साहनी मुख्य अतिथि थे तथा उन्हीं के कर-कमलों से पुरस्कार वितरण किए गए। उन्होंने केन्द्र सरकार के कार्यालयों, उपक्रमों, बैंकों आदि में उनके कार्यकलापों से संबंधित विषयों पर हिंदी में व्याख्यान मालाएं आयोजित करने एवं लेख लिखने तथा उच्च अधिकारियों द्वारा हिंदी में कार्य करने में पहल करने पर बल दिया। उन्होंने यह भी सुझाव दिया कि इस तकनीकी युग में जहां एक ओर कंप्यूटरों का प्रयोग बढ़ रहा है वहीं दूसरी ओर उन पर केन्द्र सरकार के कार्यालयों में हिंदी में कार्य हो। इसके लिए द्विभाषी साफ्टवेयरों का प्रयोग किया जाए। इस कार्य के लिए प्रशिक्षण सुविधा भी उपलब्ध कराई जाए। आज विज्ञान और प्रौद्योगिकी का युग है। इसलिए जन साधारण की भाषा को ज्ञान के प्रसार का माध्यम भी बनाना होगा। हिंदी विज्ञान से जुड़े इसके लिए नए विचारों और वैज्ञानिक शब्दों को ग्रहण करना होगा। यदि हिंदी को विश्व की एक प्रमुख भाषा बनाना है तो इसे

आधुनिक सूचना प्रौद्योगिकी का माध्यम बनाना होगा। यह हर्ष का विषय है कि हम ही नहीं, दुनिया के विकसित देशों के सुविज्ञ लोग विश्व की जिन दो-तीन प्रमुख भाषाओं का महत्व पहचानने लगे हैं उनमें हिंदी एक है। हमें चाहिए कि हम इसे और अधिक सम्पन्न सशक्त तथा आधुनिक बनाएं।

अमृतसर सम्मेलन : उत्तर एवं दिल्ली क्षेत्रों (पंजाब, हरियाणा, उत्तर प्रदेश, उत्तरांचल, हिमाचल प्रदेश, जम्मू एवं कश्मीर, चण्डीगढ़ तथा दिल्ली/नई दिल्ली) का सम्मेलन अमृतसर में दिनांक 14-15 मार्च, 2002 को आयोजित किया गया। इस समारोह में मुख्य अतिथि गुरु नानक देव विश्वविद्यालय के कुलपति श्री एस. पी. सिंह थे तथा उन्हीं के कर-कमलों से पुरस्कारों का वितरण किया गया। उन्हीं प्रतिभागियों को संबोधित करते हुए बताया कि राजभाषा हिंदी के साथ-साथ प्रांतों की भाषाओं को भी उचित महत्व दिया जाना चाहिए। हमें यह नहीं समझना चाहिए कि जो व्यक्ति अंग्रेजी जानता है या बोलता है वह उंचे दर्जे का है जो देशी भाषाएं बोलता है वह निम्न दर्जे का है। आज आवश्यकता इस बात की है कि हिंदी को पूर्ण सम्मान दिया जाए। इसके लिए हमें अपनी मानसिकता को बदलना होगा। आधी-अधूरी अंग्रेजी जानने-बोलने की अपेक्षा अपनी-अपनी भाषाओं में किया गया सुरुचीपूर्ण वार्तालाप अधिक ऊंचे दर्जे का होता है। इसके साथ ही आधुनिक विज्ञान के क्षेत्रों में तथा आधुनिक उपकरणों आदि में भी हिंदी में काम करने की सुविधाएं जुटानी होंगी। इस सम्मेलन में संयुक्त सचिव, राजभाषा ने बताया कि अंग्रेजी के जाने के पश्चात् विशुद्ध अंग्रेजी मानसिकता का पूर्ण पतन हो चुका है और अब जो भाषा प्रयोग में आ रही है वह इंगलिश के स्थान पर हिंगलिश है जिसमें अंग्रेजी के शब्दों का कम तथा हिंदी के शब्दों का प्रयोग अधिक हो रहा है। हिंदी के साथ सम्मान के जुड़ने के संबंध में उन्होंने कहा कि अब समय बदल चुका है और हिंदी को पर्याप्त सम्मान दिया जा रहा है। आधुनिक उपकरणों पर भी हिंदी में काम करने के लिए पर्याप्त साफ्टवेयर विकसित हो चुके हैं और प्रौद्योगिकी के साथ कदम से कदम मिलाकर चलने के सभी प्रयास किए जा रहे हैं।

इन समारोहों के दौरान कम्प्यूटर प्रदर्शनियों का भी आयोजन किया गया जिसमें विभिन्न साफ्टवेयर कम्पनियों ने भाग लिया और सम्मेलन के प्रतिभागियों को कम्प्यूटर पर हिंदी में कार्य करने संबंधी उपलब्ध आधुनिक सुविधाओं की जानकारी दी गई तथा राजभाषा विभाग द्वारा सी-डेक, पुणे के माध्यम से तैयार करवाए गए साफ्टवेयर लीला-हिंदी प्रबोध, प्रवीण, प्राज्ञ और कम्प्यूटर सधित अंग्रेजी से हिंदी अनुवाद परियोजना मंत्रा-राजभाषा का प्रदर्शन किया गया।

**क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय मुम्बई, — वर्ष 1999-2000 के क्षेत्रीय
राजभाषा पुरस्कार**

क्र. सं. संगठन का नाम	स्थान
'ख' क्षेत्र	
कार्यालय	
1. केन्द्रीय उत्पाद एवं सीमा शुल्क आयुक्त का कार्यालय, नागपुर	प्रथम
2. चलार्थ पत्र मुद्रणालय, नाशिक	द्वितीय
3. आयकर आयुक्त का कार्यालय, विदर्भ, नागपुर	तृतीय
उपक्रम	
1. भारतीय कपास निगम लि., अहमदाबाद	प्रथम
2. नेशनल टैक्सटाइल कार्पोरेशन (एम.एन.) लि., मुंबई	द्वितीय
3. भारतीय कपास निगम लि., राजकोट	तृतीय
बैंक	
1. बैंक ऑफ बडौदा, मध्य गुजरात अंचल का. बडौदा	प्रथम
2. यूनियन बैंक ऑफ इंडिया क्षेत्रीय कार्यालय, राजकोट	द्वितीय
3. बैंक ऑफ इंडिया, अंचल कार्यालय, नागपुर	तृतीय
नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति	
1. नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, बडौदा (उपक्रम)	प्रथम
2. नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, बडौदा (बैंक)	द्वितीय
3. नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, मुम्बई (बैंक)	तृतीय
'ग' क्षेत्र	
कार्यालय	
1. केन्द्र निदेशक का कार्यालय, आकाशवाणी, पणजी (गोवा)	प्रथम
2. जनगणना कार्य निदेशालय, पणजी, गोवा	द्वितीय
3. वरिष्ठ उपमहालेखाकार (ले.प.) का कार्यालय, पणजी—गोवा	तृतीय
बैंक	
1. यूनियन बैंक ऑफ इंडिया, क्षेत्रीय कार्यालय, पणजी—गोवा	प्रथम
2. सैन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया, क्षेत्रीय कार्यालय, पणजी—गोवा	द्वितीय
3. सिंडिकेट बैंक, क्षेत्रीय कार्यालय, पणजी—गोवा	तृतीय
नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति	
1. नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, सिलवासा	प्रथम

क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय, भोपाल, —वर्ष 1999-2000
के क्षेत्रीय राजभाषा पुरस्कार

कार्यालय

1. केन्द्रीय विद्युत अनुसंधान संस्थान, स्विचगीयर परीक्षण तथा विकास केन्द्र, गोविंदपुरा, भोपाल प्रथम
2. कार्यालय मुख्य महाप्रबंधक, दूरसंचार, भोपाल द्वितीय
3. भारतीय प्रसारण निगम, उदयपुर तृतीय

उपक्रम

1. भारतीय कपास निगम लि., श्रीगंगानगर प्रथम
2. भारतीय जीवन बीमा निगम, मण्डल कार्यालय, भोपाल द्वितीय
3. भिलाई रिफ्रेक्ट्रीज संयंत्र, भिलाई तृतीय

बैंक

1. ओरियन्टल बैंक ऑफ कामर्स, प्रादेशिक कार्यालय, भोपाल प्रथम
2. बैंक ऑफ बडौदा, क्षेत्रीय का., महाराणा प्रताप नगर, भोपाल द्वितीय
3. पंजाब नेशनल बैंक, अंचल कार्यालय रोशनपुर नाका, भोपाल तृतीय

नगर राजभाषा कार्यन्वयन समिति

1. नगर राजभाषा कार्यन्वयन समिति, इंदौर (बैंक) प्रथम
2. नगर राजभाषा कार्यन्वयन समिति, जबलपुर (बैंक) द्वितीय
3. नगर राजभाषा कार्यन्वयन समिति, जयपुर (बैंक) तृतीय

**क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय, बेंगलूर—वर्ष 1999-2000 के क्षेत्रीय
राजभाषा पुरस्कार**

क्र. सं.	संगठन का नाम	स्थान
कार्यालय		
1.	राष्ट्रीय रेशमकीट बीज परियोजना, बेंगलूर	प्रथम
2.	मुख्य पोस्टमास्टर जनरल का कार्यालय, हैदराबाद	द्वितीय
3.	केन्द्रीय रेशम प्रौद्योगिक अनुसंधान संस्थान, बेंगलूर	तृतीय
उपक्रम		
1.	भारतीय कपास निगम लिमिटेड, गुण्टूर	प्रथम
2.	हिन्दुस्तान जिंके लिमिटेड, विशाखापट्टणम	द्वितीय
3.	नेशनल मिनरल डेवलपमेंट कार्पोरेशन लि०, दोगिमलै	तृतीय
बैंक		
1.	यूनियन बैंक ऑफ इंडिया, क्षेत्रीय कार्यालय, बेलगांव	प्रथम
2.	भारतीय औद्योगिक विकास बैंक, चैपल रोड, हैदराबाद	द्वितीय
3.	केनरा बैंक, अंचल कार्यालय, बेंगलूर	तृतीय
नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति		
1.	नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, बेंगलूर (का०)	प्रथम
2.	नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, हैदराबाद (बैंक)	द्वितीय
3.	नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, मंगलूर (का०)	तृतीय

**क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय, कोच्चि—वर्ष 1999-2000
के क्षेत्रीय राजभाषा पुरस्कार**

क्र. सं.	संगठन का नाम	स्थान
----------	--------------	-------

कार्यालय

- | | | |
|----|--|---------|
| 1. | गुप केंद्र के.रि.पु.बल, पल्लिपुरम | प्रथम |
| 2. | राष्ट्रीय कैडेट कोर निदेशालय, तिरुवनंतपुरम | द्वितीय |
| 3. | काजू और कोको विकास निदेशालय, कोच्चि | तृतीय |

उपक्रम

- | | | |
|----|--|---------|
| 1. | नेशनल इन्स्योरेन्स कंपनी लिमिटेड, क्षेत्रीय कार्यालय, कोच्ची | प्रथम |
| 2. | भारत पेट्रोलियम कार्पोरेशन लिमिटेड, चेन्नई | द्वितीय |
| 3. | हिन्दुस्तान न्यूजप्रिंट लिमिटेड, कोच्चि | तृतीय |

बैंक

- | | | |
|----|---|---------|
| 1. | सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया, क्षेत्रीय कार्यालय, कोच्चि | प्रथम |
| 2. | सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया, क्षेत्रीय कार्यालय, तिरुवनंतपुरम | द्वितीय |
| 3. | इंडियन ओवरसीज बैंक, क्षेत्रीय कार्यालय, तिरुवनंतपुरम | तृतीय |

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति

- | | | |
|----|--|---------|
| 1. | नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, तिरुवनंतपुरम (बैंक) | प्रथम |
| 2. | नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, कोच्चि (का०) | द्वितीय |
| 3. | नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, चेन्नई (बैंक) | तृतीय |

पूर्वोत्तर क्षेत्र के वर्ष 1999-2000 के क्षेत्रीय राजभाषा पुरस्कार

"ग" क्षेत्र

कार्यालय

- | | | |
|----|---|---------|
| 1. | पूर्वोत्तर सेक्टर मुख्यालय, के.रि.पु. बल, शिलांग | प्रथम |
| 2. | महानिदेशालय, असम राइफल्स, शिलांग | द्वितीय |
| 3. | सीमा सुरक्षा संगठन, स्वास्तिक परियोजना, मार्फत 99 ए.पी.ओ. | तृतीय |

उपक्रम

- | | | |
|----|--|---------|
| 1. | इंडियन ऑयल कार्पोरेशन लि०, गुवाहाटी रिफाइनरी | प्रथम |
| 2. | ऑयल एंड नेचुरल गैस कार्पोरेशन लि०, नाजिरा | द्वितीय |

क्र. सं.	संगठन का नाम	स्थान
3.	नगांव पेपर मिल्स, कागज नगर, नगांव	तृतीय
बैंक		
1.	भारतीय लघु उद्योग विकास बैंक, गुवाहाटी	प्रथम
2.	भारतीय औद्योगिक विकास बैंक, गुवाहाटी	द्वितीय
3.	राष्ट्रीय कृषि और ग्रामीण विकास बैंक क्षेत्रीय कार्यालय, गुवाहाटी	तृतीय

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति

1.	नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, शिलांग	प्रथम
2.	नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, गुवाहाटी (उपक्रम)	द्वितीय
3.	नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, ईटानगर	तृतीय

पूर्व क्षेत्र के वर्ष 1999-2000 के क्षेत्रीय राजभाषा पुरस्कार

'क'	संगठन का नाम	स्थान
-----	--------------	-------

क्षेत्र

कार्यालय

1.	महालेखाकार (लेखा परीक्षा) I, का कार्यालय, बिहार, पटना	प्रथम
2.	खान सुरक्षा महानिदेशालय, धनबाद	द्वितीय
3.	महालेखाकार (लेखा एवं हक) II, का कार्यालय, बिहार, पटना	तृतीय

उपक्रम

1.	भारत रिफ्रेक्ट्रीज लिमिटेड, इफिको रिफ्रेक्ट्रीज संयंत्र, हजारीबाग	प्रथम
2.	भारतीय जीवन बीमा निगम, मंडल कार्यालय, मुजफ्फरपुर	द्वितीय
3.	भारत रिफ्रेक्ट्रीज लिमिटेड भंडारदह रिफ्रेक्ट्रीज संयंत्र	तृतीय

बैंक

1.	पंजाब नेशनल बैंक, क्षेत्रीय कार्यालय, मुजफ्फरपुर	प्रथम
2.	सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया, आंचलिक कार्यालय, मुजफ्फरपुर	द्वितीय
3.	पंजाब नेशनल बैंक, अंचल कार्यालय, आर ब्लॉक, पटना	तृतीय

क्र. सं.	संगठन का नाम	स्थान
नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति		
1.	नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, बोकारो	प्रथम
2.	नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, पटना (बैंक)	द्वितीय
3.	नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, दरभंगा	तृतीय

'ग' क्षेत्र

कार्यालय

1.	खान सुरक्षा महानिदेशालय, पूर्वी अंचल, सीतारामपुर	प्रथम
2.	के.रि.पु.बल. 94 बटालियन, कलकत्ता	द्वितीय
3.	के.रि.पु.बल. पूर्वी सेक्टर मुख्यालय, कलकत्ता	तृतीय

उपक्रम

1.	आयल इंडिया लिमिटेड, कलकत्ता शाखा	प्रथम
2.	हल्दिया गोदी परिसर, कलकत्ता पत्तन न्यास	द्वितीय
3.	भारतीय नौवहन निगम लिमिटेड, कलकत्ता	तृतीय

बैंक

1.	सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया, आंचलिक कार्यालय, कलकत्ता	प्रथम
2.	बैंक ऑफ इंडिया, आंचलिक कार्यालय, कलकत्ता	द्वितीय
3.	आंध्रा बैंक आंचलिक कार्यालय, भुवनेश्वर	तृतीय

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति

1.	नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, कलकत्ता. (उप०)	प्रथम
2.	नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, भुवनेश्वर (बैंक)	द्वितीय
3.	नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, कलकत्ता (बैंक)	तृतीय

दिल्ली क्षेत्र के वर्ष 1999-2000 के क्षेत्रीय राजभाषा पुरस्कार

क्र. स. संगठन का नाम स्थान

कार्यालय

- | | |
|---|---------|
| 1. केन्द्रीय अभिलेख कार्यालय, भारत तिब्बत सीमा पुलिस,, सी.जी.ओ. काम्पलेक्स, नई दिल्ली | प्रथम |
| 2. केन्द्रीय तार घर, नई दिल्ली | द्वितीय |
| 3. महानिदेशालय, राष्ट्रीय सुरक्षा गारद, लोदां रोड, नई दिल्ली | तृतीय |

उपक्रम

- | | |
|---|---------|
| 1. इण्डियन आयल कार्पोरेशन, मथुरा-जालंधर पाईपलाइन, बिजवासन, नई दिल्ली। | प्रथम |
| 2. नेशनल टेक्सटाइल कार्पोरेशन (दि.पं.रा.) लि०, वन्दना बिल्डिंग, 11 टालस्टाय मार्ग, नई दिल्ली। | द्वितीय |
| 3. इंडियन एयरलाइन्स लिमिटेड, उत्तरी क्षेत्र, नई दिल्ली। | तृतीय |

बैंक

- | | |
|--|---------|
| 1. ओरियन्टल बैंक आफ कामर्स, प्रादेशिक कार्यालय, करोल बाग, नई दिल्ली। | प्रथम |
| 2. सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया, क्षेत्रीय कार्यालय, बी(उत्तर), दिल्ली | द्वितीय |
| 3. भारतीय औद्योगिक विकास बैंक, नई दिल्ली शाखा कार्यालय | तृतीय |

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति

- | | |
|---|---------|
| 1. नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, दिल्ली (बैंक) | प्रथम |
| 2. नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, दिल्ली (उपक्रम) | द्वितीय |

क्षेत्र : गाजियाबाद कार्यान्वयन कार्यालय—वर्ष 1999-2000 के क्षेत्रीय राजभाषा पुरस्कार

क्र. स. संगठन का नाम स्थान

'क' क्षेत्र

कार्यालय

- | | |
|--|---------|
| 1. प्रसार भारती, आकाशवाणी, लखनऊ | प्रथम |
| 2. क्षेत्रीय प्रचार निदेशालय, प्रादेशिक कार्यालय, देहरादून | द्वितीय |
| 3. केन्द्रीय जल अयोग निचली यमुना मण्डल आवास विकास कालोनी, आगरा | तृतीय |

क्र. सं.	संगठन का नाम	स्थान
उपक्रम		
1.	टिहरी हाइड्रो डेवलपमेंट कॉरपोरेशन लि., टिहरी (गढ़वाल)	प्रथम
2.	भारतीय जीवन बीमा निगम, मंडल कार्यालय, लखनऊ	द्वितीय
3.	हिन्दुस्तान एयरनाटिक्स लि०, उपसाधन मंडल, लखनऊ	तृतीय
बैंक		
1.	पंजाब नेशनल बैंक, क्षेत्रीय कार्यालय, लखनऊ	प्रथम
2.	इलाहाबाद बैंक, क्षेत्रीय कार्यालय, गोरखपुर	द्वितीय
3.	सेन्ट्रल बैंक आफ इंडिया, क्षेत्रीय कार्यालय, वाराणसी	तृतीय
नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति		
1.	नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, लखनऊ (का०)	प्रथम
2.	नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, इलाहाबाद (का०)	द्वितीय
3.	नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, करनाल (का०)	तृतीय
'ख' क्षेत्र		
कार्यालय		
1.	आर्डिनैन्स केबल फैक्टरी, चंडीगढ़	प्रथम
2.	15वीं वाहिनी, भारत तिब्बत सीमा पुलिस, भटिंडा (पंजाब)	द्वितीय
3.	22वीं वाहिनी, भारत तिब्बत सीमा पुलिस बल, मार्फत 56 ए.पी.ओ.	तृतीय
उपक्रम		
1.	नेशनल टैक्सटाइल कारपोरेशन, सूरज टैक्सटाइल मिल्स, मलोट (पंजाब)	प्रथम
2.	इंडियन ऑयल कॉर्पोरेशन लि०, विपणन प्रभाग सूचीपिंड, जालंधर	द्वितीय
3.	नेशनल इंश्योरेंस कम्पनी लि० क्षेत्रीय कार्यालय-I, चंडीगढ़	तृतीय

क्र. सं.	संगठन का नाम	स्थान
	बैंक	
1.	केनरा बैंक, अंचल कार्यालय, चण्डीगढ़	प्रथम
2.	सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया, आंचलिक कार्यालय, चण्डीगढ़	द्वितीय
3.	भारतीय औद्योगिक विकास बैंक, चण्डीगढ़	तृतीय

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति

1.	नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, चण्डीगढ़ (बैंक)	प्रथम
2.	नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, जालंधर (का०)	द्वितीय
3.	नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, लुधियाना (का०)	तृतीय

आदेश—अनुदेश

केन्द्रीय हिन्दी प्रशिक्षण संस्थान (राजभाषा विभाग) का दिनांक 22-10-2001
का परिपत्र सं. 190/3/1/2001-टं. के. हि. प्र. सं.

विषय :— संघ सरकार के मंत्रालयों, विभागों तथा कार्यालयों, स्वायत्त निकायों, निगमों, उपक्रमों, बैंकों आदि के कर्मचारियों के लिए वर्ष 2002 में चलाए जाने वाले हिंदी टंकण और हिंदी आशुलिपि के पूर्णकालिक गहन प्रशिक्षण पाठ्यक्रम ।

महोदय/महोदया,

जैसा कि आप जानते हैं, केन्द्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान, भारत सरकार के मंत्रालयों, विभागों, कार्यालयों, स्वायत्त निकायों, उपक्रमों, निगमों, बैंकों आदि के कर्मचारियों के लिए अन्य पाठ्यक्रमों के साथ-साथ हिन्दी टंकण और हिन्दी आशुलिपि के पूर्णकालिक गहन प्रशिक्षण पाठ्यक्रम भी चलाता है। पूर्णकालिक गहन प्रशिक्षण कार्यक्रमों का उद्देश्य कर्मचारियों को यथाशीघ्र हिन्दी टंकण और हिन्दी आशुलिपि में कौशल प्रदान करना है ताकि वे वर्तमान द्विभाषिकता की स्थिति में हिन्दी और अंग्रेजी दोनों भाषाओं के टंकण और आशुलिपि में दक्षता प्राप्त कर सकें। संसदीय राजभाषा समिति की सिफारिशों के अनुसार सभी सरकारी कार्यालयों में उनके अंग्रेजी टाइपिस्टों तथा अंग्रेजी आशुलिपिकों के हिन्दी टंकण और हिन्दी आशुलिपि का प्रशिक्षण निर्धारित समय सीमा के अंतर्गत दिया जाना है।

2. भारत सरकार के मंत्रालयों, विभागों, कार्यालयों, स्वायत्त निकायों, उपक्रमों, निगमों, बैंकों आदि से अनुरोध है कि वे हिन्दी टंकण और हिन्दी आशुलिपि के पूर्णकालिक गहन प्रशिक्षण पाठ्यक्रमों में अपने ऐसे कर्मचारियों को नामित करने की कृपा करें, जिनकी सेवाएं द्विभाषिक टाइपिस्टों या आशुलिपिकों के रूप में लेनी तत्काल आवश्यक समझते हों।

3. कंप्यूटरों पर प्रशिक्षण की मांग को ध्यान में रखते हुए दिल्ली स्थित गहन प्रशिक्षण केन्द्र पर हिन्दी आशुलिपि के प्रशिक्षार्थियों को हिन्दी आशुलिपि के साथ-साथ कंप्यूटर पर शब्द संसाधन का भी प्रशिक्षण दिया जाएगा जिससे वे प्रशिक्षण प्राप्त करने के पश्चात अपने कार्यालयों में जाकर कंप्यूटर पर भी कार्य कर सकें।

4. केन्द्रीय हिन्दी प्रशिक्षण संस्थान, नई दिल्ली के अधीन कोलकाता, मुम्बई, चेन्नै, बेंगलूर तथा हैदराबाद में पांच उप संस्थान हैं। उपर्युक्त हिन्दी टंकण और हिन्दी आशुलिपि के

पूर्णकालिक प्रशिक्षण कार्यक्रम मुख्यालय, नई दिल्ली के अतिरिक्त उपर्युक्त पांचों उप संस्थानों में भी चलाए जाते हैं। इन प्रशिक्षण पाठ्यक्रमों का विस्तृत विवरण इस पत्र के साथ अनुलग्नक-1 में दिया गया है।

5. ये प्रशिक्षण पाठ्यक्रम पूर्णकालिक और निशुल्क हैं अर्थात् इनके लिए कोई शुल्क आदि भी नहीं लिया जाता है। इन पाठ्यक्रमों का पाठ्य विवरण और हिंदी शिक्षण योजना के अंतर्गत दिए जाने वाले प्रशिक्षण पाठ्यक्रम एक समान हैं परन्तु ये प्रशिक्षण पाठ्यक्रम पूर्णकालिक होने के कारण इनकी नियमित रूप से पूर्णकालिक कक्षाएं आयोजित की जाती हैं। इन गहन प्रशिक्षण पाठ्यक्रमों में प्रतिदिन प्रातः 9.30 बजे से सायं 6.00 बजे तक प्रशिक्षण केन्द्र पर प्रशिक्षार्थी प्रशिक्षण प्राप्त करते हैं।

6. इन प्रशिक्षण पाठ्यक्रमों के अंत में प्रशिक्षार्थियों की परीक्षा हिंदी शिक्षण योजना के परीक्षा स्कंध द्वारा ली जाती है। सफल प्रशिक्षार्थियों को प्रमाण-पत्र दिए जाते हैं। केन्द्र सरकार के ऐसे कर्मचारी जो अधिक अंक प्राप्त करते हैं, वे गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग के दिनांक 12-7-1989 के कार्यालय ज्ञापन सं.-12011/4/87-रा.भा.(घ) के अनुसार संबंधित नियमों के अधीन विहित शर्तें पूरी करने पर हिंदी टंकण में 97 प्रतिशत, 95 प्रतिशत और 90 प्रतिशत अंक प्राप्त करने पर तथा हिंदी आशुलिपि में 95 प्रतिशत, 92 प्रतिशत व 88 प्रतिशत अंक प्राप्त करने पर कर्मचारी क्रमशः 600/- रुपए, 400/- रुपए और 200/- रुपए के प्रथम, द्वितीय और तृतीय पुरस्कार के हकदार होंगे। इस राशि का भुगतान कर्मचारियों के कार्यालय द्वारा वहन किया जाएगा।

7. राजभाषा विभाग के कार्यालय ज्ञापन सं. 12014/2/76-रा.भा.(डी), दिनांक 2-9-1976 के अनुसार हिंदी आशुलिपि की परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद विहित शर्तें पूरी करने पर हिंदी भाषी आशुलिपि 12 महीने की अवधि के लिए एक वेतन वृद्धि के बराबर राशि का वैयक्तिक वेतन तथा अहिंदी भाषी आशुलिपिक (राजपत्रित तथा अराजपत्रित दोनों) दो वेतन वृद्धि के बराबर वैयक्तिक वेतन पाने के पात्र होंगे। राजपत्रित आशुलिपिकों को 90 प्रतिशत या अधिक अंक लेकर हिंदी आशुलिपि की परीक्षा पास करने पर ही वैयक्तिक वेतन दिया जाएगा। इसी प्रकार हिंदी टंकण की परीक्षा पास करने पर अराजपत्रित कर्मचारी विहित शर्तें पूरी करने पर 12 महीने के लिए एक वेतन वृद्धि के बराबर वैयक्तिक वेतन पाने के पात्र हैं।

8. केन्द्र सरकार के निगमों/निकायों/उपक्रमों तथा राष्ट्रीयकृत बैंकों आदि को प्रति कर्मचारी रुपए 50/- की दर से परीक्षा शुल्क देना होगा। परीक्षा शुल्क बैंक ड्राफ्ट द्वारा दिया जाएगा जो कि "उप निदेशक (परीक्षा), हिंदी शिक्षण योजना" "ए" बैरेक्स, जनपथ, नई दिल्ली के नाम से देय होगा।

9: नई दिल्ली स्थित संस्थान के मुख्यालय में सीमित संख्या में प्रशिक्षार्थियों के ठहरने के लिए छात्रावास की व्यवस्था है लेकिन नई दिल्ली से बाहर स्थित उप संस्थानों में छात्रावास की कोई व्यवस्था नहीं है। इसलिए वहां प्रशिक्षार्थियों से अपने ठहरने आदि की व्यवस्था स्वयं करनी होगी।

10. इन पाठ्यक्रमों की अर्हताएं निम्न प्रकार हैं।

(क) हिंदी टंकण

- (1) सभी अवर श्रेणी लिपिकों एवं अंग्रेजी टंककों के लिए यह प्रशिक्षण अनिवार्य है।
- (2) यू.डी.सी., हिंदी सहायकों, हिंदी अनुवादकों को भी स्वैच्छिक आधार पर नामित किया जा सकता है।
- (3) **शैक्षिक योग्यता:** हिंदी के साथ मैट्रिक या उसके समकक्ष अन्य परीक्षा जैसे प्राज्ञ, आदि उत्तीर्ण हों। दिनांक 27-10-1988 के राजभाषा विभाग के कार्यालय ज्ञापन संख्या-14016/17/88-रा.भा. (ध) के अनुसार हिंदी टंकण के प्रशिक्षण के लिए उन सभी कर्मचारियों को जिनकी शैक्षिक योग्यता हिंदी के साथ मिडिल अथवा उसके समकक्ष परीक्षा जैसे प्रवीण, आदि उत्तीर्ण हों, को भी प्रवेश दिया जा सकेगा।
- (4) बैंकों/उपक्रमों में कार्यरत अंग्रेजी आशुलिपिक भी हिंदी टंकण का कक्षा में प्रवेश हेतु पात्र कर्मचारी माने जाते हैं और स्थान उपलब्ध होने पर उन्हें भी प्रवेश दिया जा सकता है।

(ख) हिंदी आशुलिपि

- (1) सभी वर्ग के आशुलिपिकों, पी.ए. और सीनियर पी.ए. के लिए यह प्रशिक्षण अनिवार्य है।
- (2) कक्षाओं में स्थान उपलब्ध होने पर ऐसे अवर श्रेणी लिपिकों/टंककों को जिन्होंने हिंदी शिक्षण योजना की हिंदी टंकण परीक्षा उत्तीर्ण कर ली हो, संबंधित कार्यालय द्वारा यह प्रमाण-पत्र देने पर कि उनका यह प्रशिक्षण जनहित में है तथा प्रशिक्षण के बाद हिंदी आशुलिपि में प्रवीणता का उनसे कार्य लिया जाएगा, ऐसे कर्मचारियों को भी प्रवेश दिया जा सकता है।
- (3) **शैक्षिक योग्यता :** हिंदी के साथ मैट्रिक या उसके समकक्ष अन्य कोई परीक्षा जैसे प्राज्ञ, आदि उत्तीर्ण की हो।

11. केन्द्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान के मुम्बई, कोलकाता, हैदराबाद, बेंगलूर और चेन्नै स्थित उप संस्थानों में पते अनुलग्नक-II में दिए गए हैं।

12. आपसे अनुरोध है कि अपने कर्मचारियों के नाम पाठ्यक्रम आरम्भ होने से कम से कम 15 दिन पहले इस कार्यालय को तथा अपने क्षेत्र में स्थित उप संस्थान के प्रभारी सहायक निदेशक को भिजवा दें। कृपया उन्हीं कर्मचारियों को नामित करें, जिन्हें आपके द्वारा पाठ्यक्रम में प्रवेश हेतु निश्चित रूप से कार्यमुक्त किया जा सके। पाठ्यक्रम में प्रवेश लेने के बाद किसी भी कर्मचारी को सत्र के मध्य में वापस बुलाने की अनुमति नहीं दी जाएगी। किसी भी प्रशिक्षण पाठ्यक्रम में नामित कर्मचारी/कर्मचारियों को प्रशिक्षण आरम्भ होने के दिन संबंधित प्रशिक्षण केन्द्र के प्रभारी सहायक निदेशक को प्रातः 9.30 बजे रिपोर्ट करने के निदेश दें। कृपया ध्यान रखें कि यदि आशुलिपि पाठ्यक्रम के लिए किसी अवर श्रेणी लिपिक को नामित किया जाता है तो संबंधित केन्द्र के सहायक निदेशक से उनके प्रवेश की पुष्टि प्राप्त होने पर ही उन्हें प्रशिक्षण के लिए भेजा जाए।

13. पाठ्यक्रम में प्रवेश "प्रथम आओ, प्रथम पाओ" के आधार पर दिया जाएगा।

केन्द्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान

राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय

केन्द्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान, नई दिल्ली और कोलकाता, चेन्नै, मुम्बई, बेंगलूर तथा हैदराबाद स्थित केन्द्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान के उप संस्थानों में दिनांक 11-1-2002 से 11-12-2002 तक आयोजित किए जाने वाले हिंदी टाइपलेखन और हिंदी आशुलिपि के पूर्णकालिक गहन प्रशिक्षण कार्यक्रमों का विवरण।

केन्द्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान, नई दिल्ली में आयोजित

किए जाने वाले प्रशिक्षण कार्यक्रम

I हिंदी टाइपलेखन

प्रशिक्षण कार्यक्रम	प्रशिक्षण की अवधि	प्रशिक्षण की तिथियां	प्रशिक्षण केन्द्र का स्थान
हिंदी टाइपलेखन	40 कार्यदिवस	11-1-2002 से 7-3-2002 तक	केन्द्रीय हिंदी प्रशिक्षण
"	40 कार्यदिवस	8-3-2002 से 8-5-2002 तक	संस्थान,
"	40 कार्यदिवस	24-5-2002 से 18-7-2002 तक	2-ए, पृथ्वीराज रोड,
"	40 कार्यदिवस	12-8-2002 से 9-10-2002 तक	नई दिल्ली-11
"	40 कार्यदिवस	10-10-2002 से 11-12-2002 तक	(जे.एंड के. हाऊस के सामने)

II हिंदी आशुलिपि

प्रशिक्षण कार्यक्रम	प्रशिक्षण की अवधि	प्रशिक्षण की तिथियां	प्रशिक्षण केन्द्र का स्थान
हिंदी आशुलिपि	80 कार्यदिवस	11-1-2002 से 8-5-2002 तक	केन्द्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान, 2-ए, पृथ्वीराज रोड, नई दिल्ली-11 (जे.एंड के. हाऊस के सामने)
"	80 कार्यदिवस	12-8-2002 से 11-12-2002 तक	

कोलकाता, हैदराबाद, चेन्नै तथा बेंगलूर में स्थित उप संस्थानों में आयोजित किए जाने वाले प्रशिक्षण कार्यक्रम

I हिंदी टाइपलेखन

प्रशिक्षण कार्यक्रम	प्रशिक्षण की अवधि	प्रशिक्षण की तिथियां	प्रशिक्षण केन्द्र का स्थान
हिंदी टाइपलेखन	40 कार्यदिवस	11-1-2002 से 7-3-2002 तक	के.हि.प्र. उप संस्थान, कोलकाता, चेन्नै, बेंगलूर और हैदराबाद
"	40 कार्यदिवस	8-3-2002 से 8-5-2002 तक	
"	40 कार्यदिवस	24-5-2002 से 18-7-2002 तक	

II हिंदी आशुलिपि

प्रशिक्षण कार्यक्रम	प्रशिक्षण की अवधि	प्रशिक्षण की तिथियां	प्रशिक्षण केन्द्र का स्थान
हिंदी आशुलिपि	80 कार्यदिवस	12-8-2002 से 11-12-2002 तक	के.हि.प्र. उप संस्थान, कोलकाता, चेन्नै, बेंगलूर और हैदराबाद

मुम्बई स्थित उप संस्थान में आयोजित किए जाने वाले प्रशिक्षण कार्यक्रम-

I हिंदी टाइपलेखन

क्र. सं. स्थान	प्रशिक्षण कार्यक्रम	प्रशिक्षण की अवधि	प्रशिक्षण की तिथियां	प्रशिक्षण केन्द्र का
1. हिंदी टाइपलेखन संस्थान, हाऊस, करीमभाय	40 कार्यदिवस	24-5-2002 से	18-7-2002 तक	के. हि. प्र. उप राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, कामर्स तीसरी मंजिल, रोड, बेलाई स्टेट, मुम्बई-38

II हिंदी आशुलिपि

क्र. सं. स्थान	प्रशिक्षण कार्यक्रम	प्रशिक्षण की अवधि	प्रशिक्षण की तिथियां	प्रशिक्षण केन्द्र का
1. हिंदी आशुलिपि	80 कार्यदिवस	11-1-2002 से	8-5-2002 तक	के. हि. प्र. उप
2. -वही-	80 कार्यदिवस	12-8-2002 से	11-12-2002 तक	संस्थान, मुम्बई

पाठकों के पत्र

पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएं विविध जानकारियों से युक्त हैं, तथापि डॉ. (श्रीमती) उमा सक्सेना का लेख "सोरायसिस" तथा डा. एच.एन. यादव का लेख "कैंसर एक जानलेवा रोग" जहां हमें रोग निरोधक एवं स्वास्थ्य परक जानकारियां प्रदान करते हैं वही दूसरी ओर डा. दिनेश मणि का लेख "भविष्य की आहटें हैं विज्ञान-कथाएं" तथा श्री बजरंग लाल जेटू का लेख "हमारी विलक्षण सुरक्षा छतरी: ओजोन परत" विविध वैज्ञानिक तथ्यों से हमें अवगत कराते हुए महत्वपूर्ण स्वास्थ्य संबंधी जानकारियां देते हैं।

श्री विशाल बंसल, सचिव, न.रा.का.स. एवं महालेखाकार, ग्वालियर, म.प्र. एवं छत्तीसगढ़ का कार्यालय, "लेखा भवन", ग्वालियर-474002.

राजभाषा विभाग द्वारा एक लम्बे अरसे से "राजभाषा भारती" नामक पत्रिका का प्रकाशन किया जा रहा है तथा ये भारत सरकार के मंत्रालयों, कार्यालयों तथा हिंदी सेवी संस्थाओं में अत्यंत लोकप्रिय है। पहले यह केवल राजभाषा हिंदी संबंधी मुद्दों तक सीमित थी, किन्तु अब इसमें दैनिक जीवन को प्रभावित करने वाले कई और महत्वपूर्ण विषय जैसे कि आर्थिक, वैज्ञानिक, सामाजिक विषय भी शामिल किए जाते हैं तथा इसको एक नया आकार (रंग रूप) दिया गया है। हाल ही में प्रकाशित "राजभाषा भारती" का एक अंक देखने को मिला, जिसमें आर्यों के मूल निवासी होने पर एक अच्छा लेख छपा है।

श्री वेद प्रताप वैदिक, भारतीय भाषा सम्मेलन, ए-2, रिंग रोड, साउथ एक्स, भाग-1, नई दिल्ली-110049.

राजभाषा भारती का अंक-95 पढ़ा। यह एक उच्च स्तर की शोधपूर्ण पत्रिका है। राजभाषा कार्मिकों के लिए ही नहीं बल्कि सभी सरकारी कार्मिकों, विद्वानों, शोधकर्ताओं, जागरूक व्यक्तियों के लिए यह उपयोगी ही नहीं बल्कि जरूरी है। इसमें विविधतापूर्ण उच्चस्तरीय लेख हैं। देश के सभी क्षेत्रों और विषयों के विद्वान अपनी रचनाओं से इसे समृद्ध कर रहे हैं।

श्री ओम प्रकाश वर्मा, हिंदी अधिकारी, राष्ट्रीय धातुकर्म प्रयोगशाला, जमशेदपुर

राजभाषा भारती का अंक-94 मिला। डॉ. एच. एन. यादव व डॉ. श्रीमती उमा सक्सेना द्वारा स्वास्थ्य संबंधी क्रमशः कैंसर व सोरायसिस रोगों के संबंध में दी गई विस्तृत जानकारी बहुत ही उल्लेखनीय है। यह जानकारियां पत्रिका के पाठकों को उक्त रोगों के बारे में जागरूक करने में काफी लाभ-प्रद होंगी।

श्री गुलशन लाल चोपड़ा, हिंदी अधिकारी, आसूचना ब्यूरो, गृह मंत्रालय, नई दिल्ली।

राजभाषा भारती के समस्त लेख शोधपूर्ण और विचारोत्तेजक हैं। इनसे हमारे साथियों को नई दृष्टि एवं चेतना मिलेगी। ऐसी स्तरीय और गौरवपूर्ण पत्रिका का सर्वांगशोभन एवं सुरुचिपूर्ण सम्पादन करने के लिए मेरी बधाई स्वीकार करें।

डॉ. भगवानशरण भारद्वाज, अध्यक्ष, हिंदी विभाग, बरेली कॉलेज, बरेली-24305.